सो नांही आई॥ तब श्रीठाकुरजी सों ललिताने कही। जो अब तू
मदे खोगे। तब प्रसंन होउंगी॥ सोऊ न कीवे ने मेरो ध्यो है। पै सें
रजकरि आई हो॥ सो तब श्रीठाकुरजी ललिता पर वो होत प्र
सें नभरे॥ पाछे ललिता श्रीचंद्रावली जी और विसाखाजी श्री
तन हे रानी जी को घेरि रही हुती॥ सो तहां अप्रद के अबीर गुलाल उ
डाय अंध्यारो करि श्रीरोहिणीजी को पकरि कें श्रीकीरतिजी
को भेष बनायो॥ यहां मधुमंगल सों मिस्करी लाय कुंज के भीतर
आछे जतन सों धरि सो तहां कोई जांने नांही॥ इहां ललिता श्रीवृ
षभांनजी के निकट जाय हाथ जोरि के कही। जो मेतु म्हारे घर
की है। सो तातें मेरा कवात तुम सो कहेत हों॥ और या कारण
आई हों। जो तुम्हारी बहू कीरतिजी उहां आगे इतनो कोप क
रिये॥ परि इनको श्रीनंदरायजी को घर वो होत हीं आछो
लग्यो है॥ सो कीरतिजी श्रीनंदरायजी के घर जात सो हमारी
कुलकारी लाज जाय॥ तातें मे और श्रीचंद्रावलीजी और श्री
विसाखाजी मिलि के समुझाई परंतु मांनत नांही है॥ सो तहां
श्रीचंद्रावली जी और श्रीविसाखा जी ने घेरि राखी हैं। सो तुम
वेगि हे चलो। समुझाय के अपने घर ले चलीये॥ तब श्रीवृ
षभांनजी कहे। जो श्रीकीरतिजी नें नजार मेरे आगे तो श्री
नंदरायजी सों हाथ छुड़ाय के भागी ही। और मारे डर के कां
पन लाग्यो। जो मे श्रीनंदरायजी को मुख कब हू न देखोगी
या भांति सो मोको ढूंढरी छुनाथे॥ अब देखि ललिता न कह
त हो। जो श्रीनंदरायजी के घर जात हें। सो तब ललिताजी
ने कही जो तुम वेग चलो या में कोई जांने नांही समुझाय के
वेगि ले चलीये॥ सो तब श्रीवृषभांनजी श्रीललिताजी के
संग हे चले॥ सो रोहिणीजी नें देख्यो जो यह तो हीरी को हि

ते। सो मेरी हांसी करेंगे॥ और मधुमंगल हू मेरी हांसी करिवे को
ढूंढरे घर ते लेआयो हैं॥ सो तब श्रीरोहिणीजी फेर अपने घर
को चली॥ तब श्रीचंद्रावली जी और विसाखाजी अबीर गुला
ल को अंधारी करि भुजा पकरि श्रीरोहिणीजी को ठाढी करि
राखी॥ सो तब श्रीवृषभांनजी निकट आइ श्रीचंद्रावली जी
और श्रीविसाखाजी सो कहें॥ जो वेटी हूं तुम तो मेरे घर की हो
परम हितकारनी हो॥ जेसे मेरी बेटी राधा प्यारी हैं। तेसे तुम हू
हो मेरे घर की हाय को फिरकत हो॥ यह तुम कोन चहीये॥ सो
तब श्रीचंद्रावलीजी नें और श्रीविसाखाजी ने कह्यो जो श्री
वृषभांनजी तुम तो परम चतुर हो॥ हम ने याके लीऐ अबीर
गुलाल उड़ायो॥ जो कोई और याकी को पहचानि हारे घर की बात जा
नी न परे॥ और हम तो अनेक भांति समुझाय हाथ पकरि के
इनको राख्यो है॥ अतेर तो कबकी श्रीनंदरायजी के घर चली जा
ती॥ तातें अब तुम इनको हाथ पकरि के ले चलो॥ सब कारे ने को
हेतु पाय तेन समुझेंगी॥ मे और ललिता विसाखा इनको केते
नेरी समुझाई हैं॥ तातें अब तुम वेगि ही इनको घर को ले चलो
इहां कोई जांने नांही॥ घर में आछी भांति समुझाईयो॥ सो तब श्री
वृषभांनजी ने श्रीरोहिणीजी को भुजा गाढी पकरि कें लई तें
व श्रीरोहिणीजी लाज पाय के वेठि गई॥ सो तब श्रीवृषभां
नजी दोऊ हाथ सों भुजा पकरि के वो हाते रोवन लाग्यो॥ सो श्री
वृषभांनजी सों न उठी॥ काहे ते जो श्रीवृषभांनजी देह करि
के अत्यंत सूक्ष्म हें॥ श्रीरोहिणीजी पोरी सी कुमारी हें। सो तब
श्रीवृषभांनजी कहे॥ जो अब मे कहा करों॥ हे ललिता विसा
खा हे चंद्रावली यह मेरी लाज राखोवेगी॥ तातें भई सो तो भई परं
तु अब अपने घर चले तो बड़ी बात है॥ तब ललिता विसाखा।

कहीं॥ जो एक जतन है सो
श्रीचंद्रावलीजीने श्रीवृषभांनजीसों कह्यो॥ जो ललिताकों बेगि बताय सो घर
उमकरो॥ तब श्रीवृषभांनजी कहे॥ जो ललिताको बेगि बतायसो घर
मेलेजाऊं॥ पाछेमें घरमें सम्हराय लेऊंगो॥ सो तब ललिताने कही
जो तुम कहो तो तुम्हारे कांधेपर बेठाय देउं॥ पाछे तुम ले चलो तब
श्रीवृषभांनजी कहे॥ जो मोमें इत्तनो बल नांही है॥ जो कांधेपर इन
कोबेठारि केघर तांई लेजाऊं॥ सो तब ललिताने कही॥ जो तुम को
बोहोत श्रम न होइगो॥ मेहूं तो बिसारवा है चंद्रावलीहू संग करे
चलेगी॥ रंचक तुम बेठारि बेमांश्र लेउ॥ सो तब वृषभांनजी बे
हे सो तब ललिता बिसारवा श्रीचंद्रावलीजीने पकरि के कांधे
परबेठाई॥ श्रीरोहिणीजीकी कटि श्रीवृषभांनजीकी फेटसों
बांधि॥ एक ओर श्रीचंद्रावलीजी श्रीविसाषाजी॥ ओर एक
ओर ललिता श्रीवृषभांनजीकी भुजा पकरि के उठायली
रे॥ पाछे मधुमंगल दोरिके श्रीवृषभांनजीकी कटि पकरि
के उठाय लीरे॥ पाछे मधुर चाल सो चले॥ सो तब ललिताने
सारवा सो श्रीवृषभांनजी कहे॥ जो भार वो होत है तब ललिता
नेकही॥ जो अब या समय बोलो मति॥ कहा हम नांही जानत
हे॥ ताते काहूं भांतिसों दुःख सुषसों घर कों ले चलो॥ सो तब
श्रीवृषभांनजीके हैं चुप होइ रहे हें॥ ओर यहां श्रीठाकुरजी
श्रीबलदेवजीसों कह्यो॥ जो दाऊजी तुम श्रीदामाकी गोदमें
सोरई रहोगे॥ ओर यहां तो श्रीवृषभांनजी व्रजके राजा जु
सारी माता श्रीरोहिणीजीको अपने कांधे पर धरि के ली
ए जांत हें॥ सो व्रज के राजा हे॥ सो मेरी तो कछु उनसों चलत नां
ही॥ ताते हे दाऊजी तुम सो कछु जतन बने तो करो॥ श्रीरोहि
णीजी बोहोत लज्जायमान होय दुःख पावत हें॥ सो यह सुनिके
श्रीबलदेवजी एक तो पहले को क्रोध उपनं द ओर रेवतीजी

के प्रसंगको भयो हुतो॥ ओर दूसरो श्रीरोहिणीजीको छुन्यो॥ सो त
त्काल रक भारो मूसल हाथ में लेके बेगि ही श्रीवृषभांनजीके सन्मुख
आय के कहे॥ जो इन तो तो को कहा अपनो मांनत हे सो मेरी माता
को अपने घर ले जाइगो॥ ताते आज में तो को आछी भांति सो सि
षा देऊंगो॥ जो तू राजा होय के फेर काऊ को दुःख न देई॥ तेने आप
ने मनमें यह जान्यो॥ जो गरीब अहीर हे सो पेहमारो कहा करेगो
सो मेको तू नांही जानत आज को टि उपाय करे तो तो को नांही
छोडूंगो॥ सो या प्रकार श्रीबलदेवजी को धासहित बचन बोले
सो ताही समय श्रीबलदेवजीके अरुन नेत्र ओर भृकुटी टेढी
होइ गई॥ ओठ फरकन लागे॥ सो यह छबि श्रीबलदेवजीकी दे
षिकें श्रीवृषभांनजी मारे डरके कांपन लागे॥ जो अब मोको श्री
बलदेवजी निश्चय मारेगे॥ सो भयके मारे श्रीवृषभांनजीकी वा
णी बंद होइ गई॥ कछु बोल सके नांही॥ ओर ललिता बिसाषा
श्रीबलदेवजीको दूरि ते आवत देषि कें ताही समय श्रीचंद्राव
लीजी सहित छोडिके भागि गई॥ ओर मधुमंगल हुतो सो ऊ
पाछेते छोडिके भागि गयो॥ ओर सब व्रजवासी गोप गोपी डर
पन लागे॥ श्रीबलदेवजीके डरके मारे कोऊ निकट आवे नांही
यह संसार में भयानक भयो॥ रस के समय में श्रीयशोदाजी
को वात्सल्य रस ऊपर कहि आए हें॥ ओर सब आगे कहे सो
तब श्रीबलदेवजीके डरके मारे श्रीवृषभांनजी बेठि गए सो
तब श्रीरोहिणीजीके कांधे पर ते उतरि के कहे॥ जो मोकों श्रीवृ
षभांनजीने बोहोत दुःख दीयो हें॥ इतने ही में श्रीठा
कुरजी श्रीबलदेवजीके निकट स्वामिनीजी सहित आए सो
तब श्रीस्वामिनीजीने श्रीठाकुरजीसों कही॥ जो तुम अपने
दाऊको बरजो॥ मेरे पिताके ऊपर क्रोध क्यों करत हें॥ इतनो

तुम्हारे सगरे घरके लोग हे॥ श्रीरेवतीजीने तो विचाँरो बडो डोकरा
उपनंद हो॥ सो ताको पकर्यो॥ और श्रीयसोदाजी मेरे पिनाकी मो
ढिजोरि कही॥ जो मे तुम्हारे घर रखवारो गयो॥ और श्रीरोहिनीजीकी
यह प्रगट लीला देखत हो॥ जो मेरा पिताके संग चली है॥ सो हेरी
के दिननमे इन तो क्रोध न हीं चहिये॥ सो तब श्रीठाकुरजी श्री
वलदेवजी सो कहे॥ जो तुम ललिताके निकुंज मे चलो तो तुम्हा
रो क्रोध समा हो जाय॥ सो तब श्रीवृषभानजी तो उठि के अपने
गोपनके निकट आये॥ और श्रीठाकुरजी हसि के श्रीवलदे
वजीके निकट आये॥ सो ताही समय श्रीवलदेवजी को क्रोध
सब मिटि गयो॥ पाछे सब साज समाज श्रीठाकुरजी श्रीस्वा
मिनीजी श्रीवलदेवजी श्रीवृषभांनजी गोप सगरे ललिता
जीकी कुंज मे चले॥ तब श्रीस्वांमिनीजीने ललिताजीसोक
ही॥ जो आज हम तुम्हारे घर खेलन हे॥ सो हमको कहा भेंट ध
रोगी॥ तब श्रीललिताजीने कही॥ जो आज श्रीवृषभांन
जी घरम प्रीय वस्तु सो पिगारे है॥ सो वृषभांनजीको भेंट धरे
गी॥ तब श्रीललिताजीने कही॥ सो तांमेही तुम्हारो सन्मांन
आइगयो॥ और मे तुम्हारी दासी हो॥ सो सगरो घर तुम्हारो ही
तो हे॥ तुम्हारे पास छेई तो मोको संग रो सुष हें॥ तब श्रीठाकुर
जी हसिके कहे॥ जो हम तुम्हारी कुंज मे चलत हे॥ सो मोको कहा
भेट धरेगी॥ तब मुसिकायके ललिताने कही॥ जो अनेक जत
न करि नाना प्रकार की सांमिग्री वोहोत कालते सेन करि के
सिद्ध करी हें॥ जो तुम्हारे आगे भेट धरोगी॥ सो तुम कृपा करि
अंगीकार करोगे॥ मेरो मनोर्थ सदां ते सिद्धि करत आये हो सो
तुम ही सिद्धि करोगे॥ जो आज मेरे घर पधारे हो ताई है॥ सो या प्रका
र परमस्नेह की वातें परस्पर करत जांत ललिताजीकी कुं

जमें सव समाज साहित आये॥ तव श्रीस्वांमिनीजी श्रीठाकुर
जी श्रीवलदेवजी श्रीवृषभांनजी मधुमंगल सषा इत्यादि
और ललिता विसाषा श्रीचंद्रावलीजी॥ और इत्यादि सव स
षी देखे तो सुंदर चादरि ओटे सेज ऊपर कोऊ सोवत हें॥ सो त
व श्रीस्वांमिनीजीने ललितासो कही॥ जो तेने अपनी सिज्या पर को
न से गोप को सुवाय राष्यो है॥ सो तव ललिताने कही॥ जो मे तो तु
म्हारे संग खेलमे हती॥ परि अव देषिये जो यह कोनकौं यर कैसा
न हे॥ तव जाइके नहीं देखे तो श्रीनंदरायजी हैं ते॥ सो तव मुखकी
ओर की चादरि उघारि देखे तो श्रीनंदरायजी हें॥ पाछे ललिता
श्रीवृषभांनजी सो कही॥ जो तुम श्रीनंदरायजीको हसावक
रिके उठाय लेऊ॥ तव श्रीवृषभांनजी कहे॥ जो मो मे इतनो वल
नाही हें॥ जो मे श्रीनंदरायजीको उठाइ लेऊ॥ तातें मे आज पेष्य
मि न वोहोत हो॥ सो तव श्रीवलदेवजी श्रीनंदरायजीकी भुजा
पकरि के ऐसे सो षेच्यो॥ सो श्रीकीरतिजी सो हितन उठि आये॥ सो
तव श्रीनंदरायजी अप्रुनींद मे कहें॥ जो मेरी भुजा को न खेंचे
त हें॥ सो यह समा देषि के श्रीठाकुरजी श्रीवलदेवजी और
सषा सव प्रसंन होइ के हसे॥ और श्रीवृषभांनजी वोहोत ही लज्जि
त भए॥ और कहे॥ जो यहां श्रीनंदरायजी और कीरतिजी केसे
आये॥ फेर श्रीस्वांमिनीजीने ललितासो कही॥ जो ललिताने
मेरी मेयाकी हांसी कराई॥ तव ललिताने श्रीस्वांमिनीजीसों
हाथ जोरि के वीनती करी॥ जो मोसो ऐसी मति कहो॥ मे ने अप
ने की सषी हो॥ और मे तुम्हारे पास होरी षेलमे हती॥ सो मे या
वात में भेद क्यों नन नां ही हो॥ सो तव ललिता सो श्रीस्वांमिनी
जीने कही॥ जो अव तुम ऐसी हांसी श्रीवलदेवजी को करावे
जो आज रामक वस्तु मे मांगत हो॥ सो तव सव व्रजवासी हसे तो

तुमांगेगी सो देउंगे॥ सोया प्रकार श्रीस्वांमिनीजीने कही॥ सोतब
ललिताने श्रीस्वांमिनीजीसो कही॥ जो ऐसी हांसी श्रीबलदे
वजी और श्रीकृष्णकी करो जो ऐसी कबहू मरैं न होय॥ परंतु ए
कवस्तु आज मे तुमसो मांगत हों॥ सो तुम अपनी दासी जांनि मो
कों देउ॥ सो तब श्रीस्वांमिनजीने कही हांसिके जो ललितातु
ऐसी दीनता काहेको करत हें॥ ऐसी वस्तु जगतमे कोनसी हे
सो मे तुमसो छिपाइ राखी हें॥ तु मेरी प्रांणप्रीय अंतरंगिनी स
खी हें॥ ताते जो तेरे मनोरथ होइ॥ सो निःसंक होत मांगिले सो
नबवचन वंदन करिके ललिताने कही॥ जो मे नानाप्रकारकी
सांमग्री सिद्धि राषी हें॥ सो तुम रुचि करि देउ तो मे श्रीठाकु
रजीको पधरायके आरोगायके ले आउं॥ सो तब श्रीस्वांमि
नीजीने छलकरिके राहि तभोरी हें॥ सो कही॥ जो हे ललितातु
इतनोई मांगत हें॥ और हू कछु मांगिले॥ तु अपनी कुंजमे
सांमिग्री त्यार करि पाछे श्रीठाकुरजीको पधरायले जैयो
सो तब श्रीललिताजीने अपनी सब सषीनसो कही॥ जो
आजमेरो कांम पर्यो हें॥ तुम्हारी सब सेवासु फलत हें॥ ताते
जितने गोपगोपी सब ब्रजके॥ श्रीकीरतिजी श्रीवृषभानजी
श्रीनंदरायजी श्रीयसोदाजी श्रीरोहिणीजी रेवतीजी श्री
बलदेवजी आदि बालक तरुण वृद्ध हे सो इन सबनको ऐ
से ऐसे ठोर देउ॥ जो सब अपअपने घर भूलि जाय॥ सोतब
कोटान सषीजो चतुर हें॥ जो एक एक सषीको अगनि
त दासी हें॥ सो ऐसे ई कोटान कोटि निकुंज रत्न नजटित हे त
हां नानाप्रकारके भोगराग और अष्टसिद्धि॥ आगे सो हाथ
जोरें॥ कुंजकुंज प्रति ठाढी हे॥ सो एक निकुंजमे कीरतिजी
को श्रीवृषभानजीको पधरासे॥ एकमे कुंजमे श्रीबलदेव

रेवतीजी जीको पधरासे॥ एक निकुंजमे श्रीयसोदाजी श्रीनंदरायजी
रोहिणीजीको पधरासे॥ और न्यारे न्यारे निकुंजमे सब गो
पीजनको तिनको सेदीने सो मनोरथ हमको॥ बहुत करहू न हरा
तिनको ना ही मांनि सो हाथ जोरे त्यार ठाढी हें॥ सो ऐसे सो सु
षसागरे व्रजवासीन पाये॥ जो अपने घरनकी सुधि भू
लिगये॥ ललिताजीको वैभव देषि चकृत होय रहे॥ सो ललि
ताको तान कोटि गुनो वैभव कोटान कोटि स्वांमिनीनके॥ जिनके
निकुंज मे हें॥ और स्वांमिनीनके निकुंजनके कोटान गुनो श्री
चंद्रावलीजी की निकुंज हे॥ और श्रीचंद्रावलीजीको वैभव
वर कुमारिका श्रीयमुनाजीको हे॥ सो तिनहूमे अधिक श्री
स्वांमिनीजीको हे॥ ऐसी भांति बनी पदार्थ हे॥ सो नहां सबके
मध्य एकांत विषे श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमिनीजी श्रीललिता
जी प्यारी निकुंजमे विराजे॥ सो यह सोभा श्रीललिताजीके
सोभाग्य देषिके श्रीचंद्रावलीजी और विसाषाजी वस्तुपर
भये॥ तब मिलिके दोऊ आपुसमे मनो करन लागी॥ सो
निकुंजतें उठिके बाहिर बनमें आई॥ सो यह रसशास्त्रमे
कहे हें॥ विरहिना विराहे न होऊ बातां करत हें रसमें अप
ने प्रीतमकी॥ सो तब विसाषासो श्रीचंद्रावलीजीने कही जो
हे विसाखा आज ललिताके भाग्यको पार नांही हें॥ सो कै
हे ते॥ जो इनके बसमे श्रीठाकुरजी हें॥ और स्वांमिनीजी
ने अपने सुष तें कृपा जोमें तुमको दीरे॥ ताते ललिताकी
बराबर आज भाग काहूको नांही॥ ताते हे विसाखा अपनो
ऐसो कोन दिन आवेगो॥ जो श्रीठाकुरजीको एकांत कुंज
मे मिलेगो॥ या प्रकार श्रीचंद्रावलीजी श्रीविसाखाजीसो
बिरहके बचन कहिन लागी॥ सो कहत कहत अपने को

श्रीठाकुरजीमिलनिकेसुखदीये॥सोसुखपयेहे॥सुखकोस्मरणहोय
आयो॥सोसरीरमेउनकामलनीमृदी॥विरहप्रेमकेवसहोयविसा
खाजीकेकंठमेभुजामेलिकेकहनलागी॥हेविसाखाजीयहहे
रीकोदिनरगमगोहें॥तातेनरनारीकेहृदयनेअनुरागबा
हेरनिकस्योहे॥सोभाग्यनीनायकाहें॥सोश्रीनंदनंदनअपने
प्राणपतिरसरूपहोरीखेलतनहे॥ओरदेखिविसाखाजीयेवृ
नकीजोसुंदरवेलीहें॥सोवड़ेवड़ेवृक्षनसोंलपटिरहीहेमानो
मनमेईहसतहें॥औरदेखियोसोकहेतहें॥जोदेखोहमअप
नेपतिकोनखसोलेकेसिरवपर्यंतलपटिरहीहे॥औरतुं
मअपनेपतिकोछांडिअकेलीफिरतहो॥ताहूमेरसरूप
अेसेहोरीकेदिननमेंप्यारेसोंबिछुरनोंउचितनाहीं॥ता
तेहेविसाखामेबड़ीअभागिनीहोरेंचकहूश्रीठाकुरजीके
चरणारविंदमेमननलगायो॥अपनोरूपजोवनमेच
तुराईकेदेहसुखमेरख्योंनपानमिथ्याकोपामिथ्याध्यान
मिथ्याभाषणकरनकोंअपनेप्रभुसोंन्यारीरही॥तातेहेको
या॥हेनंदनंदन॥हेवृषभानुसिरोमणिजीके॥हेकरुणासिं
धुजी॥हेहमारेअंगणकेरक्षकहमारेमोनमप्राणवदअनहे
गिरराजकेधरनहारे॥हेमेरेहृदयकेभूषणअबमोको
कबमिलोगे॥सोमोअभागिनीकोकबवेणुनादसुनाय
हृदयसीतलकरेंगे॥मोकोअधरामृतदानकबकरेंगे
मेतुम्हारीसरणहों॥अनाथहों॥अत्यंतदीनहों॥महादुः
खीहों॥जोसबअंगकरहीनहों॥अपनोदासजांनिकेमो
परअनुग्रहकरो॥सोयाप्रकारकोटानकोटदेन्यताकेवच
नकहे॥श्रीचंद्रावलीजीकोविरहप्रगटभयो॥सोअंगअं
गसबसिथलहोइगयो॥सोसगरोअंगपीरोहोइगयो॥हा

थनकीचूरीसबआभूषणढीलेहोयगये॥तबविरहनेस्वा
सकहोनभयो॥यहदसाश्रीचंद्रावलीजीकीदेखिकेश्रीवि
साखाजीकोअपनोविरहभूलिगयो॥कहीमेकहाकरुंइन
कोकोनप्रकारसमुझाउं॥याप्रकारविसाखाजीविचारकरन
लागी॥जोएकवारतोविसाखाजीविरहकेसमुद्रमेडूविकें
मगनहेगईहे॥पाछेश्रीठाकुरजीकेदयालतासोंउनहृदय
मेस्फुर्तिहोय॥सोतबविरहकेसमुद्रतेनिकसिकेविसाखा
जीसोकह्यो॥हेविसाखाजीमोकोश्रीठाकुरजीकोविस्वासहे
जबजबमोकोविरहमेंविकलतामईहें॥सोतबश्रीठाकुरजी
नेमोपररक्षाकरीहें॥यामेसंदेहनांहीहें॥कबहूमेरेमनमें
विरोधलायेनांहीहे॥तातेमोकोदासीजांनिरक्षाकरीदर
सनदेंगे॥याप्रकारधीरजकेवचनकहतेकछुतनछोरिवि
रहहोयआयो॥सोकबहूतोविरहहोय॥कबहूधीरजहो
इ॥सोयहदसाश्रीचंद्रावलीजीकीश्रीठाकुरजीनेजानी
सोतबएकहूसखीरूपसखीभेषधरिश्रीचंद्रावलीजी
केनिकटपधारिकेकहे॥जोतुमइतनोविरहकेहेतापक्योंक
रतहो॥जोमेअबहीश्रीठाकुरजीकेनिकटतेआईहों॥सोआ
पश्रीठाकुरजीअेसेकहे॥जोललिताकोमनोरथपूरणक
रिश्रीचंद्रावलीजीकोमनोरथपूरणकरेगे॥तातेतुमविरह
क्योंकरतहो॥मेसोंहकरिकेकहततहो॥जोतुमकोश्रीठाकु
रजीमिलेंगे॥इतनोसोंहकरिकेंकहेतहो॥जोतुमकोश्रीठा
कुरजीमिलेंगे॥इतनोसुनिकेश्रीचंद्रावलीजीअपनीआंखिखोलि
केंपरमसुंदरसखीकोदेखिकेंअपनोपरमप्रीतिसोंउनिकें
मिलीसोश्रीचंद्रावलीजीकोअंगअंगसीतलहोइगयोपा
छेश्रीचंद्रावलीजीनेकह्यो॥जोहेप्राणप्रियतुममोकोप्रेमनतन

नवचनसुनायकेजिवायो॥ औरमेरोहृदयजैसेश्रीठाकुरजीकोमि
लेतेसीतलहोनहतो॥ सोतेसेसीतलभयो॥ तातेहेसषीजबतांई
मोकोश्रीठाकुरजीमिले॥ सोतबतांई तु मेरेपासतेजायमति
सोतबसषीनने कही॥ जोतुमतोश्रीचंद्रावलीजीतुमअपनेनिकुं
जमेश्रमनके अर्थ नानाप्रकारकीसांमिग्रीत्यारकरो॥ औरमे
वेगिहीश्रीठाकुरजीकोपधरायलाऊंगी॥ यहसुनिकेश्रीचं
द्रावलीजीअपनेगरेमेतेगजमोतीनकीमालाउतारिप्रियस
षीकोपहरायकेकही॥ जोहेसषीमेरेविरहरूपसमुद्रमेते
मेरेप्रांणकीरक्षातेकरी॥ अबतुमजोमांगोगीसोईमेदेऊं
गी॥ तुमश्रीठाकुरजीकोवेगिपधरायलावो॥ सोतबश्रीठा
कुरजीतहांतेअंतरध्यांनभये॥ सोतबश्रीचंद्रावलीजी
विसारवाजीकोश्रीहस्तपकरिकें कंठमेभुजामेलिकेअप
नीकुंजमेपधरायलेगई॥ सोताकोनांमश्रीचंद्रानंदीकुंज
हे॥ सोतहांपधरायकेअपनीकोटानकोटिसषीहें॥ सोति
नसोआज्ञाकरी॥ जोसुंदरसहोरीकीसांमिग्रीसिद्धिकरो॥ अ
नेकभोगरागकुंजकीरचना औरआजमेरोजुहारोभाग्यध
न्यहें॥ जोश्रीठाकुरजीमेरेघरपधारेगे॥ सोतबसषीननेनि
कुंजमंदिरपरमसुंदरहें॥ सोतामेअरगजासुगंधसींचेहे
धुजापताकातोरणमालाअनेकरचनाकरीहे॥ नानाप्र
कारकीकुसुमसिज्यासिद्धिकरीहें॥ तबश्रीचंद्रावलीजी
सोकही॥ जोअबकुंजमेपधारेंगे॥ सोतबश्रीचंद्रावलीजी
स्नानकरि परमकोमलवस्त्रपहरिकेकोलिसिज्यापासन
कुआसनबिछायकेंआयबेठी॥ सोतबअपनीनिकुंजकी
रचनादेषिकें सषीनकेऊपरबोहोतप्रसंनभई॥ सोताही
समयअंमृतवचनबोली॥ जोहेललिताकुमबेली तुमआज

श्रीतही परमआनंदमेफूलफलसंयुक्तप्रसंनहो॥ औरपशु
पक्षीअपनेअपनेठिकानेजहांजाकोसुखहतो तहांबिराजे
तीताकोस्मरणकरतहें॥ सबनकोश्रीठाकुरजीकोआगमल
गिरहोहें॥ सोतिनकोदेषिकेश्रीचंद्रावलीजीनेकही॥ जोसु
ल्यारीआरानिमेश्रीठाकुरजीपधारेगे॥ सेजोनतहो॥ जोतुम
मोकोपरमसुखदाईहो॥ मेरेदुःखतेदुःखीहो मेरेसुख
तेसुषीहो॥ फेरिचंदोवाननवायदीयो॥ तकियागसिज्यामाला
बीडाजलकीझारीअरगजाअबीरगुलालचोवाअंगरक
रनकेअनेकआभूषणवस्त्रदीये॥ इत्यादिकदेषिकेक
ह्यो॥ जोआजप्रभुपधारेगे॥ तबयहसांमिग्रीसुफलहोयगी
श्रीठाकुरजीश्रृंगारकरेगे॥ पाछेसिज्याकेपासअनेकचित्राम
निमार्गबंधादिकहास्यप्रसंगकेहे॥ सोदेषिकेंलज्यामांनभ
ई॥ औरहृदयमेतेअंगअंगकोकामकोउदीपनभयो॥ सो
तबश्रीचंद्रावलीजीआभूषणकीपेटीधरिकेंदर्पनअप
नेश्रीहस्तकमलसोलेराकराकेआभूषणभावसहितध
रायदर्पनदेखिभावसहितविचारतहें॥ जोश्रीठाकुरजीप
धारिकेमेरेआभूषणकोयाप्रकारअंगीकारकरेगेसो
प्रकारकह्योजायनांही॥ श्रीमहाप्रभुजीकीकृपातेहृदय
मेस्फुर्तिहोयगो॥ याप्रकारश्रीचंद्रावलीजीअपनीकुंज
मेश्रृंगारकरतहें॥ औरउहांललिताजीश्रीठाकुरजीश्री
स्वांमिनीजीकोअनेकभांतिकीमेवाआदिसांमिग्रीआरो
गायपरमदैन्यहोइकेश्रीस्वामिनीजीकीचरणसेवाकर
नलागी॥ तबश्रीस्वामिनीजीबोलीजोहेललितातेरोय
रप्रसंनहो॥ तातेतेरोमनोरथहोयसोमांगिले॥ तबललि
तानेकही॥ जोमेनानाप्रकारकीसांमिग्रीअनेकजतनतेसा

सिद्धि करि राषी है॥ सो तुम श्री ठाकुरजी को मेरे संग देउ तो आरो
गायके सब ही ले आऊं॥ यह सुनिके श्री स्वांमिनीजी ने श्री ठाकुर
जी सो कही॥ जो यह ललिता परम प्रीय हैं॥ सो ताते याके संग प
धारि सांमिगनी अंगीकार करिकें वेगि ही मेरे निकट आईयो य
ह सुनिके श्री ठाकुरजी चुप होइ रहें॥ तब ललिता ने विचारी
जो वको हूं करि श्री स्वांमिनीजी ने आग्या दई हैं॥ और ये उठे नो
ही॥ तब ललिता हती॥ सो उजाप करिकें श्री ठाकुरजी को उ
ठाय लाये॥ सो तब श्री ठाकुरजी ठाढे भये॥ सो तब श्री स्वांमि
नीजी विरह बस होइकें वेगि ही उठि उजाप करिकें अपने नि
कट वेठाइ लीने॥ और ललिता सो कहे॥ जो अरी ललिता तेने
मेरो प्राण ही मांग्यो॥ अब मे कहा करो॥ ताते जो और फेरिकें
मागे सो देउ॥ मेरे प्रान न मांगे॥ सो कहे तो या ही क्षण देउ॥ प
रं तुम मेरे प्राणनाथ जिनको सुष देषिके मे जीवत हो॥ सो कैसे
दीयो जाय॥ यह सुनिके ललिता चकित होइकें ठाढी होय रही
कछु बोली नांही॥ सो तब श्री स्वांमिनीजी ने कही॥ जो अरी ललि
ता तू और कछु न लेइगी मे जो न न कहे॥ जो अब मे काहू को वि
श्वास करि वरदान न देउगी॥ या प्रकार वचन कहत कहत
विरह समुद्र मे मगन जाय पर्यो॥ तब कही॥ जो अरी ललि
ता मेरे प्रांणनाथ को कहां ले गई॥ आज ते मोसो ऐसो
वैर क्यो कर्यो॥ या प्रकार के विरह के वचन कहत कहत वि
रह समुद्र मे मगन जाय पर्यो॥ (तब कही॥ अरी ललिता तुमे
रे प्रांणनाथ को कहां ले गई)॥ और हृदय के भीतर अंग अं
ग मे विरह छाय रह्यो॥ और आभूषण हते॥ सो सिथल
होइ गये॥ भूमि पर गिरि परे॥ जरी आदि सो श्री ठाकुरजी स
व आपने उपर नामे वांधि लीये॥ मोतीन की माला तन पांनकें

वे सरवें दी मांग गुही हती॥ सो सब विरह अगिनि ने कारे परिगये
अंगार सब उलटे होइ गये॥ पाछे श्री स्वांमिनीजी श्री ठाकुरजी
कें कंठ में भुजा मेलि कें कही॥ जो सषी तू मोको श्री ठाकुरजी सो
मिलाय॥ ललिता श्री ठाकुरजी को ले गई हैं॥ तहां तू मोउ को ले
चलि ऐसे नेत्रन ते जलधार संग कजल कच कुंभ कुंभ वहिच
ले॥ तिलक बेदी सिंदूर पसीना ते वहि चल्यो॥ यह मतिसा विरह
लवते थारो ऐसे सो विरह देषि के श्री ठाकुरजी मन में कहे॥ जो मे
रे बिना मिले ही इन को विरह भयो॥ सो मेरे विरह मे इनकी को
न दिसा होन होइगी॥ या प्रकार विरह ललिता जो देषि के चक
त होय रही॥ मन में कही॥ जो श्री ठाकुरजी इन सो मोको कोन
प्रकार मिलेगो॥ सो तब श्री ठाकुरजी ने सेन मेई ललिता को धी
रज दीयो॥ पाछे श्री ठाकुरजी श्री स्वांमिनीजी के कंठ में भुजा मे
लि उठाय के ठाढी करी॥ सो तब श्री ठाकुरजी ललिता को इशा
रा दीये॥ जो राग को और मे हो और राग को और तुम पकरो तब ल
लिता राग के और जाय के पकरी॥ तब तो यो सरूप ललित नकी
कुंज मंदिर परम सोभाय मान हतो॥ सो तहां संकेत स्थल ह
तो तथा कोकिला वन हतो॥ तहां पधारे॥ सो तहां कुसुम
न की केलि सिज्या बिछी हती॥ तहां श्री ठाकुरजी श्री स्वांमि
नीजी को सेन कराय श्री स्वांमिनीजी सो कहे॥ जो तुम सेवक
उपर ना सो मुष ढांपि के सेन करो॥ तो मे आप वही श्री ठाकु
रजी को पधराय लाउं॥ सो तब श्री स्वांमिनीजी ने श्री ठाकु
रजी की भुजा पकरि के कही॥ जो हे सषी मे तो को कबहु न छो
डुगी॥ तेरे मिले ते मेरो प्रांणनाथ हत हैं॥ ललिता ने तो मेरो प्रा
णजी नो हतो॥ तब श्री ठाकुरजी कहे॥ जो तुम मोको छोडो म
नि घरं जु उपर ना सो मुष नो ढांपो॥ तब श्री स्वांमिनीजी

ते कहा थसो तो रा पप करे रहे ॥ और एक हाथ सो उपर राख सोमु
खटाये ॥ सो तब श्रीठाकुरजी ललिताजी सो कहें ॥ जो तुम अपनी
निकुंज में चलिके त्यारी करो ॥ मे अब वही या ही ठार आवत हुं
सो तब ललिता उठि कें ॥ उठि के अपनी निकुंज को चली ॥ परंतु
हृदय मे धीरज रे बेकहू न रह्यो ॥ जो कोन प्रकार पावेगे न
वश्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी सो कहे ॥ जो श्रीठाकुरजी ल
लिता की कुंज ते पधारे हैं ॥ सो इतनो श्रवरा ते सुनत ही विरह
सब दूरि भयो ॥ सो तब मुख खोलि उठि के देखे तो श्रीठाकुरजी
सिज्या ऊपर विराजे हैं ॥ सो देखि के परम प्रीय सो मिली ॥ जैसे प्रा
ण गये पारे रंई फीरि के तन्य होई ॥ ऐसे परम आनंद श्रीस्वामिनी
जी पाय श्रीठाकुरजी के चरण कमल पर हाथ फेरि मुख चुंबन क
रि कह्यो जो अब कोरि कहूं मति जैयो ॥ पाछे नाना प्रकार कीसं
मिली परस्पर आरोगी आचमन करिवी ड़ा आरोगी परस्पर
अधरामृत उगार लीनो ॥ न बना ही समय श्रीस्वामिनीजी
के श्रीअंग श्रीठाकुरजी के अंग संयोग प्रसिभये ॥ सो तब
श्रीठाकुरजी आभूषण राखे हते ॥ सो सब पहराये बाजू बंद कं
कण चुरी बेसरि पचेली हथफूल मुंदरी नरवली आर सोआ
दि सब अंग के नाना प्रकार कें फूलन सो बेनी गुही ॥ अंजन
सिंदूर तिलक चिबुक बेंदे महावर कुच कुंमकुंम अंगराग
सर्व श्रृंगार सिद्ध करि अनेक लीला करि सेन कीये यहां श्री
ठाकुरजी इस रो स्वरूप धरि ललिता को मारग मे ही आइ मि
ले ॥ तब ललिता हरि हीसो देखि दोरि मिलि प्रसंन होई के
कहे ॥ जो तुम कोन प्रकार सो आये तो आप सघो डि के
हमी ॥ सो तब श्रीठाकुरजी कहे ॥ जो सब ठउाय के आयो हो ऐ
से कहि ललिता को मिलि परस्पर कंठ मे भुजा मेलि ललिता

के कुंज मे चले ॥ इहां श्रीचंद्रावलीजी अपने मन्दिर स्वसाहि न श्रृंगा
र करत हैं ॥ और श्रीठाकुरजी को मारग देखत हैं ॥ बिसाखाजी पा
स बेठी हे ॥ पाछे बिसाखाजी मन मे यह विचारी ॥ जो मे यहां क्यो बे
ठी हो ॥ इनके पास श्रीठाकुरजी पधारेगे तो मोको कहा ॥ सो तब
श्रीचंद्रावलीजी सो विसाखाजी ने कही ॥ जो ललिता की कुंज मे
श्रीठाकुरजी हैं ॥ सो मे जाइ के पधराय लाउं ॥ सो तब विसाखाजी
निकुंज मे ते बाहिर निकसि बन मे देखे तो ललिता ॥ और श्रीठा
कुरजी परस्पर गलबांही दीये आवत हैं ॥ सो बिसाखाजी ने
देखि के सेन मे ही कह्यो ॥ सो तब श्रीठाकुरजी कहे ॥ जो तुम अ
पनी निकुंज मे चालि कें बेगि ही त्यारी करो मोको आयो ही जानि
यो ॥ सो तब बिसाखाजी अपने मन मे परम आनंद पाय हर
रि के अपनी निकुंज मे जाय नाना प्रकार के अनेक विधि कें कु
सुमन की सिज्या अनेक भोग राजसि सिद्ध कीये ॥ यहां श्रीठाकु
रजी ललिता के संग ललिता की निकुंज मे पधारि नाना प्रका
र की सो मिली आरोगी कें ॥ जो जो मनोरथ ललिता को हतो ॥ सो स
ब पूरण कीये ॥ यही दूसरो स्वरूप धरि श्रीचंद्रावलीजी की
कुंज मे पहलें ई पधारि सकल मनोरथ उनके पूरण कीये पाछे
ललिता के यहां बिसाखा के कुंज मे पहलें ई पधारि सकल मनो
रथ उनके पूरण कीये ॥ कुमारिका श्रीयमुनाजी तो श्रीस्वामिनी
जी के प्रसंग मे जानियो ॥ उनकी कुंज मे जाय उनहू के सकल
मनोरथ सिद्ध कीये ॥ पाछे ब्रज मे स्वामिनी जिनने कोटान कोट
हें ॥ तथा सहचरी सखि लीला संबंधी नी हैं ॥ तिनने रूप धरि कें
तिन सबन के निकुंज में पधारे ॥ सबन के मनोरथ पूरण कीये ऐसो
सगरी गोपी यह जाने ॥ जो हमारे ई पास श्रीठाकुरजी हैं ॥ और के
निकट नाही हैं ॥ ताते अत्यंत प्रीति हृदय मे उपजी ॥ या प्रकार य

हाथिरह प्रेमको प्रसंग सवौपर हैं ॥ सो याप्रकार सब ब्रजभक्तनको
सुषदेके ॥ पाछे प्रातःकाल भयो ॥ तब सगरी गोपीनके निकुंज में
प्रातश्री ठाकुरजी आधीन होय ॥ ताक श्रीस्वांमिनीजी के निकटप
धारे ॥ पाछे श्रीस्वांमिनीजी कीरतिजी वृषभांनजी हते तहां पधा
रे ॥ पाछे सब मिलिकें होरीडांडे के पास संकेतमें आए ॥ सो तहां श्री
ठाकुरजी श्रीस्वांमिनीजी ॥ श्रीबलदेवजी सब मिलिकें स्नानक
रि नानाप्रकार के श्रृंगार धराय सगरे भोग आरोगि ॥ पाछे मधु
मंगल श्रीयसोदाजी के घरतें सांमिग्री रोरीहरदी जो पेनेगां
ठि बांधि के जायो हतो ॥ सो गांठि श्रीयसोदाजी के आगे धरेत
ब श्रीयसोदाजी ने कही ॥ जो मधुमंगल तो ब्राह्मण है हम केसे
लेरें ॥ सो तब मधुमंगल ने कही ॥ जो मेरे जो वस्तु है सो सब वस्तु ल्यारी
दीनी हैं ॥ तातें तुम संदेह क्यो करत हो ॥ मैं तो तुम्हारे घर को हो उस्ता
रे घर को टूंठिन सो मेरी देह प्रांन पुष्टि भए हैं ॥ सो तब श्रीरोहिणी
जीने श्रीयसोदाजी सो कही ॥ जो तुम आनंद सो यह सांमिग्री ले
ऊ ॥ यह मधुमंगल मेरे पास ले आयो है ॥ यह सांमिग्री तुम्हारे ई घ
रकी है ॥ जो यह मधुमंगल ऐसो है ॥ सो याने मेरी हूं हांसी कराई
सो तब श्रीयसोदाजी हसिके सांमिग्री की गांठि खुलाइ के मधु
मंगल सो कही ॥ जो तुम ब्रांह्मण हो ॥ सो अपनी पातरि पहलें ठं
मलेउ पाछें औरन को देइगो ॥ सो तब मधुमंगल ने कही जो मे
रो ब्रांह्मणपनो तो तुम्हारे पुत्र श्रीकृष्ण है ॥ सो तिनने सब खोया
उह अपनो टूंठो मोको सब खवायो ॥ तातें तुम मोको कोन से दिन
ब्रांह्मण के कर्म करत देखत हो ॥ मैं तो और कछू जांनत नांही
तुम्हारे पुत्र की टूंठी छाक नित्य खात हो ॥ और नित्य ही श्रीकृष्ण
के संग खेलत हो ॥ मोको यही आछो लगत है ॥ सो तब श्रीयसो
दाजी ने श्रीठाकुरजी सो कही ॥ जो तुम अपनो टूंठिन मायें धुमं

गल को मांति खवायो करो ॥ मधुमंगल तो ब्राह्मण है ॥ आपुन तो अही
र हैं ॥ तब श्रीठाकुरजी कहे ॥ जो मैं तो मधुमंगल को टूंठिन नांही दे
त ॥ यह मधुमंगल मेरी थारी में ते मेरे हाथ में ते मेरी पातर में ते जो
रावरी ले के खात है ॥ सो मैं काहा करो ॥ और तुम ऐसें कछू कहोगे तो हम
तो अपने जांने नां हींदे नहें ॥ तब श्रीयसोदाजी युक्ति कराय केदु
पहराई प्रथम श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमिनीजी को आरोगाय श्रीब
लदेवजी श्रीरेवतीजी को आरोगाय पाछें सब सषा गोप उपनंद
आदि बेठे हैं ॥ और श्रीवृषभांनजी के घर ते नानाप्रकार के सां
मिग्री आई ॥ सो सब मिलिके आरोगे ॥ नंद जसोदा सब गारेषो
पी वृषभांनजी को रानिजी आदि सब भोजन करि आचमन करि सबन
ने बीडी आरोगी ॥ पाछे श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमिनीजी को आरती क
रि ॥ श्रीबलदेवजी श्रीरेवतीजी की आरती करि पाछें श्रीवृषभां
नजी श्रीकीरतिजी श्रीनंदरायजी विदा हेय के श्रीस्वांमिनीजी
को ललितादिक सषीन को संग ले के अपने घर पधारे ॥ और
श्रीनंदरायजी श्रीयसोदाजी हू श्रीठाकुरजी श्रीबलदेवजी को
श्रीरेवतीजी को मधुमंगल और आदि सषा गोप सहित उप
नंद सषा गोप वृद्ध बालक सबन को संग ले के पधारे ॥ सो सब
पाछे अपने ॥ २ ॥ घर गये ॥ सो तब ललितादिक सषीन सो श्रीस्वां
मिनीजी ने कही ॥ जो आज होरी श्रीठाकुरजी के संग षेलन नहें ई
हां श्रीनंदरायजी श्रीयसोदाजी पधारे ॥ उहां श्रीवृषभांनजी
कीरतिजी पधारे ॥ तातें लाज करि के मैं होरी नांहि षेली ॥ तातें
आज सबन को जीतनो ॥ तातें मैं रोके सरी पीत ध्वजा लेके श्रीठा
कुरजी के सन्मुख रोपी ॥ सो श्रीस्वांमिनीजी की केसरी पीतध्वजा
करि ललितादिक सषीन ने श्रीठाकुरजी के सन्मुख रोपी श्रीचंद्रा
वलीजी स्वेत ध्वजा अरुंगवरी सषीन सो काहेके कोरे ॥ ललिताजी

लालधुजाकीरे॥ सोश्रीयमुनाजीकेभावसोंश्यामधुजासषीनने
लीयो॥ सांवलाकेभावसोंगुलाबीधुजा॥ औरसषीनकेभाव
केअनेकध्वजावेजनीलहरीयाकेकरे॥ जोपिस्तईआदिकोत
नकोटधुजाश्रीस्वांमिनीजीकीध्वजाकेपिछेरापेश्रीस्वांमि
नीजीकीध्वजाकेपाछेश्रीचंद्रावलीजीकोपाछेश्रीयमुना
जीकोपाछेकुमारिकापाछेश्रीस्वांमिनीजीकोसषीनकोस
हचरीकेद्रनीकेयाक्रमसोंयामेंयहजनास्ये॥ जोश्रीस्वांमिनी
जीकेरसकेपाछेंसवनकोरसकीप्राप्तिहे॥ याप्रकारश्रीस्वांमि
नीजीआदिसवनकीध्वजाकीसोभाअनेकप्रकारवनी॥ सो
श्रीठाकुरजीयाप्रकारध्वजानकोदेषिकेंमधुमंगलसोंकहेजो
मैयामेरोहस्योध्वजाहे॥ सोपीतध्वजाकेसन्मुखरोपिदेऊं न
वतत्कालमधुमंगलउठिकेश्रीठाकुरजी॥ श्रीठाकुरजीकोह
स्योध्वजालेश्रीस्वांमिनीजीकेपीतध्वजाकेसन्मुखरोपिदीयो
ताकोभावयहहे॥ जोपीतरंगश्रीस्वांमिनीजीआदिसवगो
पीवजको॥ औरस्यांमरंगश्रीठाकुरजीकोसोदोऊमिलिकेहस्यो
होनहें॥ नवश्रीस्वांमिनीजीनेमधुमंगलसोंकही॥ जोतुमपी
रेध्वजाकेसन्मुखकहाकारणसोंरोप्यो॥ सोतवकही॥ जोपी
तध्वजाकेऔरहरेध्वजाकेमुखीयाकोआजव्याहकरेंगे॥ काहे
तेजोमेंब्राह्मणहों॥ मेरोमैयाकुवारोहे॥ सोआजव्याहहोइतो
आछो॥ यहसुनिकेसवगोपगोपीश्रीठाकुरजीहसे॥ नवल
लितादिसषीबोली॥ जोमधुमंगलतुवडोढीठहें॥ तातेसवते
पाहेलेतोईकोषिरकेगो॥ तेरोसोभापहलेकरावनीहें॥ यहसु
निकेमधुमंगलतत्कालनिर्तकरनलाग्यो॥ औरकह्योजो
वडेबापकीवेटीजवहीजांनोगी॥ नवमेरोसोभावकरोगी॥ सो
याप्रकारअनेकचटकमटकसोंनितिकरनलाग्यो॥ इतनेंचा

रिपांचसषीदोरिकेंमधुमंगलकोपकरिलेगई॥ सोतवमधुमं
गलश्रीठाकुरजीश्रीबलदेवजीकोपुकास्यो॥ जोमोकोवे
गछुड़ावो॥ सोयहांसरवारगसहितश्रीठाकुरजीश्रीवलदेव
जीसवहसे॥ औरबोलेकोईनांही॥ नवमधुमंगलनेजांन्यो
जोमोकोकोईछुड़ावेगोनांही॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीआदि
सवनसोंकह्यो॥ जोतुममोकोछोडिदेऊतोमेंतुमकोश्रीठाकु
रजीकोपकरायदेऊं॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीहसिकेमधुमं
गलकोछोड़िकेकही॥ जोतुमश्रीठाकुरजीकोपकरावोगेतो
तुमकोदछनाभोजनकरावुंगी॥ जोमागोगेसोदेउंगी॥ सो
तवमधुमंगलनेकही॥ जोअवहरेतुरतहीलेआऊंगो॥ प
रिमेरेसंगकोईकोकरिदेऊ॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीनेललिता
नेकही॥ जोतुमथोरीसीदूरिमधुमंगलकेसंगजाश्रीठाकुरजी
कोछलकरिपकरिकेंयहांलेआऊ॥ नवललितापांचेसीहर
मधुमंगलकेसंगगई॥ सोतवमधुमंगलनेललितानेकही
जोतुरंचकआपनेनेंनमूंदि॥ सोतवललितानेआपनेनेत्र
मूंदे इतनेमेंमधुमंगलपाछेतेआयललिताकोगोदमेंले
केदोरीश्रीठाकुरजीकेनिकटलेगयो॥ नवहसिकेश्रीठा
कुरजीकहे॥ जोभलेमैयातुंअकेलोगोपीनकोजीतके
आडवधिकेंललिताकोलेकेआयो॥ जोकोईमेंनेरीवराव
रवतुराईनहीहें॥ सोतवसवगोपसवहसे॥ औरमधु
मंगलनेललितानेकही॥ जोनेनेमोसोछलकीयाभलो
वातहे॥ पाछेमधुमंगलनेललितानेकही॥ श्रीस्वांमिनी
जीनेकही॥ जोयहतोआछेनांहीकीयो॥ जोमेरीसषीको
हांसीकराई॥ नवमधुमंगलनेकह्यो॥ जोकहाकरो॥ तुम्हारे
पासनेकछरवायवेपहरिवेकोमिलतनांहीं॥ औरहमके

भाव॰ ॥१२०

पासतोमेनानाप्रकारकेभोजनकरतहे॥ सोमेउन्सारीजीतकेसे
कराऊं॥ सोतबश्रीस्वांमिनीजीनेहसिकेकही॥ जोयहजाति
कोबांछतराहे॥ सोयाकोखांनपांनपहरनोवोहोतप्रीयहेप्र
छेमधुमंगलसोकही॥ जोतूएकबारश्रीठाकुरजीकोपक
रायदेंइतोतोकोनानाप्रकारकेवस्त्रआभूषणदेंइगी
सोतबललितानेमधुमंगलसोकही॥ जोतूमोकोंछुडावेओ
रश्रीठाकुरजीकोपकरावेतोतोकोमेंनानाप्रकारकेवस्त्र
आभूषणदेऊं॥ सोतबमधुमंगलनेकही जोअबऐसोई
कौतुककरिकेछुडावतहो॥ सोतबश्रीठाकुरजीललितनको
पकरिकेमुखमेंगुलालमांडिकेसरिअरगजासोछिरकि
कें मुखमांडि सर्वांगभावसहितपरसकीये॥ सोतबललि
तामीतरतेंतोवाहोतहीप्रसंनभई॥ जोभलीभईमेंपकरी
गईश्रीठाकुरजीकेश्रीअंगकोपरसनोभयो॥ औरऊपरले
मनसोकही॥ जोयहकहाकीयो॥ मधुमंगलमेरीलाजगमा
ई॥ पाछेमधुमंगलनेश्रीठाकुरजीसोकह्यो॥ जोमेंफलतुमे
रोमनोर्थपूरणकरि॥ जोमेरेएककांधेपरतुवेठिऔर
एककांधेपरललितनकोबेठाइसोमेंहारिकेध्वजाकीफे
रीदेकेतेरोब्याहकरो॥ सोतबश्रीठाकुरजीनेहसिकेकही
जोफेरीदेनयेगोपीपकरे॥ तोतेरीतेरेदोऊएनकीहांसीहो
इगी॥ सोतबमधुमंगलनेकह्यो॥ जोमैंयामेरेसंगतोको
कोऊपकरेतोमेरोचाहेसोकरीयो॥ हेरवोमेंअबकेलोईसब
गोपीनकोजीतिकेललिताकोउठायलायो॥ तातेमेरेआ
गेकोईगोपीतेरानिकटआवेनांही॥ जोकदाचितकोईगो
पीआवेहतोचिंतानांही॥ मेंतोकोछलकरिकेबचायदेऊ
गो॥ यामेंतूप्रसंनहोइगो॥ सोईमेंकरोगो॥ सोतबश्रीठा

कुरजीमधुमंगलकेकांधेऊपरविराजे॥ पाछेएकओरललिता
हूबेठी॥ तबमधुमंगलध्वजाकेनीचेजायसातफेरीफिरि
कें पाछेगोपीनकीदिसदेख्यो॥ आछीभांतिश्रीठाकुरजी
केचरणारविंदपकरिकेकहे॥ जोमैयामधुमंगलतुमोही
सोछलकरेगो॥ यहबातआछीनांही॥ सोतबमधुमंगलने
कही॥ जोमैंयामेंतोकोजाननहो॥ जोतुमेरोजीवलेइगोमा
रक्योबटावतहे॥ सोतबश्रीठाकुरजीकहे॥ जोपाछेकोंफिर
नहीतोऔरदावोगे॥ सोतबमधुमंगलनेकही॥ जोपाछे
कोतोसर्वथांनफिरोगो॥ तिहारेमनमेंआवेतितनोमारक
रिमेरोजीवलेऊ॥ सोतबश्रीठाकुरजीनेओरहमारबदा
इकेदाब्यो॥ सोतबमधुमंगलसोचल्योनगयो॥ सोतबगो
पीनकोपुकार्यो॥ जोवेगिहीआइकेश्रीठाकुरजीकोपक
रो॥ सोइततेगोपीसबकोपिकेदोरी॥ सोतबश्रीठाकुरजी
नेओरहमारकरिकेदाब्यो॥ सोमधुमंगलसरदहोयआ
यो॥ धोवतीबिगरिगई॥ परंतुश्रीठाकुरजीकोपकरिके
बेठिगयोछोड्योनही॥ इतनेंईमेंसबगोपीदोरीआंइके
श्रीठाकुरजीकोपकरिलीयो॥ सोतबमधुमंगलनेकह्यो
जोमोकोबोहोतदुःखभयो॥ सोतबसबगोपीननेकही
जोभलेमधुमंगलतूबड़ोसामर्थवांनहे॥ तोकोदुःख
कहाभयो॥ तबमधुमंगलनेंकह्यो॥ जोश्रीकृष्णनेऐसो
भारमेरेऊपरकीयो॥ जोमोकोवमनभयो॥ धोवतीसगरी
बिगरिगई॥ तबसगरेब्रजवासीब्रजभक्तनसषानस
हितश्रीठाकुरजीहसे॥ सोतबगोपीननेकही जोमधु
मंगलतूबड़ोनिर्लजहे॥ अबवेगिजायकेस्नांनकरिआ
वो॥ जोतुमकोंसामिग्रीआभूषणवस्त्रदेंइ॥ सोतबम

धुमंगलनेकही॥जोमोकोतुम्हारोकछूनांहीचहीये॥बिनालीयेमे
रीयहदसामईहें॥औरजेऊमोतोकहाजांनेमेरीकोनदसाहो
इगी॥औरनाउपरांततुम मोकोनिर्लजकहतहो॥सोतबश्रीठा
कुरजीनेश्रीचंद्रावलीजीऔरललिताजीनेकही॥जोमधुमं
गलकूंठवेलतनहें॥खबरचुनांहीकिस्यो॥खबरचूकेनांमलेके
खेलमेतेभागिबेकोमनभयोहे॥सोमेकहिदीयोजोअबतुम
मधुमंगलकोगयोजांनियो॥सोतबश्रीचंद्रावलीजीऔर
ललिताजीनेमधुमंगलकोपकरयो॥सोतबमधुमंगलकोरि
सआई॥सोधोबतीखोलिकेहारिजारिदीनी॥सोतबललिताश्री
चंद्रावलीजीहारिमागिगई॥सोतबमधुमंगलललिताकेश्री
चंद्रावलीजीकेसन्मुखहोरिकेकह्यो॥जोतुमसमोकोश्रीहाकस
केवचनमांनिमोकोहूंठोकीयो॥तोतुमहूमोकोआपछीनईं
धोबमोदेऊ॥सोतबललिताश्रीचंद्रावलीजीलाजपायकेभा
गिगई॥कहीजोयहानिगोडोकहूंपकरिलेइगोतोहमारीहां
सीहोइगी॥सोतबमधुमंगलनिर्लजहोयकेहोरीकोगारी
देवेलग्यो॥सोतबललिताऔरश्रीचंद्रावलीजीनेअपनीस
षीनसोकही॥जोयामधुमंगलकोपकरिकेकछुसिक्षादीनी
चहीये॥सोतबसषीननेछिपिकेपाछेतेआपुमंगलकोपक
रिकें॥गरेमेएकवड़ोढुंढुभीडारिकेंपागउतारिकेपेटऔर
पीठिसोवांधी॥तेलकीअनेकगागरिलेनखसिखतेसषी
ननेन्हवायो॥सोतबसगरोसरीरस्यांमहोयगयो॥पाछे
अवीरगुलालछिरकिकेअनेकरंगकोचित्रअंगमेवनाई
अनेकठकठोरनकीयो॥सोठकठोरनमेंमधुमंगलको
जनेऊटूटिपायनमेजायअरुझ्यो॥सोतबमधुमंगलनेरिस
करिकेकह्यो॥जोआजमेतुम्हारेपिताहोइकेलग्योहो सोदेषो

तुमअपनेपिताकोकेसोअंगारकरतहो॥सोतबमधुमंगल
कीयहवांणीसुनिकें॥गोपीसबअपनेमनकोपकेपरस्परकहन
लगी॥जोआजयामधुमंगलकोऐसोकरो॥सोफेरनिर्लजहोइ
केहमारेसन्मुखकबहूनबोले॥सोसषीननेउईकेचुंनमेगुड़
कोपांनीडारिगोहडारिकेसगरेसरीरमेलगायो॥सोउनेउ
कमाकोरिहालतलगाइतानसोवांधि॥सोऊऔरदूसरीवाजनीयां
हीमांपेएकटूटोसूपवांधिकेएकमर्कटकोवेठायगरेमेंप
येमाऊपरानकीमालापहराई॥सोतबमधुमंगलनेअपनेगरे
मेढुंढुभीहलनी॥सोहालेवजायकेंनिर्तकरनधुकरिकेसगरे
व्रजभक्तनकोऔरसबव्रजवासीनकोसुनाईकेकह्यो॥जोआ
जमेरेभैयाश्रीकृष्णकोसगरीगोपीनसोव्याहहोयगयोहे
सोमोकोयहसबननेयहरावनीदीनीहे॥औरकाऊकोयहीये
तोलेऊ॥फेरऐसोसमोनपावोगे॥सोयाप्रकारमधुमंगल
कोदोषिकेंमाथेकोमर्कटहलनो॥सोउठायअनेकभांतिकोनिर्त
करनलाग्यो॥ताकोदेषिकेसबव्रजवासीहसे॥सोतबश्री
वलदेवजीनेमधुमंगलसोकह्यो॥जोमेयायहपहरावनीतु
मकोहीचहीयेहे॥तुमब्राह्मणहो॥तुमकोसोहतहे॥यहमधुमं
गलकेष्यालमेसबहीमस्तहोइगयेहे॥तबश्रीस्वांमिनीजीस
षीनसहितछिपिके॥श्रीठाकुरजीकोश्रीबलदेवजीकोपक
रिकें॥मुरलीपीतांबरछीनिलीयो॥सोमुरलीपीतांवरको
कारणकहा॥जोमुरलीसगरेव्रजभक्तनकोवसकरिलेई
ताते छीनी॥औरपीतांवरमायारूपआछादनकरततेहेसो
ऊहरिकीयो॥औरललिताजीनेश्रीबलदेवजीकीआंषिनमें
अंजनदीयो॥काहेतेंश्रीबलदेवजीदेवरूपमर्यादरूपहेत
हें॥सोअंजनदीयेतेयहरहस्यलीलाकोतांननहोई॥जेसेतु

कंजनहीसोनेहोइकेकोऊकोदीसेनहीं॥ तवश्रीठाकुरजीश्रीवलदे
॥भाव॥ वजीपकरेगये॥ तवश्रीललितनाजीनेश्रीचंद्रावलीजीनेंश्रीव
॥११२॥ लदेवजीकोपीतांवरछीनलीयो॥ तवमधुमंगलनेश्रीस्वांमि
नीजीसोकह्यो॥जोश्रीठाकुरजीश्रीवलदेवजीकोमेरीसखिदि
साकरो॥ तवश्रीठाकुरजीकहे॥जोमधुमंगलनेअवनांईहु
रमांनीनांहीं॥ तवएकसखीअपनोमुखमूंदिपनारेकीको
चराकगागरिभरिलाइकेंमधुमंगलकेऊपरडारी॥ सोकछुक
तोमधुमंगलकेऊपरपरी॥ औरकछुकमधुमंगलचीनिके
गोपीनकेऊपरडारिकेंगागरिफोरीनांही॥अपनेपासराखी
तवश्रीठाकुरजीश्रीस्वांमिनीजीसोवीनतीकरिकेकहे॥जो
मेतुम्हारोहूं॥ मोकोकछुपहरिवेकोदेऊ॥ मेरीहांसीहोइगी
तवश्रीस्वांमिनीजीअपनीचूंदरीमेतेएकटूंकफारिकेदीयो
सोतनियांकरिकेश्रीठाकुरजीनेपहरयो॥सोयहांयहभावहे
जोपीतांवरमायारूपहे॥ ताहांहरिकरे॥ श्रीस्वांमिनीजीनेअ
पनोरसगोप्यकरिराख्यो॥ तवश्रीठाकुरजीनेसेनहांमेम
धुमंगलसोकह्यो॥जोकीचगागरिमेवचीहे॥ सोदाऊजीप
रडारो॥ तवमधुमंगलपाछेतेआयकेकीचकीगागरिश्री
वलदेवजीपरढोरी॥ तवश्रीवलदेवजीरिसायकेमधु
मंगलकोपकरिवेकोदोरे॥ तवमधुमंगलरिसायकेभाग
केकह्यो॥जोमेरेऊपरक्रोधक्योकरतहो॥जोमोसोतोश्री
कृस्ननेकही॥ तवमेकीचतुम्हारेऊपरडारी॥ सोमधुमंगल
तोभागिगयो॥सोपकरननांहीपायो॥ तवश्रीठाकुरजीश्री
वलदेवजीसोंनेकही॥जोतुमतोचूनरीकोटूंकपहरिकेलाज
सहितवेठेहो॥ औरमेनागोडोलतहों॥ तापरमधुमंगलको
सिखाइकेमोपरकीचडरवायकेन्हवायो॥ तवश्रीठाकुरजी

नेश्रीवलदेवजीसोंकही॥जोमेरेऊपरक्रोधक्योकरतहे मोसोतो
श्रीकृस्ननेकही। सुनोदाऊजीमोपरगोपीनकोसनेहवोहोतहे
ताहेने॥जोमेरीमुरलीपीतांवरसवछीनलेतहें॥ परंतुमेउनसों
कछुकहतनांहीं॥ तुमकाहूकेऊपरक्रोधकरतहो॥ काहूको
मारिवेकोदोरतहो॥ ताते गोपीतुंमकोवस्त्रनांहीदेतहें॥ जे
सोगोपीनकोसनेहमेरेऊपरहे॥ सोतेसोरेवतीजीकोसनेहतु
म्हारेऊपरहे॥ तातेतुंमउनकेपासजाइकेवीनतीकरीके
कहोगे तवेदरदविचारेंगी॥ तवललिताजीनेकह्यो॥जोमोको
तोश्रीरेवतीजीनेसिखाईहती॥ सोतवमेश्रीवलदेवजी
केवस्त्रछीनेहें॥ नातरमोमेइतनोसांमर्थकहांहतो॥ सोता
हीसमयमधुमंगलनेकह्यो॥ जोमोहूकोश्रीरेवतीजीनेसि
खायोहें॥ तवमेकीचडारीहे॥ ओररमैयानृश्रीकृस्नसांचोकह
तहें॥ देखोतोमेकववकोनांगोडोलतहों॥ जोयहराजाकीवेटी
हुरिहादीहंसतहें॥ मोकोवस्त्रकोटूंकहूनांहीदेत॥ जोयहरी
याकोपिताकेघरकोअभिमांनहे॥ सोयाकोअभिमांनदूरि
करोगो॥ तवश्रीवलदेवजीश्रीरेवतीजीकेसनमुखगये
सोश्रीरेवतीजीश्रीवलदेवजीकोदेषिवोहोतलाजपायकें
कही॥ जोतुंममेरेनिकटमातिआवो॥ तुंमनागेहो॥ सोमेरीहां
सीहोइगी॥ तवश्रीवलदेवजीक्रोधकरिकेवोले॥ जोआ
जमेतेरोअभिमांनदूरिकरोंगो॥ जोआजतूराजाकीवेटी
हे॥ सोतेरेमनमेवोहोतअभिमांनहे॥ सोतातेतूमोकोवस्
त्रनांहीदेत॥ यहकहिकेश्रीवलदेवजीजाइकेश्रीरेवती
जीकोपकरे॥ सोतवश्रीरेवतीजीवोहोतलाजमांनहोयने
कृस्न नैनमेजलभरिकेसेनहांमेश्रीरेवतीजीसोंकही॥ जोअवमेरी
लाजतुम्हारेहाथहें॥ तातेतुंमवेगिमेरीलाजराखो॥ तेतुम्हारे

सरसाहे || सोतबश्रीठाकुरजीदोरिकेश्रीबलदेवजीकीभुजापक
रिकेकह्यो || जोदाऊजीतुंमतोपरमचतुरमर्यादाकेरक्षकहो
सोसबगोपीनकेआगेश्रीजनकोपकरतहो || सोयाबातमेतु
म्हारीबड़ाईनांहीहे || सोतबश्रीबलदेवजीचमकतहोयकेक
हे || जोहमहीलक्ष्मतुमनेईतोमोकोपठायोहतो || सोअबतुम
हीमोकोपहरिवेकोकछुदेउ || सोतबश्रीठाकुरजीश्रीरे
वतीजीसोकहे || जोभाभीजीश्रीदाऊजीतुंमसोबीनतीकरत
हें || सोतुमकछुपहरिवेकोदेउ || तातेदाऊजीकीलाजरहे
सोतबश्रीरेवतीजीअपनीसाड़ीमेंफारिकेंटूकदीयो सो
लेकेश्रीठाकुरजीश्रीबलदेवजीसोकहे || जोदाऊजीय
हटूंकपहरिलेउ || सोतबश्रीबलदेवजीतानियांकरिके
पहरनेलागे || सोओछोभयो || जोआगेतेरखेतोपाछेते
छूटिजाय || तबश्रीबलदेवजीश्रीठाकुरजीसोकहेजो
भैयायहसाड़ीकोटूंकतोओछोभयो || सोतबश्रीठाकुर
जीकहे || जोहेश्रीदाऊजीबालमाति यहटूंकतावड़ेभाग
नसोमिल्योहें || तातेएकहाथसोआगेतेदाबेरहोएक
हाथसोपाछेतेदाबेरहो || सोतबश्रीबलदेवजीऐसे
ईकीये || दोऊहाथसोदोऊओरदाबेरहे || तबसगरेबज
वासीगोपगोपीहसें || पाछेश्रीठाकुरजीललिताकेपासते
अनेकभांतिकीसंगमिस्रीलेकेंकहे || जोदाऊजीआरोगोगे
तबश्रीबलदेवजीकहे || जोभैयाभूषतोबोहोतलागीहें || प
रंतुमेरेदोऊहाथतोआगेपाछेलगेहें || सोतबश्रीठाकुर
जीकहेजोदाऊजीचिंतामतिकरो || जोतुमअपनेहाथसो
दाबेरहो मेअपनेहाथसोआरोगायदेउंगो || सोतबश्रीब
लदेवजीकहे || जोबोहोतआछीतुमहीआरोगायदेउ || सोत

बश्रीठाकुरजीश्रीबलदेवजीकोआरोगावनलागे || सोयहसोभादे
षिकेश्रीस्वांमिनीजीसषीनसहितबोहोतहसी || औरगोपगो
पीसबश्रीठाकुरजीश्रीबलदेवजीकोलाजलागी || सोखेल
मेतेभाजिकेश्रीयसोदाजीकेपासआये || सोतबश्रीठाकुरजीवि
चारे || जोदाऊजीघरगयेहे || सोरूंठीसांचीलगावेगे तोश्रीय
सोदाजीहमकोबाहिरनिकसननदेइगी || तातेमेहूंघर
कोचलो || सोतबश्रीठाकुरजीहूघरकोचले || सोश्रीयसोदाजी
केपासआये || सोश्रीयसोदाजीतोस्यामकेस्वरूपकोदेषिकें
हसिकेकहीं || जोहेबलदेवजीवस्त्रतुम्हारेओरमेरेकन्हैया
केहते || सोकहांगये || मेतोतुम्हारेभरोसेईअपनेबारेकन्है
याकोपठावतहो || सोतुमहीअपनीयहसोभाकरायेतोमे
रेकन्हैयाकोकैसेआछेराषोगे || सोतबश्रीबलदेवजीक
हे || जोयहसबसोभाभईहें || सोतोतेरेकन्हैयाकेगुणहें
इननेगोपीनकोसिरवाइदीये || सोसबगोपीनमिलिकेमेरे
वस्त्रछीनिलीये || सोतबश्रीठाकुरजीश्रीयसोदाजीसो
कहे || जोअरीमैयादाऊजीतोझूंठबोलतहें || सोदाऊजीआ
जहोरीखेलमेबड़ेबावरेहेगयेहे || सोपहलेतोअपनेसब
आभूषणवस्त्रउतारिदीये || सोताहीसमयश्रीस्वांमिनी
जीअपनीसषीललिताविसाषाकोसंगलेकेश्रीयसोदा
जीपासआयकेपगलागी || सोतबश्रीयसोदाजीहृदयते
लगाइकेंअसीसदई || जोअखंडसुहागतुम्हारोहोई || सो
तबश्रीयसोदाजीललितासोकहे || जोहेललितातेमेरेकन्हैया
कीऐसीसोभाकरी || अबमेतेरेसंगकबहूनजानदेउंगीसो
तबललिताने कही || जोमलेश्रीयसोदाजीअपनेबलदेवजी
कोतोमनेनांहीकरतहो || मेरेऊपररिसकरतहो || औरमेतो

अपनी श्रृंगार की नई साड़ी तामेते होऊ न कोटूं कपारि दीयो हैं॥
सो हेऊन ने पहरे हैं॥ सोतब मधुमंगल श्रीयसोदाजी सो कहे
जो तुम ललिता के ऊपर क्यों खीजत हो॥ यह तुह्मारे पुत्र को अप
रमेरी और अपनी इसोभा श्रीबलदेवजीने करी हैं॥ और को
न को सामर्थ हे सो करि सकें॥ सोतब श्रीयसोदाजीने कही॥ जो
मले श्रीबलदेवजी होरी मे बावरे होय गए हैं॥ अब मे तुम
सो कहा कहो॥ कोई और होइ तासो कहो॥ तातिनपर ई वार राती
पान करि मत्त रहत हैं॥ देह की सुधि नांही रहत हैं॥ ताते मन
मे जो आवे गउ ठी तेसे ही कीयो॥ सोतब यह सुनि के श्रीबल
देवजी कहे रिसकरि के॥ जो हे श्रीयसोदाजी तुह्मारे उत्तम
डोसांचो हैं॥ और ललितनमधु मंगल आगे बड़े सांचे हैं
ताकमे होइं बो हो॥ ताते अब बोलो मति॥ तुम आपुसमें दू
ठ बोलत हो॥ सो सुनि सुनि के मेरो रिस उपजत हैं॥ सोतब
श्रीयसोदाजीने हसि के श्रीकृष्ण को आछी भांति सो स्नां
न कराय वस्त्र आभूषण पहराए॥ पाछे श्रीबलदेवजी
को स्नांन कराय वस्त्र आभूषण पहराए॥ पाछे श्रीबल
देवजी को स्नांन कराय वस्त्र आभूषण पहराए॥ पाछे
मधुमंगल को गोपन को लगाय दीए॥ सो आछी भांति
सो देहमि जो यस्नांन कराय पाछे वस्त्राभरण पहराए
पाछे नाना भांति की सांमिग्री सें नभोग को श्रीठाकुरजी
श्रीरेवतीजी को और श्रीस्वांमिनीजी को आरोगाय श्री
बलदेवजी को आरोगाय गोप गोपी सगरे व्रजवासीन
को आरोगाए॥ वीरा देके मेवा मिठाई वस्त्र आभूषण श्री
स्वांमिनीजी ललितादिक सब सषीन को देके मलीभां
ति विदा करिके हरी॥ जोभोर ही वे भी पधारीयो नव सब सषी

न सहित श्रीस्वांमिनीजी श्रीकीरतिजी के पास पधारी॥ यहां श्रीय
सोदाजी सषन को विदा करि कें श्रीठाकुरजी श्रीबलदेवजी को न्या
रे न्यारे सेनमंदिर में सिन्यान पर सेन कराए॥ उहां श्रीकीरतिजी
श्रीस्वांमिनीजी की आर तीकरि गोद मे लेनाना प्रकार की सांमिग्री
सखीन सहित आरोगाई॥ पाछे आप आरोगि सुंदर सेज बिछा
य श्रीस्वांमिनीजी को लेके सेन कीये सेगहो॥ ताही समय अर्द्ध
रात्रको श्रीस्वांमिनीजी को श्रीठाकुरजी के होरी खेलन के रंग मगे
स्वरूप को स्मरण होइ आयो॥ सोतत्काल तीव्र महाविरह प्रगट भ
यो॥ सोतब सब अंगना तो होय महातीव्रविरह को सो नभाउ
ठन लागी॥ अथ श्रीलीला भावना लिख्यते॥ सो सिन्याऊ परते उतरि
के श्रीकीरतिजीने कही॥ जो हाय दैव मेरो प्यारो पाछे बेटी को
कहा भयो॥ जो मे पास सोवत हती॥ सो मोको अपे सोविरह को आ
चलागी॥ सो ताहीसमय ललिता विसाखा आदि सब सखीन को
बुलाइ के कीरतिजीने कही॥ जो अब मेरी बेटी को होरी के खेल मे
मति ने जैयो॥ काहेते॥ जो होरी मे दृष्टि खोली लगी हे॥ अब मे कहा
करों॥ कोन को दिखाऊं॥ कहां जाऊं॥ जो कोन रोग याको प्रगट भ
यो हैं॥ सोतब ललिताने कीरतिजी सो कही॥ जो तुम मने कहा रि
हो रई जाओ तो मे इनको अंग देखि के पूछि लेऊं॥ सोतब श्रीकी
रतिजी चोबारे ते उतरि केनीचे आई॥ सोतब ललिता विसाखा
निकट जाय कें श्रीस्वांमिनीजी के कांन मे कही॥ जो श्रीठाकुर
जी तुह्मारे पास पधारत हैं॥ सो सो सन्य बचन कहे हैं॥ सो यह
सुनत ही सब विरह दूरि होय गयो॥ अंग अंग सीतल होइ
गयो॥ अंखि उघारि देखे तो ललिता विसाखा ठाढ़ी हैं सो
तिन सो कही॥ जो अब श्रीठाकुरजी कब मिलेंगे॥ सोतब ल
लिताने कही॥ जो अब तुह्मारे पास पधारेंगे मे पधराऊंगी॥ अब

जोतुम हीको
न हेगे॥ पाछेकीरतिजीकोबुलायकें ललितानेकही॥ जोतुम हीको
अमभयोहें॥ तुम अबदेखवोनोसही॥ सोतब श्रीकीरतिजीआय
के देखेतो श्रीस्वांमिनीजीको अंगअंग सबसीतलहे॥ परमसु
खरूपहे॥ तबललिता सोकही॥ जोयहकहा अबहीतोयाको
अंगतातो हुतो॥ औरअब हीसीतलभयो॥ सोतब श्रीकीरति
जीसोललिताने कही॥ जोतुमनो भोरीहो॥ सो याछु सारीतेटी
कोतोरंच कहूदुख ना हीहें॥ सहीराकरस आनंदमय हें॥ और
तुमकोघरकी नाना प्रकारकी चिंताफिकररहतहे॥ सोरोगतो
तुम्हारोदहमे हें॥ तातेतुम अपनेसोंनताकारियामेदेखतहो॥ तुम्हा
रेसरीरमेमनमेरोगहे॥ तातेतुमइनकेसंगसेनमानिकरो॥ कहूंतु
म्हारोरोग इनकोलगेगोतो केसेहूय गो॥ औरसास्त्रमेऐसे
कहेहे॥ जोपांचवरसनेवेटीतथा वेटा होइगो ताके पासले
सेन करेतोमहादोषहे॥ जोतुम्हारीवेटीदसवरसकी होनआ
ई॥ औरतुम पासलेकेसेनकरो तोदोषपरतहे॥ सोतबयह
सुनिकेललिताजीकीरतिजीकेपायनपरनलागी॥ औरकही
जोललितातुमसगरीवातनमेचतुरहें॥ मेरे रोगानेअबयहेसा
मेयामेदेखीहे॥ औरपासलेकेसोइ॥ सो सास्त्र उलंघनमेंहूं
महादोषरूपहें॥ तातेमोकोयहदुःखभयो॥ अबललिता
विसाखातुमयमेरीवेटीकोअपनेपासहीनित्यसेनकरायो
तातेमेरीहूवेटीसुखपावो॥ सोईतुमयकरीयो॥ सोतबयाहीस
ाईमेललिताविसाखाश्रीस्वांमिनीजीकोसेनकरायेहें॥ औ
रकीरतिजीनिज्यामंदिरमेंजहांश्रीवृषभानजीसहितसे
नकीये॥ यहांश्रीस्वांमिनीजीललिताजीऊपरवोहोतप्रसं
नहोयकही॥ जोललिताभलीचतुराईकरी॥ नित्यकोदुःख
हरिलीयो॥ पाछेललिताकोअपनेकंठकीमालामोतीनकीपह
राई॥ औरकही॥ जोअब श्रीठाकुरजीमिलेतोसगरेसुखरूपहोइ॥ सो
तबललिताविसाखाखिरकीकेमारगउनरिकें श्रीठाकुरजीको
पधरायलाई॥ पाछेबनमेपधरिनानाप्रकारकेंरासविला
सकरिकेंपिछलेपहरअपनेघरनमेपधारे॥ पाछेभोरभयो
सोतब श्रीस्वांमिनीजीस्नानकरिकेंभोजनकरिसबसखीन
सहितश्रंगारहोरीकोसबसाजलेंसमाजसहितश्रीव्रजरा
जजीकेघरआई॥ यहांश्रीयसोदाजीश्रीस्वांमिनीजीकीले
भलीभांतिपधराय॥ पाछेश्रीठाकुरजीश्रीस्वांमिनीजीको
स्नानकराय॥ नानाप्रकारकेश्रंगारकरिश्रेगारभोग॥ आपने
सबगोपीमुख्यसखानकोआरोगायो॥ पाछेश्रीयसोदाजी
राजभोगआरोगायो॥ ताहकेपाछेसखाग्वालगोपीसखीश्री
बलदेवजीआदिसबव्रजवासीनकोपाछेभांतिभोजनक
राये॥ पाछेदोऊस्वरूपसमाजसहितहोरीडांडेकेपासआ
ये॥ सोतबहोऊदिसकीपिचकारीचली॥ पाछेनानाप्रकारके
गुलालअबीरअनेकरंगकेदोऊदिसतेउड़े॥ सोआकास
सबछायकेअंधेरोहोइगयो॥ सोतबसबसखीदोऊदिसते
दोरिकेसगरेसखनकोगोपनकोश्रीबलदेवजीकोभिजो
इश्रीठाकुरजीकोअकेलेकरिकेंपकरिलाई॥ सोतबललि
ताविसाखाआदिसबसखीगुलालतेछिरकनलागी॥ कोऊअ
नेकरंगकेअबीरछिरकनहें॥ कोऊकुंमकुमाभाारनहेंको
ऊगेंदुककोऊपिचकारी॥ कोऊअरगजाकोऊचोवाकोऊके
सकुसमकोरंग॥ कोऊतेलकोऊफुलेलयाप्रकारछिरकि
केश्रीठाकुरजीकोघवरायलीयो॥ परंतुकोऊसखीमानततनां
ही॥ सोतबश्रीठाकुरजीबोहोतअकुलाने॥ सोश्रीस्वांमिनी
जीदेखिकेतत्कालजलकीडारीलेकेंसबसखीनकोहस्तकमलके

डारिके श्रीठाकुरजी कें निकट आय अपने हृदयसों लगाइ जल
लेके अपने हस्तकमलसों श्रीठाकुरजी को मुखारविंद धोय पं
अपने कोमल अंचलसों पोंछि कें कंठमें भुजा मेलि कें अप
नी उतरीपर बैठारि कें मधुर वांणी बोलन भई॥ हे प्रांणनाथ
आज तुम ने बोहोत दुःख पायो॥ ये सषीजन सब री अपनों
नमें भरी हैं॥ गमारि है॥ कछु स्नेह को लेश हू नांही है॥ तातें ऐ
सी निर्दय है के तुम को या भांति छिरक्यो हैं॥ पाछें सषी सब
सकुच पाय के आगे ठाढी हैं॥ सो तिनसों श्रीस्वांमिनीजी ने
कही॥ जो मेरे प्राणनाथ श्रीठाकुरजी परम सुंदर सुकुमा
र॥ सो तिनसों तुम सगरी होरी षेलन के योग्य नही हो के बल
गमारि हो॥ तातें आज श्रीबलदेवजी आदि सषा गोप हैं सो
तिनसों होरी खेल्यो करो॥ मन आवे तेसे ई उनकों छिरको मे
अकेली ही श्रीठाकुरजीसों खेलोंगी॥ मेही प्रीतसों छिरकों
गी॥ सो तब श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमिनीजीसों कहे॥ जो आज स
षीन ने मो को बोहोत ही अकुलायो॥ परंतु तुम ने दोरि के र
छ्या करि के मो को बचायो॥ तातें तुम्हारो एक यह उपकार है॥
सो ताको में पलटो देवे में सामर्थ नांही हों॥ तातें आजतें मे तु
म्हारे संग होरी षेलोंगो सदां सर्वदा॥ या प्रकार परस्पर स्ने
ह की वातो गजवाई दोउ करत हैं॥ यह कार रागरस जो नौ र
अब सषीन जो नो॥ जो श्रीस्वांमिनीजी हमपर अप्रसन्न भ
ई हैं॥ सो अब हमारो कहुं ठिकानो नांही॥ तातें अब ऐसो उ
पाय होय॥ जो अब वेगि प्रसन्न होय तो हमारो जीवन सुफल है
पाछें ललितादिक सषी नांना प्रकार की सामिग्री धार संध
रि लाई॥ सो दोउ स्वरूप पधारि पूर्वक आरोगि आचमन क
रि बीड़ी आरोगे॥ पाछें श्रीस्वांमिनीजी ने सषीन को आसादी

नी॥ जो तुम श्रीबलदेवजी को औरस गरे सषन को पकरि के लावो
सो तब सषी प्रसन्न होय पाक करि कें सषीन सहित श्रीबलदेव
जी को पकरे सो ललितादिक सषी श्रीबलदेवजी को पकरि
कें श्रीठाकुरजी के औ श्रीस्वांमिनीजी के आगे ले आई॥ सो
तब श्रीबलदेवजी ने श्रीस्वांमिनीजी सों कही॥ जो तुम कृपा
करि के मो को छुड़ावो॥ सो तब श्रीस्वांमिनीजी ने हसि के श्रीबल
देवजी को छुड़ाय कें श्रीठाकुरजी के पास बेठाये॥ पाछें अष्टस
षा आदि ग्वालन मधुमंगल आदि सषा सबन को पकरि कें
श्रीस्वांमिनीजी के आगे ले आई॥ तब सबन ने कही जो अब
हम को छुड़ावो॥ सो तब अपनी सषीन सों श्रीस्वांमिनीजी ने
कही॥ जो ये मधुमंगल आदि सगरे सषा ढीट हैं॥ तातें इन सषन
को या प्रकार बांधो॥ दोइ दोइ सषन की पीठ लगाइ कें बांधो
सो यहां श्रीस्वांमिनीजी तो सषान के बंधवायवे में लगी औ
र श्रीबलदेवजी श्रीठाकुरजी को गोद में ले भागे॥ सो ये महास
घन निकुंज कोकिलावन होय पधारे॥ सो तब ललितावि
सारवा श्रीचंद्रावलीजी आदि अपनी सषीन हां राषि कें श्रीस्वां
मिनीजी सों नजर बचाय कें सब श्रीठाकुरजी पास आई सेन
ही में श्रीठाकुरजी सों बीनती करी॥ जो हम पर कृपा करि श्री
बलदेवजी को इहां ते टारि कें हमारे मनोरथ पूरण करो॥ ऐसो स
मय हम को फेरि नांमि लेगो॥ सो तब श्रीठाकुरजी श्रीबलदे
वजी सों कहे॥ जो एक सषा श्रीरेवतीजी की साड़ी खेंचत हैं॥
तब ललिता ने कही॥ जो मैं अब ही देषि के आई हों॥ जो एक ग्वा
ल श्रीरेवतीजी की साड़ी खेंचत हे॥ और अपने कुभांति की हं
सी मसकरी करत हैं॥ सो श्रीरेवतीजी बोहोत लाज करि दुषी
हैं॥ सो ऐसो सो कही॥ जो श्रीबलदेवजी आवे तो मो को छुड़ावे तातें

भाव ॥१२८

मे तुम को सुनाय दीयो है ॥ सो तब श्री ठाकुरजी कहे ॥ जो दाऊजी
वेगि जाइ कें श्री रेवतीजी को छुड़ाय लेऊ ॥ सो तब श्री बलदेवजी
श्री रेवतीजी को छुड़ावन गये ॥ यहां श्री चंद्रावलीजी ललिता
विसाखा स्यामलता आदि परम आतुर होय श्री ठाकुरजी सो
कहें ॥ हस्त पकरि चरराय के बीनती करी ॥ जो आज हम
ने समय बन्यो है ॥ ताते हमारो मनोरथ पूरण करो ॥ तब श्री ठा
कुरजी सब सखी श्री स्वांमिनीजी प्रति न पधारि कें सब न के म
नोरथ पूरण करन लागे ॥ और यहां मधुमंगल ने श्री स्वांमिनी
जी सो कह्यो ॥ जो तुम मनोसब न के बंधिवे में लगी हो ॥ परंतु श्री ठा
कुरजी कहुं गये ॥ ताते मोको छोड़ो तो मैं तुम को श्री ठाकुरजी को
मिलाऊं ॥ यह सुनि के पाछे श्री स्वांमिनीजी देखे तो श्री ठाकुर
जी श्री बलदेवजी दोऊ नांही हें ॥ और श्री चंद्रावलीजी ललि
ता विसाखा को सखी ह तौ नि न सो पूछी ॥ जो तुम्हारी स्वांमिनी
कहुं गई हें ॥ तब उनने कही ॥ जो हम को तो नाही कनां ही है ॥ हम
यहां तुम्हारे पास हें ॥ तब श्री स्वांमिनीजी मधुमंगल आदि
सब सखीन को छोड़ि अनेक संगिनी सो पराव सन देके क
ही ॥ जो उह कपटी व ओछे लाऊं है ॥ ताकोरे तुम वेगि हीव ताबो ॥ स
खीन सहित कहुं गये हें ॥ सो तब मधुमंगल श्री स्वांमिनीजी
को पधराय कें जहां सखीन सहित श्री ठाकुरजी हते तहां ले
गई ॥ सो ता कुंज की आड़ मे ठाड़ी करि आपु सरकि आयो ॥ यह
लीला देखन को मेरी सखि ता नांही हें ॥ सो श्री स्वांमिनीजी देखे
तो श्री ठाकुरजी यगलवांड़े दीरे परस्पर नानाप्रकार रहस्य
नो द कर तहे ॥ तब यह देखि कें श्री स्वांमिनीजी सो सखी नको सो
ललिता की आड़ में मध्य के पाछे ते दोरि के आइ कें श्री ठाकुरजी की
फेट पकरि कें क्रोध सहित अनेक वचन कहे ॥ जो अरे कपटी लंप

चो

ही लायक हें ॥ तुमसे अपराधीनि स्याइ ठीसो हरखो नहें ॥ आज तुम्हारी
हमारी वोहे तादिन न मे प्रगट करी है ॥ यह सुनत न ही सखी सब
सोच करि कें सखी सबन्यारी ठाडी होय रही ॥ और श्री ठाकु
रजी लाज पाय नीची दृष्टि करि के कहे ॥ सब सखीन को सो
भादे धि के प्यारो से न होमे कह्यो ॥ ताते हम को तुम को दोनोन
को कठिन परी ॥ पाछे श्री स्वांमिनीजी अनेक प्रकार के वच
न उर हा ने के कहि कें क्रोध करि के मांन कीयो ॥ जो अब तुं
म मो सो कबहू न बोलोगो ॥ असे कहि के मांन मंदिर में पधा
री ॥ अथ मांन को भाव ॥ सो तब श्री ठाकुरजी ललिता विसाखा
सो कहे ॥ जो आज तुम कछू असो विचार करो ॥ जो काऊ प्रका
र सो मांन छूटे ॥ सो तब ललिता विसाखा नानाप्रकार के केई
उपाय कीये ॥ परंतु रंच कहू मांन न छूटे ॥ सो तब ललिता
विसाखा हारि कें श्री ठाकुरजी के पास आइ के कही ॥ जो ह
म तो अपनी बुद्धि अनुसार अनेक उपाय कीये ॥ परंतु श्री
स्वांमिनीजी आज मांन ना टो कीयो ॥ सो क्यो हू छूटत नाही
हें ॥ ताते आपु पधारि के जतन करो तो मांन छूटे ॥ सो तब श्री
ठाकुरजी सुंदर सखी को भेष धरि विजना हाथ में श्री स्वां
मिनीजी के पाछे जाय के बेठे ॥ तब ललिता श्री स्वांमिनी
जी के पाछे जाइ के बेठी ॥ तब ठाड़ी होइ सन्मुख जाइ कें
बीनती करी ॥ जो हे प्यारी जू गिरधर लाल तुम्हारे दरसन वि
ना बोहोत दुखी हें ॥ ताते तुम चलि के अपने प्रांणनाथ को
सुख देऊ ॥ सो तब श्री स्वांमिनीजी ने कही ॥ जो अरी ललि
ता तू मेरे आगे स्याम कपटी को नाम हू मति लेऊ ॥ जो मेरी श
मरेगा आज ते तो लों बर हू छोड़ो ॥ और अंजन हू न देऊं
गी ॥ स्यांम कें कुकोड़ न पहरोगी ॥ बन के म मरवा न देखोगी

कोकिलाके शब्दको श्रवणमें न सुनोगी ॥ रगमद कबहू न
लगाऊंगी ॥ मर्कत मणिके ठमेक कबहू न पहरोंगी ॥ नीलकं
वल कबहू करसो न छुवोगी ॥ ताते श्यामको नाम मेरे आ
गे मति लेऊ ॥ सो तब श्रीललिताजीने कही ॥ जो तुम कहा
श्यामरंगते न्यारी हो ॥ न कवेसर करत हो ॥ परंतु यह श्या
मरंग ऐसो है ॥ जाको लगत है ॥ सो ताको छोड़त नाही है ऐ
से ह उतारे पाछे लगि रह्यो है ॥ यह सुनिके श्रीस्वामिनी
जी चक्रत होइ पाछेको देखे तो नाहीसमय ॥ श्रीठाकुरजी
ने हसि दीयो ॥ सो तब तत्काल श्रीस्वामिनीजीको मान छू
टि गयो ॥ सो आपुहू हसि दीये ॥ तब श्रीठाकुरजी अपने
हृदयमें आलिंगन दे ॥ अपने अंकमें लेके विराजे ॥ तब
ललितादि नाना प्रकारकी सामिग्री प्रभुनको आरोगा
य ॥ पाछे कोकिला वनमें नाना प्रकार कोकर केरी ताविप
रीत रमण कीये ॥ सखीजन जाल रंध्र होइके नाना प्रका
रकी लीलाको अवलोकन करत हैं ॥ यह लीला अत्यंत गो
प्य है ॥ ताते रसात्मक जन विचारि विचारि हृदयमें अ
नुभव करिके रसको पान करत हैं ॥ ताते या वनको ना
म कोकिलावन हैं ॥ अब फागुन वदी ७ ॥ श्रीनाथजीके पा
ट उत्सवकी भावना ॥ प्रथम लीला जहां न्यस्य हैं ॥ तहां प्रथ
म श्रीचंद्रावलीजीके घर फागुन वदी ॥ ७ को श्रीजी प
धारे हे ॥ तहां भावसो श्रीगुसांईजीके अवतार लीला हैं
तहां श्रीगुसांईजी श्रीचंद्रावलीजीको स्वरूप हैं ॥ परंतु अ
व जगतमें प्रगट विप्र रूप हैं ॥ ताते यहां भाव भीतरको
गोप्य करणीय हैं ॥ मलेछको भय परवत पर करायके
फागुन वदी ७ ॥ के दिन श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीके घरमें प

धारे ॥ सो ताको यह कीर्तन है ॥ जो रहो मोय श्रीवल्लभ अगर ह्वै आवे
सो ताको अभिप्राय यह है ॥ जो घर धनी घर न होय ॥ और रत्न हांजा
हके रहनो ॥ भोजन न करनो ॥ यह अत्यंत स्नेहको लक्षण हैं ॥ ताते
श्रीगुसांईजीकी गुनाय बेकी आपे सामर्थी ॥ अपने घर जांनि
के पधारे ॥ अब या दूसरो भाव कहत हैं ॥ जो श्रीगुसांईजी घर रहे
इतो श्रीगोवर्द्धनधर घर पधारे यनें रजांनिके महाप्रेम आनंद
सो विप्रभेषको भाव छूटि जाय ॥ श्रीचंद्रावलीजी रूप प्रगट
सबके आगे होइ ॥ यह रस काहूको जनायवेयो नांही हैं सो
ताके लीये श्रीगुसांईजी प्रदेसमें हुते ॥ तब पधारे ॥ और भाव
नक श्रीचंद्रावलीजीको स्वरूप तो श्रीगोवर्द्धनधर पास अ
हर्निस लीला करत है ॥ सो श्रीजीके संग पधारिके नाना प्र
कारकी सामिग्री आरोगाई ॥ मुख्य सामिग्री तादिन जलेबी है
श्रीचंद्रावलीजीको अधरामृत रूप ॥ ताते श्रीगुसांईजीके उत्स
वमें मुख्य हैं ॥ तादिन केसरी वागो केसरी कुलह धारण करे
याको यह अभिप्राय जानना ॥ जो श्रीचंद्रावलीजी युगलस्व
रूप आपने निकुंजमें लीला करत हैं ॥ ताते श्रीगुसांईजीके घ
र युगल स्वरूप सो पधारे हे ॥ चारयो यूथपनि श्रीस्वामिनी
जी समाज सहित तामें सेव छाकिके बड़ा मीठो रपकनी न
कूंदा आदि धरत हैं ॥ और अपनस घड़ीमें मेवाटी सेव केज
डुवा कंदीस करपारा धराये ॥ चारयोके भावात्मक हैं जैसे
डंडो रोपणी भयोके दिन मीठी कचोरी श्रीस्वामिनीजी
के भौं कमोलके भावते ॥ अन्योको चंद्रमा आकार हैं ॥ और
फागुन वदी ॥ ७ ॥ के दिन श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल वास कीये
और ताही दिन श्रीनवनीतप्रीयाजीके मंदिरकी नींव मु
रातमें रखो दीहैं ॥ पाटबैठ्यो दरसनें ॥ और ताही दिन श्रीगो

श्रीरघुनाथजी के घर पधारे हैं ॥ श्रीरघुनाथजी के
कुलचंद्रमाजी श्रीगुसांईजी के घर पधारे हैं ॥ श्रीरघुनाथजी के
कुलचंद्रमाजी श्रीगुसांईजी के पास श्रीनवनीतप्रि
यजी श्रीगोवर्द्धनधर श्रीगुसांईजी के पास श्रीनवनीतप्रि
याजी श्रीआचार्यजी रूपनिन्यासिंहा के भाव सो परवनीतप्रि
उत्सव के दिन घर में रहेत हैं ॥ या प्रकार अनेक भाव पूर्वक मनोरथ क
उत्सव के दिन घर मे रहेत हैं ॥ या प्रकार अनेक भाव पूर्वक मनोरथ क
रत हैं ॥ सप्तमी को दिन पधारे ॥ सो ताको भाव यह है ॥ षटधर्मसंयु
क्त धर्मी सर्व लीला विशिष्ट इन नेम प्रारे ॥ पुष्टिमारग मे यह है
जो उत्सव की संप्रिया वाजंत्र गान नादिक अनेक छोन हत नवीय
यह हैं ॥ जो या कलिकाल मे सर्व हो बको देखवे कें पुष्टिमार्ग द्वार
परलीला प्रगट कीरो ॥ ऐसे माया अनेक या माया वादीन के
मनको खंडन करि भक्तिमार्ग को स्थापन यह श्रीजी श्रीगोवर्द्ध
नधर सात मंदिर आदि पुष्टिमारग की सब रीत सा क्षा त्कों
छिकंदर्प ने सुंदर दर्सन सोन यह ॥ छठे न सष्ठाइ प्रसादी अन
सषाड़ी खासा मर्यादा की सेवगी आदि को संभा विचारि भगव
दस्वरूप व्रजभक्तन कें भावात्मक सार खी कत पतन पुष्टपु
ष्टपुरुषोत्तम रूपनि न कें श्रीकृष्ण स्वरूप कोसांनवे रास
यह जो भगवद् सेवा के आगे आरधर्म जप तप संजम नैम
नवधा भक्ति हमीं ॥ यह सर्व सेवा के पाछे यह छह धर्म धो
रधर्मी यह जो सगरी सेवा करि पाछे मन मे सगरी सेवा को भाव
ताको भावना करि रस को अनुभव मानसी करनी ॥ या भाव ते
सप्तमी को उत्सव है ॥ सो ता दिन राजभोग समय यह धमारि
गावत हैं ॥ धनि धनि नंद जसोमती धनि श्रीगोकुल गाम ॥ धं
न्य कुमर दोऊ लाड़िले बालि मोहन जाके नाम ॥ १ ॥ या धमारि
मे आगे यह हैं ॥ मे पावि वित्र बनाई यो हो भुषन वसन सिंगा
र ॥ निज मंदिर रत्न सजे चलि बालक वदन बनवारि ॥ गिरवर
धर रस भरे हो मुरली मधुर बजाय ॥ इत्यादि कभाव पूर्व

क सिंगार करि निज मंदिर रागि रजते श्रीगुसांईजी के घर पधारि कें
अपने कवि हारादिक श्रीचंद्रावलीजी की निकुंज में करि रस सो
भरि कें मुरली बजाय सगरे व्रजवासी की वधू बुलाय पाछे
होरी खेले ॥ ताते पुष्टिमारग मे यह रीति हैं ॥ जब श्रीठाकुरजी
को राजभोग आवें ॥ तब श्रीजी खोली खेले श्रीस्वांमिनीजी
श्रीचंद्रावलीजी साहितनि कुंज मे पाछे राजभोग सरें तब
सगरे व्रजभक्तन साहित होरी खेलें ॥ तासे हाय खेल होत हें गो
विंद स्वांमी की धमारि याते पहले गावत हें ॥ सुहामास पीको
प्रगट हें श्रीस्वामिनीजी के भाई रहस्य लीला के अहनिस
अनुभव कती पुष्टि रस के अप्रकूल वृषभानजी के घर ते प
धराय लावनो ॥ यहां उहां के समाचार प्रीति के वटाव नहार
ताते इनके कीर्त्तन ते श्रीगोवर्द्धनधर श्रीस्वामिनीजी प्र
सन्न होत हें ॥ ता दिन न्योछावर होत हें ॥ सो श्रीचंद्रावलीजी
थार में मोती की आरती दीवड़ा धरिके करें ॥ फिर हन्योछाव
र कीये ॥ अपनो सर्वांग प्रभु को समर्पण कीये ॥ सो ताभाव
सो आरती न्योछावर होत हे ॥ और अपने कभाव है मन में
रसिक जन अनुभव करत हें ॥ फागुन सुदी ७ होराष्टमी की
भाव ॥ सो ता दिन ते गारी भरी सारी खेल होत हें ॥ ताको भा
प्राय यह हें ॥ जो राजभोग भीभाव ता अनुसार यह होरी है सो
श्रीस्वांमिनीजी के हास्यरूप अंसन रंगिनी सषी हें ॥ सो श्रीस्वां
मिनीजी की आज्ञा पाय ते संत रितु मे कांम को जन्म हें ॥ सो व
वय ह होरी सक भी र प्रगल होई सगरे लोगन को उन्मत रस
रूप करत हें ॥ ताते रम्या दिन कां मप गा र सायुक्त यह लीला हें
ताते होरास्टक को कह्नो तन संत्रिम्त्री आरोगीये ॥ राज
भोग उत्सव मंगनिये फागुन सु ॥ १० ॥ ता दिन कुंज ता दिन अर्प

ग॥ और खेल भारी॥ ताको भाव यह हैं॥ ग्यारस बारस तेरस चोदस
ये चारयो दिन में चारयो यूथपति को मनोरथ है॥ तामे प्रथम कुंज
की ग्यारस ता दिन श्री स्वांमिनीजी को खेल॥ अष्टसखा श्री स्वांमिनी
जी करत हे॥ प्रकट काष्ठ की धार सा करत हैं॥ सोजे से मोर क
लाकरि रसदान करत हैं॥ सो ते से व्रज भक्तन को जनावत हैं नि
कुंज के भाव ते मानसिक विहार हैं॥ ताते यह कीर्तन गावें द स्वा
मी को॥ ते मोहन को मन हर्यो॥ और नग विन रत्न जायरी प्यारी
पाछे ता दिन सेन में गुलाल लया ते उड़ावत हैं॥ जो श्री स्वांमिनी
जी की कुंज में सगरी होरी रस रूप श्रीजी खेलत हैं॥ या भाव में कुं
ज हैं॥ ता दिन ते डोल के कीर्तन गावत हैं॥ सो याते जो डोल अ
नंत रहस्य लीला हिंडोरा की नांई हैं॥ ताते कुंज की ग्यारस ते अ
नंत रहस्य लीला हैं॥ ताते डोल गावत हैं॥ और फागुन सुदी
१२ के दिन श्री यमुनाजी के भाव सो भारी खेल हैं॥ सेन में गुलाल
उड़े डोल गावे॥ तेरस के दिन श्री ललिता श्री चंद्रावलीजी के
मनोरथ ते खेलत हे॥ सेन में भारी गुलाल उड़े डोल गावे॥ क
बहु चोदस के दिन होरी होय॥ चोदस के दिन कुमारिका आ
दि सब सखीन के भाव ते खेलें॥ भारी सो भारी गुलाल उड़े डो
ल गावें क बहु चोदस की होरी होय॥ तव यह भाव न्यारो रैये
कुंज की ग्यारस के दिन श्री स्वांमिनीजी॥ और श्री यमुनाजी
मिलि के खेले॥ एक और है द्वादसी को श्री चंद्रावलीजी को
खेल संग मिल्यो श्री यमुनाजी के भाव को॥ बारस को राजभोग
में आरोगे॥ तेरस में कुमारिकादिक सर्व स्वांमिनीन के भाव यह आ
विचारि कें चोदस को होरी होत हैं॥ अथ होरी को भाव न
अब होरी के दिन बड़े पर व मांगनि श्री स्वांमिनीजी अष्टअंग
श्रीजी को करावत हैं॥ सो ता दिन उर्द के बड़ा छाछ और सेव

तीन कूला मीठे पाक मेवा तीनग्रं डा सेव के लडुवा दही सकरपारा
आदि संगमिग्री॥ खेल बड़ो सगरे दिन व्रज में खेले॥ गोपी ग्वाल
सखा श्री बलदेवजी व्रजभक्त संयुक्त मांनो खेल गारी निर्लज्जता
को अंगीकार कीये॥ पाछे सेन में मानो खेल खेलि कें लकुटी हाथ
धरत हैं॥ डंडा को खेल॥ तामे यह जनाई॥ जो लकुटी पिष्टका स्वरू
रूप हैं॥ सो ताकी वेद मर्यादा उलंघन करि अपनी पुष्टि व्रज में
विहार लीला को स्थापन कीये॥ होरी के चारि प्रहर रात्र में चारयो
यूथपति स्वांमिनी सो क्रीड़ा विहार॥ ताते सेन में गुलाल उड़े
और डोल के कीर्तन गावें॥ होरी की रात्र को होरी मंगल तें रमन
आदि करि कें गुलाल अबीर सो पूजन होत हे॥ ताको भाव य
ह हैं॥ श्री स्वांमिनीजी सो श्री ठाकुरजी को ब्याह हैं॥ सो सषीजन क
रत हैं॥ ताते गारी ब्याह की साखा चार भावात्मक श्रुति की रीति चातु
तरू पाक हे न हैं॥ कुंज मंडप सोई ब्याह को मंडप गांठ दोऊन की
लीलनाजी हैं॥ ब्याह में होम अगारी सो होरी की पूजा जताये॥ सो
अग्नि पूर रम्ग पुरुषोत्तम को ब्याह जांनि कें आरो मध्य में प्रगट
होत हैं॥ सो या भाव ते सगरी रात्र कुंज में खेले॥ ताते मानो खे
ल कहत हैं॥ पाछे दूसरे दिन से डोल सो उत्सव नलीला हैं श्री
र महाभावनाजो परिवा दोज नोके और बमांनजी श्री ठाकुर
जी को स्योनोक रत हें॥ अब ही ब्याह प्रसिद्ध नांही भयो॥ परंतु
मन में श्री स्वांमिनीजी को वर श्री ठाकुरजी को सोनो करत हे॥ अ
ब ही ब्याह प्रसिद्ध नांही भयो निश्चय करि राख्यो हे॥ ताते भाव
करि कें अपने जमाई जांनि के घर बुलाय नाना प्रकार की सांमि
ग्री आरोगावत हें॥ गुलाल अबीर छिरकि के तिलक आरती
भेट करि ने दलय में॥ पाछे प्रभु पधारत हें॥ यह भाव नांकरतो
अब बा होरी के दिन रषभांनजी की रतजी अपने भावा सके

संबंधी जसोदाजी श्रीनंदरायजी को जांनिके श्रीठाकुरजी के होरी षे
लन की सांमिग्री गुलाल अबीर केसर चोवा पिचकारी तथा आ
भूषण वस्त्र सषीन के हाथ नवकडी रकरि साजि कें अपने कबा
जे सहित ब्रषभांनरावके द्वार ध्वनि करत जब नंदालय में पठावत हें। सो
आय सो दाजी हू रूप रआय। सषीन सहित प्रीति पूर्व कपध
रावत हें। सो नंदालय में होरी खेले हें। ब्रषभांनरा की चनाळ
रत हें। बरसाने ने नंदगांम ब्रषभांनजी को पोहिं न आयो। इ
त्यादिक भाव विचारनो। अथ बाय ही भाव सो यसोदाजी श्रीभ
वन में पधारि बिचारति त्य करत हें। जो मेरे पुत्र की सगाई कीर
तिजी की बेटी सों होई। यह भाव जांनि साड़ी कें लहगा चोली हु
री के दिन काजर बेंदी सिंदूर आभूषण आरुआ पनें कप कार के उ
लाल अबीर नाना प्रकार की सांमिग्री में वामि हाई सषीन सहि
त अपने कवाजें त्र ब्रषभांनरावके द्वार ध्वनिकरत जात बृषभांनजी के
घर में पठावत हें। सो नव समाज सहित वृषभांन पुरा में आवत
हे। सो नव श्रीकीरतजी सषीन सहित नद्वार पर आय भाव पू
र्वक अपने घर में आई कें सब मिलि के होरी खेलत हे। तहां श्री
नंदरायजी के व्रासरन को अपने कभांति सो छिरकत हे और न
चावत हे। सो पापद को भाव विचारनों। नंदगांम को पांड़े रज
बरसाने आयो। इत्यादिक भावना के अनेक प्रकार हें। यह
होरी हास्यरूप सरूप है। सो ताको भाव यह हें। जो बाल्यो बर
राम्यम सबन के छूटि गये। बाल बृद्ध श्री वेश्य शुद्र स्त्री हत्स
चारा श्रत्न संन्यासी ब्रह्मचारी न पेसवरी जती मुनी। स्वामी पं
डित सब के सोंनन को हर लीयो। ताते ब्रज की होरी सर्वोपर
हे। भावात्मक रहस्य लीला रसिकजन हें। सो तिन की बोध
नहें। ताते ब्रज चोरासी कोस में कांम रूप ऋतु युक्त लीला रससा

स्त्र में चोरासी आसन हें। याभाव ते ब्रज सगरो रसरूप हें। ताते देव
ता आदि पाय ब्रज की रज के करिण का को वांछना करत हें। सो ऊश्री
आचार्यजी की श्रीगुसांईजी की कृपा बिना ब्रजलीला को अनुभ
व रसको सो न होय। और होरी में अनेक स्वांग कांमकामिनी
डिंगवर जोगी के स्वांग बनावत हें। सो ऊ भावात्मक लीला हें। कब
हू श्रीठाकुरजी बनत हें। कबहू सषान को बनावत हें। कबहू श्री
स्वामिनीजी को सषी बनत हें। लीला दोऊन के मिलाय सिद्ध क
रत आरसी। तथा होरी में राख उड़ावत हें। तामें यह हें जो लौ
किक जोगी नी अग्नि उछारत हें। भयानक स्वरूप कुंजन में
क्रीड़ा करे। ताते प्रति बंध रूप मर्यादा गोपगृह जनन को भ
यानक रूप अग्नि दिखाय रसको गोपन करावत हें। रस्या
दि रास में मसाल रूप हें। अनेक भावना नाप्रकारके हें। इ
ति श्री हरिरायजी कृत बसंत होरी की भावना संपूर्णम्॥१॥



श्रीकृष्णाय नमः॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः॥ अथ डो
लउत्सव की भावना लिष्यते॥ सो डोल में दोय प्रकार के भाव
हे। एक श्री नंदरायजी एक श्री यसोदाजी अपने वात्सल्य
भाव सो अपने पुत्र को डोल झुलावत हें। और एक निकुंज
में तहां आदि श्री वृंदावन श्री गोवर्द्धन की तरहटी में। सो तहां
सदाई बसंत रितु होय रही हें। सुंदर रतनाभिरराज ने ठ रत हें
अस्त नह ते उत्तम जल सो तलमधुर ताकरि लताद्रुम बेलीष्ठ

नेकवनसवहरित पुष्पफलसंयुक्त भावकरिकेंधरती॥ सोइनके
अपनेमतजोभगवांनहे॥ तिनकोनमस्कारकरतहें॥ यहव्रज
श्रीवृंदावन श्रीगोवर्द्धन श्रीयमुनाजी श्रीगोकुलसंबंधीजेवस्तु
हें॥ सोतिनसवनकेंभोक्ताप्रभुहीहो॥ तुमारेजोसहे॥ सर्वपदा
र्थहे॥ अतिअलौकिकपदार्थहे॥ तातेतुमारेपुष्पफलको
आइकेसदाअंगीकारकरतहे॥ सोयहहमारोवडोभाग्यहें परं
तुहमारीदेहकेसर्वांगको अंगीकारकरो॥ तवश्रीठाकुरजीश्री
वृंदावनश्रीगोवर्द्धनकोअभिप्रायतेश्रीडोलउत्सवकेमिसक
रिकेंसवनकोअंगीकारकीये॥ काहेते वृक्षादिकवनस्पतीहेसो
परमभगवदीसवठोरकेहें॥ ताहूमेंवेगिरराजकेहें॥ सोपुष्टिमा
रगीयभगवदीयहें॥ केवलश्रीपुरुषोत्तमकीलीलासंबंधी
तातेपुरुषोत्तमकोयहक्रमहें॥ भक्तमनोर्थपूरकाय नमः सो
अैसेमनोर्थभगवदीयकोजांनिगोवर्द्धनकेऊपरश्रीगोवर्द्धन
धरडोलकोउत्सवकरतहें॥ सोतहांयहआसंकाहोइ॥ जोभ
गवदीयहोइकेश्रीठाकुरजीसोकछुमनोर्थकीप्रार्थनाक
रेनांही॥ अपनेसुखकेलीयेश्रीपूरणपुरुषोत्तमसोप्रा
र्थनाकरे॥ सोमुख्यपुष्टिमारगीयभगवदीयनांही॥ जोतु
मयहांकहे॥ जोश्रीवृंदावनश्रीगिरराजकेंभगवदीयवृक्ष
नेअपुसर्वांगअंगीकारकरिकेंलीये॥ श्रीपूरणपुरुषो
त्तमतेप्रार्थनाकीये॥ यहमुख्यमारगमेंकेसेसंभवे॥ यहसं
देहहोय तहांकहेतहे॥ जोव्रजभक्त हे॥ तथाव्रजसंबंधी
वृक्षादिकभगवदीयहें॥ सोप्रार्थनाअपनेसुखार्थनांहीक
रतहें॥ सोकाहेते॥ जोयेपीजनश्रीपूरणपुरुषोत्तमयाकोनां
नाप्रकारकीसांमग्रीआभूषणवस्त्रअनेकप्रकारकेवीन
तीप्रार्थनाकरिकेअंगीकारकरावतहें॥ सोकेवलप्रभुकेसुख

अपनेसुखकेअर्थनांही॥ तेसेईव्रजकेश्रीवृंदावनकेश्रीगोकुलके
केगिरराजकेवृक्षादिकहें॥ सोपुष्टिमारगीयनमेंभगवदीयन
मेहें॥ श्रीपूर्णपुरुषोत्तमकीलीलानानारसकोवृक्षकरतहसे
हे॥ उद्दीपनभावक्रीड़ारसमेंसंवंधीहें॥ होयप्रकारकी
लीलाव्रजमेहें॥ उद्दीपनभावहसरोआलंवनभावतामेर
सक्रीड़ामेजिननोउद्दीपनभावविशिष्टनितनईनईरचनो
होइ॥ सोत्यो आलंवनक्रीडाकोरसकीपुष्टिहोय॥ त्योत्योआ
लंवनक्रीड़ाकीरसकीपुष्टिहोय॥ जेसेरोयरसतें हास्यरस
विहाररसहास्यरसतेविहाररसकीवृद्धिहोय॥ विहाररस
सोलज्याकीवृद्धिहोइ॥ तातेउद्दीपनकेभावकेअर्थव्रजके
वृक्षनकेमनोर्थश्रीपूरणपुरुषोत्तमकेंअभिप्रायपूर्वक
सगरेव्रजभक्तनकोअभिप्रायपूर्वकमनोर्थपूरणकीये
तातेश्रीपूरणपुरुषोत्तमप्रसंनहोयडोलउत्सवश्रीगिर
राजपेकीये॥ तहांयहसंदेहहोयजोश्रीगोकुलमेंधांमतेती
लाहें॥ सोडोलकोउत्सवकेसेसंभवें॥ किसोरलीलामेंप्रसिद्ध
हीहे॥ तातेडोलकीरचनामेंनोकेवलरहस्यलीलाहें॥ जहां
जोमेंश्रीवलदेवजीसषागोपनकोनिकटसंभवेनांही॥ ताते
श्रीगोकुलमेंडोलकोप्रभावकेसेसंभवें॥ औरश्रीगिरराज
मेंकोनप्रकारहें॥ यहसंदेहहोय तहांकहेतहें॥ जोडोलकीली
लाहे॥ सोपरमरहस्यहें॥ जेसेंहिंडोराहूमेंश्रीवलदेवजीसषा
गोपनसोंछिपायकेंकहे॥ सोतहांश्रीगोकुलमेंधाप्रकारहें
श्रीयसोदाजीअपनेमनोर्थकेवात्सल्यरससोंडोलरचनाअ
पनेघरमेंभीतरजहांकाऊकीगम्यनांहीहें॥ सोसोरहहजारअ
ग्निकुमारिकाहें॥ तिनसोंसिद्धिकरहें॥ तथाव्रजसंवंधीश्री
स्वांमिनीजीश्रीचंद्रावलीजीललिताप्रभृतिइनहकेमुग्धभाव

देखिके श्रीयसोदाजीनें कही॥ जो तुंम हूं मिलिकें डोलकी रचनां
करो॥ ऐसो खेल करो॥ जो होरी को खेल वसीदिन पाछें आवेगो
सो मेरे पुत्र को होरी की लीला सो मन न भरि जाय॥ तब कुमारिका
श्रीस्वामिनीजी श्रीचंद्रावलीजी ललिता प्रभृति सब बोहोत प्र
संन होय मनमें कही॥ जो नित्य रँगरीके खेलमें गोप सषा उत
जनके आगे हमारो मनोरथ पूरण होत नांही हें॥ सो आजव
डोलानमई॥ सो श्रीयसोदाजीके मनमें एकांत रनोलि वेकी
आई॥ सो तानें आज हमारो पूरण होइगो॥ तब व्रजकी सम क
स्वांमिनी कुमारिका ललिता विसाखा प्रभृति सब सांमिग्री
सिद्धि करिकें लाके खंभ आब कोडार माधुरी कील ता अनेक
वृक्ष पत्र आदि॥ और अनेक फूल फल सुंदर नंदालयमें कुंज
केर बनाकरें॥ तब श्रीयसोदाजी बड़े बड़े मुनिन सों महूर्त पूछे
सो उतराफाल्गुनीके नक्षत्रमें डोल ठहरायो॥ तातें याको आस
यय है॥ जो उत्तरा षाढ़ नें कहे॥ जो फागुण उत्सव॥ चैत्रको
आगम लग्यो॥ और सगरे फाल्गुण को फल रूप यह उत्स
व है॥ उतराने फाल्गुणी कहत हे॥ और रास में बसंत ऋतु
होयम हीना कहे हें॥ जो फागुन चैत्र सुदी फागुनमें द्वै पन्द्र
नेक खेल उदीपन रहस्य विनोदी॥ और चैत्रमें आलंबन कुं
जरचनां॥ तातें फूलमंडली पुष्पिमा रंग में होत हें॥ सो या भावतें
जो उतरा नक्षत्र को डोल अंगीकार कीए॥ सो नंदालयमें हि
डोरना होरी षो नंद आवास॥ हरि को डोल देषि व्रजवासी फू
ले॥ यह नंदालय को डोल सो मुग्धभाव सो श्रीयसोदाजी
श्रीठाकुरजीको अपने बालक जांन॥ और स्वांमिनीजीको हृ
कुमारिका बालक जांनि डोल झुलावत है॥ तथा बालभाव सों
श्रीठाकुरजी हठ करिके मुग्धभाव सों कहत हें॥ जो हे मैया में

इन व्रजवासीनकी बेटीके संग डोल झूलुंगो॥ और मेरे खेलोंगो॥ तब श्री
यसोदाजी अपने मुग्ध बालक जांनि मनमें प्रसंन होयकें डोल
स्वरूप को सिंगार करिकें डोल उत्सव की रचना करत हें॥ तहां
गोपभार्या श्रीचंद्रावलीजी ललितादिक सषी हैं॥ सो अपने अ
पने गहने सिंगार करि श्रीयसोदाजीके घर आइकें प्रार्थना कर
त हें॥ जो हे श्रीयसोदाजी तुम अपने पुत्र को दर्सन करावो॥ त
ब श्रीयसोदाजी व्रजभक्तनको निरखारस नेहकर जांन सब
पर प्रसंन होय अपने पुत्र को व्रजभक्तनको सोंपत हें॥ जो हे
ललितां तुम मेरे पुत्र को डोल आदि झुलायकें नानाप्रकारकी
सांमिग्री आरोगायकें रक्षा कीजो॥ सो या प्रकार सगरे व्रजभ
क्तनको मनोरथ सिद्ध होत हें॥ सो अपने अपने गहने अनेक प्रका
रकी सांमिग्री लावत हे॥ सो श्रीयसोदाजीको सांमिग्री मिलायत
वस्त्र आदिको खबर करावत हें॥ अथ वासो रहहजार कुमारि
का हें॥ सो तिनमें मुष्य भक्त हें॥ सो तिनमें श्रीस्वामिनीजी को आ
वेस हें॥ तातें इनह को नाम श्रीराधाजी और मुष्य सहचरी
श्रीस्वांमिनीजीको हे॥ सो इनके हृदय में बेठिकें श्रीस्वांमिनी
जी सर्व पदार्थ को भोग करत हे॥ जो जेसे मथुरा के स्वरूप के
स्वरूप के भीतर व्रजभक्तन को भावात्मक स्वरूप हें॥ सो
मथुरा के रसात्मक स्वरूप के भीतर होइ॥ सर्व भोग व्रजभ
क्तनकी सांमिग्री करत हें॥ और दुष्टकंस संबंधी रास
नको मारन आदि अनेक मर्यादा संयुक्त लीला सर्व मथु
रा संबंधी स्वरूप द्वारकास्वरूप अंग मर्यादा लीला कर
त हें॥ यह भाव विचारनों॥ तातें नंदालय अग्नि कुमारिका
को खो होत हे॥ आछी भांति राषत हें॥ तेसेई प्रीति सहित कु
मारिका श्रीठाकुरजीकी रक्षा करत हें॥ कहे तें॥ ये कुमारि

कासर्वभगवद्रसामग्रीहे ॥ तातेश्रीनंदरायजीगोइदेसपूर्वतेसोर
हहजारकुमारिकाकंन्यानकोतारेहे ॥ सोकहीजोकेसराजाकोहे
केप्रसंनराषेगेसोवेतोसगरीभगवद्भोग्यसांमग्रीहे ॥ तातेश्री
नंदरायजीकेगृहविषेरहिगई ॥ औरनित्यविहारश्रीठाकुर
जीकुमारिकानसोंहोतहे ॥ सोयहरहस्यलीलाकोज्ञानश्रीनं
दरायजीश्रीयसोदाजीकोनांहीहे ॥ सोकाहेते जोवात्सल्यर
समेमग्नहें ॥ तातेकुमारिकाश्रीठाकुरजीकेसंगउत्सवउत्सवलतन
हे ॥ तातेराजभोगसाहितचारभोगऔरचारिखेलसोकह्यो
स्वांमिनीनकेमनोरथते ॥ जोनित्यलीलामेतोकोटानकोट
भोग ॥ औरअनेकस्वांमिनीनकेअनेकभावसोश्रीठाकुर
जीअरोगतहें ॥ ताकोपारनाहीं ॥ सोतातेश्रीआचार्यजीमहाप्र
भूनकेपुष्टिमार्गमेसर्वसेवाव्रजभक्तनकेभावकीहे ता
तेपुष्टिमार्गकहेतहे ॥ सोतांमेकोटानकोटस्वांमिनीजूथ
पतिव्रजमेतिनमेचारिजूथपतिमुख्यहें ॥ सोचारयोकेभाव
तेसबरीतउत्सवकीप्रगटकीरी ॥ सोयामेव्रजकीसबस्वांमि
नीनकोभावसिद्धहे ॥ तातेराजभोगसाहितचारिभोगऔर
चारिखेलचारयोकेभावतेहोतहें ॥ सोयाप्रकारगोकुलको
डोलसोतोस्वरूपनकोनंदालयमेहे ॥ अथवा इसरीभावयहहें
जोश्रीठाकुरजीहोरीकीरात्रश्रीस्वांमिनीजीसोहोरीखेलिकें
परस्परवसमपरे ॥ सोदेहानुसंधानुभूलिगये ॥ तातेभोरभ
येश्रीयसोदाजीश्रीठाकुरजीकोमुषचुंबनकरिकेपूछे ॥ तब
श्रीठाकुरजीकहे ॥ जोमैयाजीहोरीयहीप्रकारनिकसी ॥ तब
श्रीयसोदाजीश्रीनंदरायजीसोकहे ॥ जोपुत्रहोरीमेबावरो
भयोहे ॥ सोअबकहाकरीये ॥ सोतबललितादिश्रीस्वांमि
नीजीसोपूछे ॥ तबयहविचारकीयो ॥ तबरनमेहोरीकोषेल

करिइनकोमनबाहेरनिकासिये ॥ सोतबडोलउत्सवकोआरंभसो
डोलपरपधारारे ॥ तातेअभ्यंगभावसोनांहीहें ॥ जोप्रभुनकोगृ
हकीतोसुधिनांही ॥ तातेअभ्यंगकेसो ॥ तबप्रथमखेलमेथोरो
सोचितठिकांनेआयो ॥ सोतबश्रीयसोदाजीकहे ॥ जोऔरकछु
आरोगोतोफेरिखिलावें ॥ सोयाप्रकारतीनबारखिलायेसोतो
अबबारआरोगायकेकहे ॥ जोअबआछीभांतिआरोगेतोमे
खेलखिलावें ॥ तबबडेभोगकोसर्वभक्तनकेमनोरथसहितआरो
गाये ॥ सोचारिखेलकीरे ॥ ऐसोहोरीमेकहुंनांहीभयोहें ॥ सोत
बश्रीठाकुरजीबोहोतप्रसंनभये ॥ सोश्रीयसोदाजीअपनेपु
त्रकोप्रसंनदेषिसबनकोमेवामिठाईवस्त्रआभूषणदेकेवि
दाकीये ॥ पाछेआरतीन्योछावरकीये पाछेअपनेनित्यके
मंदिरमेपधरायस्नांनकरायदोहरोशृंगारकीये ॥ ब्राह्म
णनकोबुलाइकेयहकहे ॥ जोअबीरगुलालधोयकेसबस्वच्छ
करो ॥ कहुंमेरोपुत्रदेखेगोतोहोरीकीसांमग्रीकोफेरिहठ
करेगो ॥ तातेअनेकयतननसोयाकोआछोकीयोहें ॥ सोयहभा
वहे ॥ सोअपनेमनमेविचारनो ॥ औरश्रीगोवर्द्धननाथजी
कोडोलमुख्यहे ॥ काहेते ॥ जोरहस्यलीलाकोपात्रइहांसदांअष्ट
प्रहरहें ॥ श्रीस्वांमिनीजीकेसंगसगरीलीलाकरतहें ॥ सोतहां
श्रीस्वांमिनीजीकोकुमारिकाकोसंबंधयाप्रकारसोहोतहेजो
श्रीयसोदाजीअनेकप्रकारकीसांमग्रीसिद्धिकरिकेंअप
नेपुत्रअर्थकुमारिकाकोदेपठावतहें ॥ जोसगरसगरमेतोतन
वस्तुपठावे ॥ औरकुमारिकासबलेकेवृंदावनश्रीगोवर्द्धनप
रआइकेंप्रभुनकोश्रीस्वांमिनीजीसंगअंगीकारकरत
हें ॥ याप्रकारकुमारिकाहूअनेकप्रकारकीरहस्यलीलाश्री
वेसघनमेकरतहें ॥ औरश्रीचंद्रावलीजीअनेकप्रकार

अगोरसवेचनफूलवीननमिसकरिकेयाहीप्रकारश्रीस्वामिनीजी
गिरिराजपरआइकेंश्रीजीकेसंगनित्यलीलाविहारकरतहें।और
रात्रकोसदांविहारादिकलीलाश्रीगिरराजपरकरतहें॥सोया
प्रकारसोंश्रीवृंदावनमेलीलापुष्टिहे॥औरश्रीयमुनाजीवोर
सोकोसनांईसर्वोपरिकांनेसबकेआपकहे॥जहांजेसोकार्यहोय
सोतहांतेसोईलीलासंबंधीरूपविराजतहें॥इनकोंऐसेंरायनां
हीहें॥जोसदांश्रीठाकुरजीकेनिकटहीरहतहे॥तातेंश्रीवृंदा
वनमेंहुराजभोगसहिततथारमोगचारिखेलकीरीतिहे सोसग
रेव्रजमेंदोयस्थलमुख्यहें॥औरयहऐसेंरंगहे॥सोश्रीवृंदावन
श्रीगोकुल॥नहांकोईअप्रसंकाकरे॥जोव्रजतोसबहीभगवद
स्वरूपहें॥औरदोयस्थलतेंममुख्यकयोकहें॥तहांकहतहेजो
व्रजतोसबहीउत्तिमश्रेष्टहें॥तामेश्रीवृंदावनश्रीगोकुलश्री
गोवर्द्धनमुख्यहे॥ताकोप्रमांणकहेतहे॥वृंदावनेगोकुलेवान
याममनासिकाचित॥इतिवचनात॥रसलहनमहश्वयोंवृंदाव
नगतिप्रिय इतिवचनात॥वृंदावनेचारुवहहदनेमनोरथप्र
रये सुरसुते॥इत्यादिकअनेकवचनहें॥जोश्रीवृंदालयकीली
लागोकुलनिकुंजलीला श्रीगोवर्द्धनश्रीवृंदावन॥तातेयहश्री
आचार्यजीमहाप्रभूनकोनांमहें॥गोवर्द्धनस्थित्युत्साह श्री
आचार्यजीमहाप्रभूनकेनांम॥श्रीगोकुलकनावासयहश्री
गुसांईजीकोनांम॥यातेदोयस्थलमुख्यहें॥जोश्रीयमुनाजी
केसंगतेंकुमारिकानेअंगीकारभयो॥सोकाहेतेजोकात्या
यनीदेवीकोमिसकरिकेंश्रीयमुनाजीकेसंगप्रजनकीये
सोतबहृदयमेभगवद्भावबढ्यो॥तातेंव्रजमेंश्रीयमुनाजी
बडीहे॥सोईमुख्यहें॥जोइनकेसंबंधइनकीकृपाबिनाकबहू
पुष्टिमार्गमेप्रवेशनहोय॥तातेंश्रीयमुनाजीकेतीरऊपर

पुलिनमेंडोलझूलतहें॥सोश्रीयमुनाजीकेभावतेंमुख्यहेजोस
गरेव्रजभक्तपुलिनमेडोलबांधतहें॥श्रीस्वांमिनीजीआदिस
वभक्तप्रभूनतें॥आपनेआपनेमनोरथपूरणकरतहें॥काहेतेंजो
श्रीयमुनाजीहें॥सोअलौकिकदेहसिद्धिकरताहे॥नतुनवत्व
मेतावतानदृहत्वेमनमारानि॥इतिवचनात॥तातेंश्रीयमुनाजी
कोडोलमुख्यहें॥औरश्रीगिरराजकेसंबंधतेंभीलनीपुलिंदी
कोहूभगवद्भक्तिउत्पन्नभई॥काहेते॥जोनिकुंजमेंश्रीस्वांमिनी
जीसाहितलीलाकरतहें॥सोतालीलासंबंधीकुमकुमाअपर
गजाश्रीठाकुरजीकेचरणकमलकोप्रसादीगुजमाल ––पात्र
नमेंलागिरह्योहें॥सोभावपूर्वकअपनेरतननमेंमुखमेंलगा
इकेंअपनोविरहतापनिवारणकरतहें॥जोपुलिंदीकोश्री
ठाकुरजीकेचरणकमलकोकुंमकुंमद्वारासगरीलीलाकोअ
नुभवभयो॥सोपरमआनंदभयो॥उनकोमनप्रभूनकीसेवा
मेंलग्यो॥तातेंसुंदरसुंदरकंदमूलफलउवरामेंसिद्धिकरि
केद्वारिनेधरतहें॥सोव्रजभक्तनसहितप्रभूआरोगिकेंपुलिंदी
कोश्रीगिरराजकेसंबंधतेंपुष्टिलीलारसकोदानकरयोकर
हेते॥जोयहश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनकेमारगमेंश्रीगोकुल
औरगोवर्द्धनपरबतपरअतिमुख्यहें॥सोसगरेव्रजमेंहुडोलउ
त्सवकोप्रकारप्रसिद्धहे॥काहेते॥जोसगरेव्रजमेंश्रीठाकुरजी
विहारलीलासंबंधिनीस्वांमिनीजीहें॥सोअनेकगोपनकेघरसें
प्रगटीहें॥जोकोईकोव्याहहूभयोहे॥औरकोईकुमारीहें॥सोराजिनके
व्याहभएहे॥तिनकेपतिहूजेसेअन्यओरनहोई॥सोखेतमेबीजबोवे
तोउपजतनांहीहें॥सोयाप्रकारसोंनांममात्रश्रीठाकुरजीकेपर
क्रियाभावसोरससमस्तमेमुख्यकहेहे॥सोऊलीलाकरतहेंताके
अर्थव्रजभक्तनकोव्याहभयोहे॥जोजितनेव्रजभक्तहे॥सोसबअग

तहांभोगसांमग्रीहें॥ जोमहाअलौकिकअग्निरूपकोईइनकीओरदृष्टि
कीयो। औरभस्मभयो॥ तहांकोईकहे॥ जोसंदेहहोय॥ जोतुमभगवद
भोग्यकहे॥ गोपीनकोसंकानाहीहे॥ जोउनकेपुत्रादिकवरननकी
रो॥ केसेबने॥ यहसंदेहहोय॥ तहांश्रीआचार्यजी त्रुतीयस्कंध
सुबोधनीजीमेंकहेहें॥ भमरगीतादिकनेकाठिकानेव्रजभक्तन
कोपुत्रादिकहे॥ सोलौकिकविषयकरिवेकेनांहीहें॥ जोश्रीठाकु
रजीकेघरांक्रियारसप्रगटकरिवेकीरचनाभई॥ सोनवगोप
नसोव्याहमायाकरिकेभयो॥ बिनाविषयमायामेंपुत्रादिक
हूप्रगटकीए॥ यामेंसंदेहनकरनो॥ काहेते॥ जोभगवदइच्छा
तेमायाकोहूसांमर्थहे॥ जोकोटानकोटब्रह्मांडएकदिनमेंप्र
गटकीयोचाहें॥ जोश्रीदेवकीजीकोगर्भआकर्षणकरिकेरोहि
णीकेउदरमेंधरयो॥ सोश्रीबलदेवजीप्रगटे॥ जोएकजोगीजो
गसाधिकेअनेकदेहीमेंवेहिजांनतहें॥ सोप्रभुनकीलीलाकोपार
नपावे॥ जोकर्तुंअकर्तुंसर्वसांमर्थ॥ तातेयाप्रकारआक्षेप
रससिद्धिकरणार्थव्रजभक्तनकेपुत्रादिकहे॥ औररासहूतेन
करिकेदेखीयेतोवेदकीरचनासर्वव्रजभक्तहे॥ तातेश्रुतिरू
पाइनकोकहेतहें॥ सोतामेंदोयप्रकारकीश्रुतिरूपाजोएकपु
ष्टिश्रुतिएकमर्यादाश्रुति सोदोउव्रजमेंप्रगटी तांमेपुष्टिश्रु
तिकहेतहें॥ जोसर्वव्रजभक्तश्रीठाकुरजीकेभोगयुकहें॥ सो
तिनसोनित्यनौतनरासविलासलीलाहें॥ औरमर्यादाश्रुति
व्रजमेंप्रगटी॥ सोतिनसोश्रीबलदेवजीरासलीलाकरतहे।
सोयाप्रकारव्रजभक्तनकोस्वरूपमहाअलौकिकजांनियेसो
व्रजभक्तअनेकगोपनकेअर्थप्रगटहोइकेंश्रीठाकुरजीमेंम
नलगायो॥ सोहोरीमेंतोभलीभांतिसोंअनेकप्रकारकीली
लारहस्यकरी॥ सोतांमेंव्रजभक्तनकोपरोमनोर्थभयोनहीं

सगरेग्वालगोपगुरुजनकेआगे॥ सोतेंहालयामेंकुमारिकासे
गकरिरचनासबदेषिकेंश्रीठाकुरजीकेसंगनानाप्रकारकी
लीलाकरिकेंसगरेव्रजभक्तननेअपनेअपनेमनमेंयहमनो
र्थकीयो॥ जोअपनेनिकुंजमेंडोलकीरचनाकरीयें॥ परंतुश्री
स्वांमिनीजीसहितश्रीठाकुरजीपधारेतोहमारोसगरोमनो
र्थपूररणहोय॥ सोयाप्रकारसगरेव्रजभक्तनकोमनोर्थप्र
भुजांनि श्रीस्वांमिनीजीसहितप्रभुप्रसंनहोयकेंसगरेव्रजभ
क्तनसोकहे॥ जोतुमजाइकेंअपनेअपनेनिकुंजमेंडोलरचना
करो॥ तुम्हारोमनोर्थपूररणकरेंगे॥ यहसुनिकेसगरेव्रजभक्त
निकुंजवीथीमेंडोलबांधे॥ सोसगरीहोरीकेसाजासिद्धिकरि
केंप्रभुकोपधरायवेकोस्मरणकरतहें॥ तवश्रीस्वांमिनीजी
सहितप्रभुसगरेव्रजभक्तश्रीठाकुरजीउनकेनिकुंजमेंअनेक
रूपकरिपधारे॥ सोसबनकेमनोर्थपूररणकीए॥ सोसर्वकी
सांमिग्रीअंगीकारअनेकप्रकारकेविहाररीतिरमणकीएके
वहप्रकारभावनाकरीये॥ अथवायहभावविचारिये जोश्री
स्वांमिनीजीआदिश्रीचंद्रावलीजीआदिसबअपनेनिकुंजमें
डोलरचनाकीए॥ सोप्रभुनेश्रीस्वांमिनीजीकेनिकुंजमेंप
धारे॥ सोसबनकेमनोर्थपूररणकीए॥ सोसगरीस्वांमिनीअप
नेमनमेंयहजांने॥ जोश्रीठाकुरजीहमारेपासहें॥ सोअसेसब
व्रजभक्तनकोहोतभयो॥ सोयहभावविचारनो॥ जोडोलको
भावअनंतगोप्यहें निकुंजलीलाहे॥ तातेइननेमारगडोलप
रलतामाधुरीभावकीडार॥ आसपासपत्रवकेलासोनि
कुंजकोभावहें॥ फूलफललगेहे डोलकेगादीकेरत्नसिंघा
सन॥ डारीश्रीयमुनाजीरूपचारभोगचारिखेलहें॥ सोप्रात
प्रथमखेलश्रीस्वांमिनीजीहें॥ दूसरोखेलश्रीयमुनाजीकोहें

कहू न्यारी खेलत हैं कहू श्री स्वांमिनी जी सो मिलि खेलत हैं ॥ ताते तीन हे ॥ दूसरो खेल कुमारिका को हैं ॥ तीसरो खेल श्रुति रूपा श्री चंद्रावलीजी को हें ॥ सो सगरे व्रज की स्वांमिनी को हें ॥ ताते भारी खेल हें ॥ डोल दे तहे ॥ सो रमणादिक हें ॥ बीच बीच मे भोग हें ॥ सो अनु पांन रमणा में आसमर्पण होय ॥ खेल सो रस की वृद्धि होई उही पान होइ श्री स्वांमिनी जी के तीन रूप व्रज मे मुख्य हें ॥ विहार रस में प्रगटी हें ॥ कुमारिका कुच मर्दन कीये ॥ तहा ते प्रगटी हें ॥ ताते ये प्रगटी हें ॥ श्री यमुना जी श्रम तें प्रगटी हें ॥ सो ताने तीन्यो न को विहार दीहें ॥ श्री यमुना जी श्रम तें प्रगटी हें ॥ सो ताते तीन्यो न को विहार कीयो हें ॥ अन्यभाव ते डोल को खेल हें ॥ राग ॥ सारंग ॥ झूलत डोल राधिका संग ॥ गोवर्द्धन पर्वत के ऊपर खेलत अति रस रंग ॥ इजो ॥१॥ प्रथम खेल राधे मन हुलस्यो केसर लपटन अंग ॥ तीजो खेल की पोल खेल्यो वृंदावन अबीर गुलाल छूरंग ॥२॥ तीजो खेल कीयो वृंदावन पी लितादिक अग्नि कुमारी संग ॥ बोथे खेल कीयो वृंदावन पी य मोहे रसिक अनंग ॥३॥ सो यह भाव हें ॥ तीन खेल व्रज भक्त न को रीति रमणा ॥ एक खेल प्रभु को विपरीत रमण डोल के दिन वसंत पंचमी को शृंगार सो याते ॥ जो जेसे कांम को चंद्रावन उतारन रस रीतिमे हे ॥ सो ताभाव तें हें ॥ और डोल उत्सव मे कांजी मुख्य हें ॥ सो ताको भाव यह हें ॥ जो उर्द के बड़ा चंद्रमा आकार श्री चंद्राव ली जी को भाव श्री स्वांमिनी जी तिन के भाव मे हें ॥ घर पके भरे रूप ॥ तामे मिरच आदिक जो नमक वसनी कुमारिका ये तीन्यो मिले कें ॥ तिन मे जल श्री यमुना जी तिन के भाव मे मग्न भये ॥ कांजीनो डोल उत्सव श्री स्वांमिनी जी श्री यमुना जी के ऊपर एकांत मे हें जो जेसे पवित्रा जन्माष्टमी श्री गोकुल की मुख्य हें ॥ तेसेई डोल उत्सव श्री यमुना जी के उपकंठ वास्यो द्रुह नवीन पुलिन मे याते जो रहस्य लीला को आनंद और के मन होई ॥ ताते जल कांजी मे विसेस

सेस करीये ॥ श्री यमुना जी के मनोरथ को डोल उत्सव हें ॥ और कांजी की सांमिग्री हें ॥ और डोल झूले ॥ पीत गुलाल के केसरि के छांटे सब वाही घड़ी धोय डारे ॥ सो सगरे व्रजभक्तन के मनोरथ वास्ते श्री यूथपति स्वांमिनी न की सोतिन सब न के संग रीत विपरीत विहार रस वस गरी होरी के रसनि चोइ गूढ भाव हें अनिर्वचनीय हें ॥ यह लीला करें ॥ ताते यह लीला मे श्री बलदेव जी सखा ग्वाल सब न सो गोप्य हें ॥ ताते डोल झूले पाछे श्री स्वांमिनी जी ने थापा दीये ॥ जो हरी संबंधी सांमिग्री सगरी गोप्य करि देऊ ॥ रंच कहू ऊपर न होय यह सब सखी मिलि के श्री दामा आदिक कुंदस सखा श्री ठाकुर जी के हंसी हूय ॥ और पुष्टि लीला के सहाय करन कों पीमिलि कें गुलाल के सरस रंग जो चोवा के हाजत सब धोय के सु कांय डोल की सांमिग्री केल के खंभ माधुरी की डार ॥ पासा पालव की डार वंदनमाला सब श्री यमुना जी अपने भीतर धारि लीये ॥ ताते श्री यमुना जी मे पधारत हें ॥ इत्यादिक डोल उत्सव के अपने कभाव हें ॥ कछुक कहे हें ॥ जो श्री आचार्य जी महाप्रभु श्री गुसांई जी की कृपा ते हृदय मे भाव दृढ होत हे ॥ अथ दुतीया पाट को भाव ना लिष्यते ॥ जो हे रीलोत या यह भाव श्री ठाकुर जी वस्त्र स्वेत पहरत हें ॥ जो मेरो न करिहत हो ॥ निरविकार स्वच्छ उज्वल हो ॥ सो व भक्त अपने भाव करि के श्री ठाकुर जी को भली भांति सिंगार करत हें ॥ याभाति नित्य भक्तन के भाव सो होरी खेले ॥ तो हू सर्वात्म गुणमय श्री ठाकुर जी लीला न करे ॥ तब श्री स्वांमिनी जी सगरे व्रजभक्त डोल उत्सव की लीला करि एक सो खेल छाय रहे ॥ रोम रोम रस प्रगट करि श्री ठाकुर जी को अनुभव करा रहे ॥ जो श्री ठाकुर जी व्रजभक्त सगरी स्वांमिनी जी के वस होइ कें परिश्रम न करि रहित भये ॥ तऊ सर्वात्म भाव पूर्वक तन मन प्राण सब गुणमय होय रस पर वस भये ॥ तब श्री स्वांमि

नीजीद्रुतीयापाटकोउत्सवकीऐ॥जोआजहमारोमनोर्थपूरणभयो
जोहृदयरूपघरनथांसिंघासनपरसवीत्मभावकरिशुंनमयमग्न
भऐ॥तातेउत्सवमांनिअभ्यंगकराईये॥ऊनहरीजरीजड़ाऊकु
लेह॥अपनेनिकुंजमहलमेरात्रीतिलक श्रीठाकुरजीकोकीऐ
ताहीतेद्रुतीयापाटतेफूलमंडली प्रारंभयामारगमेप्रगटेहें॥ताते
प्रथमगुलाबकेफूलनकीहोई॥सोश्रीस्वांमिनीजीकेअधरकेर
पोलननेप्रगटेहें॥गुल्मावतीतेपाछेपीतहे॥सोश्रीस्वांमिनीजी
कोस्वरूपदूसरोकुमारिकाकोहें॥राधासहचरीतिनकेहें॥निका
रोश्रीचंद्रावलीजीकेभावते॥श्रीयमुनाजीतोसवमेप्रविष्ट हें
औरचंपामोतीयाआदिहेभाववरननकरतहें॥चंपामानसमय
श्रीस्वांमिनीजीकेअंगरूपपीयावासोसिंगारसमयकोअंग
स्वरूपकेफूलआदिश्रीयमुनाजीकेअंगरूप॥पीतचमेलीश्रीस्वां
मिनीजीकेकुच॥स्वेतचमेलीश्रीचंद्रावलीजीकेकुचनेमोलश्रीस्वां
मिनीजीकीवेसरि॥कुंदकलीश्रीस्वांमिनीजीकेदंतमोतिया
कुमारिकाकेदंत॥गुलाबपासपीतलालस्वेतगुलाबीचारोके
भावते॥कमललक्ष्मीरूपश्रीस्वांमिनीजीरमतरजकीयातेय
हअत्यंतप्रीयहें॥जलसोश्रीस्वांमिनीजीकेअंगकेगंधरूपर
त्यादिकभावसोसोनजुहीकनेरिकेतकीसेवतीसदांसुहम्याग
नपाडरमाधुरीआदिसबफूलनकीमंडलीद्वारारजमकन
कोअंगीकारकरतहें॥सोवैसाखसुदी२तांईफूलमंडलीहोई
बसंतहोरीमेउद्दीपनभाववोहोतहें॥आलंबनभावबीच
बीचहीहोय॥औरफूलमंडलीसोचैत्रवदी२सोवैसाखसुदी
२तांई॥आलंबनभाव॥सोरअनभोगपाछेनेउत्थापनसंध्या
आरतीपर्यंत॥औरअखतीजपाछेसेनकोबगलाहोईसबीन
केमनोर्थनेसोमंगलातांईरात्रकीलीलाअनुभवअर्थमंगला
कोदरसनकीऐ॥अखतीजपाछेफूलनकेगहनेभांतिभांतिके
होई॥सोसिज्यामंदिरमेसिज्याकेपासरहें॥फूलमंडलीमेसां
मग्रीगुलाबीसोकीड़ापाछेअधरामृतपानरूपचास्योजु
थपतिकेभावते॥पाछेसेनकोसागमाचोपरकीसखीनसों
केभावकीनथांसहचरीआदिकेभावते॥यामावनेसगरेह
जभक्त॥श्रीस्वांमिनीजीअपनोअपनीकुंजमेंनिमश्रीस्वां
मिनीजीसाहितपधरायकेंअनेकप्रकारकेरसरूपमनो
र्थकरतहें॥औरफूलमंडलीकोभावयहहे॥जोकोईभक्तके
अंगतेफूलकोसुगंधआवतहें॥कोईकेअंगतेमिवारेकी
कोईकेअंगतेचमेलीकीकोईकेअंगतेबोलसरीकीकोईके
अंगतेकदंबकीइत्यादिकफूलभक्तनकोधरें॥तोभक्तउ
नभक्तनकोमिलायजानिकेवोहोतप्रसंनहोतहें॥तातेफूल
मंडलीकोभाववोहोतगोप्यहें॥सगरेफूलभक्तरूपहें ता
तेभावपोलिकेनांहीकहें॥जोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुश्री
गुसांईजीकीकृपातेरसिकजनकोहृदयमेंस्फुरनहोयगो
इतिश्रीहरिरायजीकृतद्रुतीयापाटनथांफूलमंडलीकीभा
वनासंपूर्णम्॥ अथचैत्रसुदी१नयेसंवत्सरकोभाव
वरसदिनकीकुशललक्ष्मीनंदरायजीमांनतहें॥तातेनीमकी
उरधरतहें॥आरोग्यार्थ॥वोहोतसीतनहोय तोखुलेबं
दकोबागादिनआठतांईधरें॥संवत्सरकेदिनताजछपेह
री॥चैत्रकेमहीनामेगुड़रोगकेलीऐनधरीये॥औरव्रजभक्त
नकेभावमेयहहे॥जोहोरीकेमिसकरिप्याहभयो॥पाछेद्रु
तीयापाटकोगोनोभयो॥पाछेफूलमंडलीकेमिसविहार
भयोसोविरहसांतिभई॥तातेखुलेबंदकेबागाकेमिस
करिकेश्रीअंगकोहृदयकोदरसनकराईयहजताऐजोरह्

सदांरहो ॥ नीबकीडार जोऽव प्रतिबंधरूप रोग कबहू न होयगो ॥ क
श्रीस्वांमिनी राजभोगमें मोतीकी आरती ॥ चैत्रसुदी ॥ ९ ॥ रामनो
मीको उत्सव ॥ सो श्रीरामचंद्रजी हारस्या बतारहें ॥ तथां दंडकाररय
मेरूषीनको पुररागुरुषोत्तमकेऽपा वेसते वरहां न दीसे ॥ ताकरि
गुरुरूपभरते ॥ ताते कुमारिका यह उत्सव जन्माष्टमीवत् मानतहें
तातेवडेघरमे प्रभुको पंचाम्रतस्नानकरम्प ॥ पाछे श्रृंगार होतहें
आभ्यंगया उत्सवकोसे पुरीश्ररतहें ॥ रामनोमी प्रभ्रति रतनानु
भगवदमार्गकर्तव्या इति श्रीनंदरायजीकेभावते ॥ पंचाम्रत
स्नान श्रीसालिगरामजीको राजभोग पाछे करतहें ॥ कोरीहर
दीकोचोक पुरिधराम धरि पंचाम्रतको साजधरि संकल्प करी
यें ॥ भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य श्रीरामचंद्रप्रादुर्भावोत्सवंक
र्तुंतदंगत्वेन पंचाम्रतस्नानं करिष्ये ॥ पाछे प्रभु पास पधराय
पीतांबर उढाय दोऊ ठोर माला पहराय तिलक करीये बसेन
खिलाईये ॥ श्रृंगार जन्माष्टमीको होई ॥ तीनबछ दाऽप्रादिकछ
सांमिग्नी तिलकी पाछे भोगमें ढेंदीसकर पारा दहीभातमि
श्रीखंडको पना फलाहर सिंघासनपर घुराने पे रखाधरेऊ
परघुरानोपे रखविचे मावधे ॥ सिज्यामंदिरमे दुलीचा पाटते
पेखाधरें ॥ दुईकुमारिकासकर पारा श्रुतिरूपा दही शुमितरु
पाभातकुमारिका ॥ पान श्रीस्वांमिनीजी धरोकी आरतीसें
धासनकी मंडली वैसाखसुदी ॥ २ ॥ तांई सौय्यामंडली तथांसा
गामग्रीकी मंडली स्नानयात्राके पहलेदिन तांई फूलनके
आभूषण हिंडोरातांई ॥ चंदनअकुरीपना जन्माष्टमीकेप
हलेदिनतांई ॥ रथयात्राते अंकुरी फुहारा छिरकावर
थयात्राके पहलेदिनलों ॥ परातमे जलविजे दसमीके पहू
लेदिनलों ॥ तहांतांई सिज्यामंदिरको पंखा सिंघासनकोपंतगोरे

वारोलो ॥ चैत्रसुदी ॥ १० ॥ अथ श्रीजमुनाजीको उत्सव लोवडेघरमें
राजभोगमें तथां गोपीवल्लभमें सो सामिग्री ॥ अथ मेषसंक्रांतिको
भाव ॥ मेषसंक्रांति पुन्यकाल होइ तो श्रृंगार तथा राजभोगमें सतु
वा आरोगे ॥ संध्यासमय होय तो सेनमें सतुवाके लाडू ॥ औरघोस्यो
सतुवा चना मुष्यके भाव ॥ जवगेहूं श्रुतिरूपाके भावते ॥ घोस्योस
तुवा श्रीमहारानीजीके भावते ॥ शूराकुमारिकाध्रत सवनकोसे
हे ॥ लाडू कुचरूप घोस्यो ॥ अधरामृत सतुवानो हीआरोगे ॥ तहांलो
श्रीनंदरायजी तथा श्रुतिरूपा कुमारिका कछ लेतनांही ॥ आरो
गारे पाछे लेतहें ॥ औररस नतिन्पकी रीति ॥ पूर्व कुशलकेलीये हां
नकरतहें ॥ वैसाखवदी ॥ ११ ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकोउ
त्सव ॥ सो ताको भाव यह हें ॥ एकादसा इंद्रीयसो धिकाहरिवास
र माधवमहीना वसंतरितु कृष्णपक्ष ॥ श्रीस्वांमिनीजीको पक्ष
सकोपक्ष हृदयास्थित नारसको होइ राकडा होई ॥ सोइहलोस्म
करूप जुगलस्वरूपकेभावते वसंतरितु भोगीहें ॥ तातेजुग
लस्वरूपको भोगप्रीयहें ॥ अभ्यंग जन्माष्टमीको श्रृंगार राजभो
गमें सेव छाछके बडा धोईदार तीनकूटा मीठो रपाक जलेवी बुंदी
सकरपारा सेवके लाडू मेवातीयंकुसिखरन बडीवासोदी विलसा
रु श्रीपादुकाजीकोदत्तनो न्यारो भोग श्रीपादुकाजीके आगेकोरी
हरदीकोचोक तापर दूधके कटोरा मे गुडके दूंक तिलडारि भोग
धरनो ॥ थारीमे मोतीकी आरती प्रभुनको दोवडा धारी तिलककरि
दोय मुठीया वारि प्रथम प्रभुनकी आरती पाछे दोय मुठीयावारि
श्रीपादुकाजीकी आरती ॥ पादुकाजी नहाय तो प्रभुनको वारिमु
ठीया वारि आरती इस रोदिन उही श्रृंगार रहे ॥ कहूं श्रीपादुकाजी
को द्रधसो स्नान श्रीस्वांमिनीजीके भावते कदूं दरस ननांही ॥ ता
हीते श्रीगोवर्द्धनधर वैसाखवदी ॥ ११ ॥ को प्रगट भये ॥ श्रुतिरूपा

कोवरदांन हूवै सारववदी ॥ १९ ॥ ताते श्रीआचार्यजी सव अवतारन
ते वड़े है ॥ जु ह्यावतारमे पंडितमात्र है ॥ रामावतारमे पंडितवेदमा
गमें परिचय ॥ कपिलावतारमे पंडितन परिचय ॥ और वेदकी क्रि
याहू कतो ॥ व्यासावतारमे पंडितवेदमे परिचय ओ ईश्वर
तारादिक जो हरिमार्गमे परिचय ॥ परंतु व्रजपतिकी लीलामे रति
नांही ॥ श्रीआचार्यजीमे पंडित वेदमाजानन वारे वेदक्रियाहू
कतो हरिमार्ग अवतार सगरेमें परिचय केवल व्रजपतिके भा
वमे रति ॥ यह सवै परन कोई आगे भयो न कहे ॥ ताते सेवा श्रीआ
चार्यजीके वचनामृतनके अनुसार ही करनी ॥ ताते मुख्य वैस्नवसो
ई हैं ॥ सो उपिमारगमे के श्रीपुरसोत्तमकी भक्ति करें आसा
वतीरकी करेत ऊवाधक हैं ॥ तोलछोटके मुक्ति होय ॥ सो ऊमुक्ति
पुरसोत्तमकी नांही ॥ जो अंतरगट हगताको भई ॥ सो नाहके
येभनन होय ॥ सो अगुरनको दीनी सो ईमिले नाते अवतारादिकन
केस्वरूपनि रूपाकरन अर्थ श्रीपुरसोत्तमने श्रीआचार्य
जीको प्रगट कराये ॥ तव सारस्वतकल्पकी रसमय पलीला रस
मय श्रीकृस्नतिनकी भक्तिकों तिनको प्रकार सकीये ॥ श्रुति
रूपा कुमारिकाके अर्थ वत्साके महीनाके नीनादिन नामक
ल्प हैं ॥ तामे द्वादसो कल्प ॥ १२ हैं ॥ सो सारस्वत है ॥ सो ताहीमे
श्री पुरसोत्तमको प्रागट्य है ॥ सो श्रीभागवतकी लीला
सारस्वतकल्पके अनुसार है ॥ ताते पुरसोत्तमकी ली
लारस दोई संयोग वियोगात्मक सो दोऊको हांन श्रीआचार्यजी
दोऊ मंत्र प्रगट कीये ॥ नाम अष्टाक्षरताके जपते संयोगरस
होई ॥ पंचाक्षरके जपते विप्रयोग रस अनुभव होई ॥ या प्रका
र श्रीआचार्यजी प्रगटे श्रीठाकुरजीको तापात्मक वीप्रयोग
त्मक भावात्मक मुखारविंदमे साक्षात रसरूप अग्नि तारूप

श्रीआचार्यजी प्रगटे ॥ पंचाध्याईमे मुख्य सोक है हैं ॥ स साधुकर्मो
वुधा प्रसपिवतत्र मुखरूप मगत्मभरे ॥ पंचाध्याई मे मुखारविंदमे
रसहूतो ॥ सो वेणुमे करिके सगरे व्रजभक्तनको प्राप्तभयो ॥ सो रसरू
प श्रीआचार्यजी हैं वेणुरूप श्रीगुसांईजी हैं ॥ वेणुमे सात छिद्र
याते श्रीआचार्यजीके मुखारविंदमें रंध्र सात हैं ॥ द्वै नेत्र द्वै करण
द्वै नासिका के मुख ताते सात वालक प्रगटे ॥ अनेक तोंन तरंग
रूप सगरे वालक अपवाद जमें इंद्रको पासमय श्रीठाकुरजी
गिरराज उठाये ॥ तव अपने निजभक्तनको स्वरूपानंदको
अनुभव कराये ॥ तासमय गिरधरन स्वरूप श्रीगुसांईजी हैं ॥ सा
तदिवस लोरसदांन कराये ॥ ताते सातदिनके आनंद रसरूपसा
त वालक हैं ॥ सो सातवालक अपने २ भावसो अपने घरके वे
स्नवनको रसदांन करावत हैं ॥ तथा पंचाध्याईमे प्रभु प्रगटे
हैं ॥ तव व्रजभक्तनके सात भावभरे ॥ कदाचित करांउ जैसो
रहजाम्य हैं ॥ जलिनामुदाकर पकरे सुहृद सात्विक ॥ १ ॥ काचिद
द्वादमेसे चंदन रूपिनमत्र कोभुजीसुगंधरूप अनेक कंधे
परन भई सुहृद राजस ॥ २ ॥ काचिदंजलिनामृहानचीनाभीषें
सीं तांबूल चर्वितको इच्छधिनतांबूललीये ॥ राजस ॥ सात्विक ए
काचिद्दाधीकमलं सनप्रास्तनयोरधात ॥ प्रभुके चरणारविंदन
परधारितन तापमिटाये ॥ राजस तामस एकाभ्रकुटी वाबध
प्रेमसरंभविह्वला ॥ घ्नतीवेक्षतकटाक्षै ये सदष्टदसनछदा
एकाभ्रकुटी बांधि टेटीकरि प्रेममें विह्वल ह्वै नेत्रके कटाक्ष
लावत है ॥ हमको छोड़िके पधारे ॥ तामसो पमसुहृद तामस ५
अपरानी मिसदगेप्या ॥ जुषमातन्मरेवाबुजं ॥ आपीतमपि
नातप्यत संतस्वचरनयथा दोऊ नेत्रनते मुखारविंदको रस
पांन एकटक ह्वै तृप्त न होत भई ॥ तवचरणपकरत भई सात्व

कनामस॥६॥काचिनेवरंधनुहदिसान्यानिमित्तवां॥पुलकाएपए
ख्यालयोगीवानंदसंयलानेत्रकेरंध्रद्वारासर्वांगसुंदरनाहद
यमेंराषिनेत्रमूंदनभईयहानिर्गुरा॥७॥यहसातभावकेसा
नहीवालकाकिमाउमंदिरकेंसोपालकहे॥कमलचोकरज
रूप॥जगमोहनरमराजीतासिज्यामंदिरश्रीस्वामिनीजी
कोनिकुंज॥निजमंदिरश्रुतिरूपाकोनिकुंजमंदिरश्रीयमुना
जीकोनिकुंजनहांते=ग्रोरसवमार्गमारि कोठाकुमारिकाको
निकुंज॥इत्यादिकभावतेयहसृष्टिमारगहे॥सातधंत्यारिषी
जेप्रसिद्धमात्रचरराबुलाये॥परंतुमुषमेंसरस्वतारूपाक
हेतहे॥यहधर्मसातमेधर्मीरूपसातोवालककेरसकोपान
कीजे॥कुमारिकाकोरसश्रीस्वामिनीजीकोरसश्रुतिरूपा
कोरसहेहैसंयोगावियोगश्रीयमुनाजीकोसंयोगएकर
स॥नाकेगमिलिकेंसातोरसपीजे॥अथवापंचाध्याईमेसा
नभावभएसोरसपीजे॥अथवागोवर्द्धनधरेनवसातदि
नलोसातप्रकारकेरसदानकीये॥सोसातोरसपीजे॥अथ
वागोविंदस्वामीअंतरंगिनीसषीहें॥सोश्रीगोवर्द्धनधर
सोप्रार्थनाकरतहें॥सातवालकनकेरसकोपानकीजेइ
त्यादिकअनेकभावहें॥श्रीस्वामिनीजीश्रीवृषभानजीके
घरहें॥श्रीठाकुरजीश्रीनंदरायजीकेघरहें॥सोउनकेनापनि
वारराअर्पश्रीचंद्रावलीमनोर्थकीये॥अपनेघरनथांश्री
स्वामिनीजीकेघरआई॥तवश्रीस्वामिनीजीकहेकछुउपा
यकीजे॥सोनवकीराणिजीश्रीवृषभानजीसोकहे॥नंदराय
कीपरकरसाहितअपातोकरो॥तवचैत्रवैसाषनथांआस्वन
कार्तिकयहदोयमहीनासरदइहदोयमहीनावसंतरतमें
फूलवोहोतहोतहें॥रसरूपरितुहें॥उहवसंतकीरासरहसर

दकीरास॥तातेमुकटवोहोतधरतहें॥सोनवश्रीनंदराय
जीकोन्योतोकीयो॥हारपरपीरेअप्रसनधरे॥चामरश्रुतिरू
पापीरेरंगश्रीस्वामिनीजीकोभाव॥सोनाकेअर्थयहव
सीकररागहेमंत्ररूपचावरदेषिकेंसबनकेमनफिरे॥जोवृष
भानजीकेघरजैये॥ ॥अथषष्टपतभोगकीरीतिलिष्यते॥
चोकी॥१॥श्रीयसोदाजीकेवेठिवेकीगादीधरिऊपरलहगा
अतलसकोनांमेलालनथांपीरीडोरीहोइ॥केसरीसाड़ी
चुनिकेधरीये॥चोलीकेसरीतथांलाललधरीयें॥अनवट
वीछीयापगपांनजुइघंटिकाहारपदिकवंठश्रीदुलरी
टेटी चोटीवाजूबंदकंकरणपोहोंची॥गजराररलचोकमेंद
रीनथसारसीटीकीकाजरासिंदूरमहावर सिंगारकरि
फूलकीमालापहराईये॥नमस्कारकरिवसंतखिलाईये
केसरिचोवागुलालअवीर॥हरदीकोपांनीसुगंधसहित
केसूकेफूलनीकोरसतासोखिलाइसमाधिनसोसमधो
रोहोतहे॥श्रीयसोदाजीकीगोदमेंप्रभुदक्षराएगाअपोर
श्रीस्वामिनीजीवांमभागपधराएस्वरूपप्रसिद्धिनहोइ
तो॥ननीयाकेसरीपागअोढनीमालापहराईसेचोलीश्यां
मसाडीकेसरी॥छोटीपागधरीअभूषणधरें॥मंदिरमेंद
क्षराएसिपधरायभोगआवें॥एकचोकीपरयाहीरीत
रोहिणीजीकोसिंगारकरिवसंतषिलाइश्रीवलदेवजी
दक्षराएसिननीयापागओढनीधरिभोगआवे॥श्रीय
सोदाजीकेदक्षराएसिविराजे॥चोकी॥२॥श्रीयमुनाजीकोसा
डी॥केसरीचोलीश्यामलहंगालालमालापहरायवसंत
खिलाइहरदीखेले॥पाछेभोगश्रीयसोदाजीकेवांमभा
गमेंअपलीलासारभक्तसगरेश्रीमहारानीजीमेआरोगेदेइ

चोकीपरसाड़ी चोलीधरे श्रुतिरूपाकुमारिकाके भावते॥ वसंतविला
यहरदीखेले॥ पाछेभावसोपनवाड़ेमे भोग आवे॥ पाछेमंदिरकीति
वारीपरलंबोविछोनाविछाय लोकरामे भोग आवे वसंतहर
दीखेले॥ पाछेसंतथियाहरदीकोकरोये॥ सबठोरचपटीपापा
रधरें॥ पकवांनरवीरिसाखादिकफलादिकमेवामिठाईपना
वासादी जितनीवनिआवे॥ छपनभांतिघाटिनकरे॥ दोयघ
ड़ीपाछे आचमनमुषवस्त्रबीड़ी आरोगाईये॥ श्रीयसोदाजी
कीचोकीआगे मोतीनकीआरतीकीरैतिजीकरे॥ पुष्टीपावारि
केपाछे मंदिरकीतिवारीमें दक्षरागादिस श्रीनंदरायजीकी
चोकी॥ गादीपरधोतीकेसरीकोरकीपागजरीकेसरीउपरना
तथांकेसरीकोरहोई॥ मालापहरायसुगंधलगावे॥ वसंतथि
लाइहरदीषेले॥ पाछेवृषभानजीकीचोकीपरदोऊठिका
नेभोगआवें॥ सगरेगोपनकोतिवारीमेविछायत औरगा
मकेगोपनकोचोकमेविछायत॥ तहांवसंतहरदीखेलि
केपनवारापरभोगआवे॥ नथाटोकरारूधरे चोकीमेपनवा
रालोकरामेभोगधरि दोयघड़ीपाछे आचमनमुषवस्त्रबी
ड़ाधरिपाछेंपहरावनीहोय॥ सोयाभांतिसाड़ी॥१००॥उपर
ना॥१००॥करतहें॥ सोसेनगनकोदेतहे बीड़ा॥५००॥नामे१००
तिवारीमे॥४००॥चोकमें॥ पाछेसैयासिद्धि करनी॥ मंदिरमे
सैया॥३॥विछावनी॥ सिंघासनतेदक्षरागादिस याभांति॥ श्रीय
सोदाजीकीश्रीरोहिणीजीकी॥ श्रीयमुनाजीकीये तीन्योपास
विछें॥ तीन्योठोरभोगधरीये॥ सैया॥१॥सिज्यामंदिरतहांतिन्य
छविदेतहें॥ सोतहांसबसाजनयोकरनो॥ सोनापरश्रीठाकु
रजी श्रीस्वांमिनीजीसिज्याभोगमालाबीड़ाचोपड़ हारपर
टेरासिंघासनकेवांमभागएकसिज्या श्रीयमुनाजीकीत

हांसिज्याभोगटेरकोई देषेनांही॥ एकराककीसिज्याकोई देखे
नहीं॥ ताकेपासदोऊसिज्या श्रुतिरूपाकुमारिकाकीहे॥ राजभ
हकोसोकर्यतोयनोकरेनांही तो श्रीयमुनाजीकीदोरसिज्या
मेआयगई॥ मंदिरकीतिवारीमेश्रीनंदरायजीकीसिज्याद
क्षरागादिस श्रीवृषभांनजीकीसिज्यावांमादिसकीरातिजी
सहितएकविछें॥ सिज्याभोगमालाबीड़ासोऊ न्यायपनसम
पनिकासिये॥ चोकीआगेसेनभोगआवें॥ यहांएकदिनउह
भावकीसूचनकोंउहांश्रीवृषभांनजीचास्योकेभावतेदिन
धपाहुनेराषतहें॥ नंदरायजीआवेतववृषभांनजीकरेवृषभां
नजीआवेतवश्रीनंदरायजीकरे॥ भोजनसमयगारीगावें ति
नलीलाबारेकोउ कुंजमेरमरतहें॥ नंदरायजीजांनेपुत्रघी
मसोदाजीपासमोतेरहें॥ याहीप्रकारगायचराबनजांनहे
नवश्रीगिरराजकीकंदरामे सांकरीखोरगहवरवननेमेसं
केतमेपोढतहें॥ सोतहांललितानंदविसाखाचंद्रभगारयामा
भामा॥ कुश्रमा॥ तुलसी॥ माधवी॥ श्रीस्वांमिनीजी श्रीचंद्रावली
जी॥ पाछेसेनआरतीन्योछावरविदाहोयश्रीनंदरायजीकोर
श्रीठाकुरजी श्रीबलदेवजीकोसुषमाहें॥ नरसमेदोयवारयह
उत्सवआरवानीमपहलेचैत्रवैसाषमे॥ दूसरेदिवारीपहले
आस्वनकार्तिकवसंतमेव्याहहोरीकोहे॥ सरदरितुमेगोनो
हें॥ व्याहकेभावसोभोजनगोनाकेभावसोभोजन॥ पाछेनिकुंज
मेश्रीचंद्रावलीजीपधारायेहें॥ युगलस्वरूपकोअपनेर
निकुंजमेपधराय भक्तअपनोगोनोकरतहें॥ माटीकेपात्र
श्रीयमुनाजीमेजायतहांसेहोतलावमेजाय॥ पारसकेपा
त्रश्रीयमुनाजीहे॥ वैसाखवदी॥३॥ अथ आपावानीजकी
भावना॥ नादिनअभ्यंगनरसेपछोड़ा॥ बीचमेगरमीपड़ेजोरा

मनोमीपाछेउरानेपिछोरा धारिके सरीकोरकी स्वेतकुलह पिछो
डा स्वेत केसरी कोरकी साड़ी चोलो अंगराग जो लालन जीको केसरी
कोरकी कुलह और नीराजभोगमेसे वछा छिके बड़ा मीठो स्यांक
नीनकू दोचोकी पर नयो पंखा चंदन धरि आधिवासन करीये
भगवत श्रीगुरु वो नमस्य वंदन ले पनार्थ चंदन स्याधि वास
नकरिख्या ॥ महकरि जल अपक्षन छोड़िये ॥ धूपदीप जलसों स
बोदिक करि ॥ ग्रा की कटोरी भोग धरीये ॥ आरती घंटाव जाइके
रीये ॥ डालरि घंटा वाजत चंदन धरें ॥ एक गोली हृदय पर होय
गोली हस्तन पर ॥ सो इगोली चरण पर याभांति पहरायन रूपं
रकीजे ॥ होय पंखा गादी पर पाछे धरे कुंजा हस रावदे सासिंघा
सन के कुंजा कर खासिज्या मे भोग धरीये ॥ आधिदैविक गोप
मारि नु आई ॥ श्री स्वांमिनीजी के संगम मे प्रेम की लहरि उठी ॥ सो
इस रे स्वरूप को जांन भयो विरह प्रगट भयो ॥ सो तवविरह
ताप निवारण करणार्थ लघी जननें उपाय कीयो ॥ चंदनघ
सि कपड़ा मे वांधि गोली करीयें ॥ श्री स्वांमिनीजी विराजत होइ
तो दोइ गोली चरणारविंद पर एक हृदय मे धरीये ऊपर य
ह भाव श्री यसोदाजी वात्सल्य रस मे भावसो चंदन पहराव
त हैं ॥ गोपी जन रितु जांनिके दही भात पना पंखा करत हैं उस
कालमे तानी ध की आरती ॥ सीतकाल मे वो होत वाकी की आ
रती ॥ उस कालमे वाहिर सग रे विरह प्रगट भये ॥ तब कहा
नवे ॥ उन को प्रभु को सीतल करनो पड्यो ॥ सीत काल मे भीत
र विरह वो होत हैं ॥ सो जनाय वे के लीये भी वो इन वातो प्रगट
करि प्रभु पर वारत हैं ॥ आभरण मोतीके सीतकाल याते जो
श्री स्वांमिनीजी के विरह मे मोतीजरि के चुनाकी नाई मरये ना
ते मोती पहरि सीतलकीये ॥ प्रभु के हृदय मे गोली चंदन कीयो

स्वांमिनीजी रूप वांम हस्त पर श्रीयमुनाजी रक्षण हस्त पर श्री
चंद्रावलीजी वांम चरण पर कुमारिका दक्षिण भावते दक्षण च
रण पर समस्त भक्त की स्वांमिनी श्री स्वांमिनीजी के चरण पर
दोइ गोली श्रुति रूपा कुमारिका चरण पर जो विरह व सहेई
अवधि हारी सरण हैं ॥ हृदय मे प्रभु विराजे या भावते चंदन पे
स गोली धरीयें ॥ पांच प्रांण की पंच तत्व की सीतल तार हाइ
प होत हैं ॥ छोटे पंखा दंड कार स्यभाव सो अंचल कर त हैं उं
डी पंखा की भक्तन के हस्त हैं ॥ लाल हरे पीत स्यांम रंग सो ढूरी
पहरे हैं ॥ बड़े पंखा डालर दार श्रुति रूपा श्री चंद्रावलीजी हैं
आपनो अंचल करत हे ॥ जालीदार नामें अबरक पंना चमक
त हैं ॥ सो श्रीयमुनाजी के भावते हैं ॥ खजूर के वांस के ताड़ के गो
ल चोखूटे सगरी स्वांमिनी तलितादिक सखी के भावते सिंघा
सन पर होय पंखा हैं ॥ सो श्रुति रूपा दक्षिन कुमारिका वांम
युगल स्वरूप को अंचल करत हैं ॥ ऊपर को खिचेमा पंखा श्री
यमुनाजी की लहरि रूप सबन को सीतल करत हैं ॥ उस व
के भोग सो रमणपा छेअ प्रतुमांत हैं ॥ दही भात जो राखो सो श्रु
ति रूपा के भावते ॥ पनाम स्त्री को श्री स्वांमिनीजी के भाव ते
खांड को श्रुति रूपा के भावते ॥ मिरच हे ॥ सो सीत कारहें ॥ तांम
सी को इलाइची सोत कार सात्व की को कपूर सीत कार राजसी
को आचमन श्रुति रूपा को अधर रस मुख वस्त्र श्री स्वांमिनी
जी के अंचल बीड़ा ॥ ४ ॥ वास्यो के चार्वित तांबुल आरती मोती
की हृदय रूप ॥ सो नादिन ने मांटी के कुंजा कर वाध रत हैं ॥ श्रु
ति रूपा को मनोर्थ चंदन सिंघासन तासिज्या पास अंगराग जा
की कटोरी धरत हैं ॥ दो ऊ समय चंदन श्रुति रूपा के सरश्री स्वां
मिनीजी रंच के चोवा डारत हैं ॥ श्रीयमुनाजी रंचक कस्तूरी सो

ऊश्रीयमुनाजीअगरकुमारिकावरासश्रीअंगकोसुगंधतथाश्री
हास्यरूप ॥ गुलाबजलभक्तनकोश्रमजलउ ॥ याप्रकारसोभक्तन
कोअंगरागप्रभुलेपनकरि विरहकोसीतलसीतलताकरत
हें ॥ एकादिनचंदनकेकठलेकटिपर्यंतवोहोतगरमीहोइतवप
हरे ॥ प्रभुविरहसोदेहानुसंधानआलेश्रीस्वांमिनीजीअंगते
वेष्टितहोईश्रीस्वांमिनीजीरूपप्रभुभयो ॥ उत्थापनसमेदे
ऊपनाभीजीहारिफलादिकाविहारपाछेंअनुपानवर्षाईरव
र्य सरदवीर्य हेमंतजसशिशिरश्रीवसंतऋतुन ग्रीषमवैराग्
य छहरिनुषहधर्मउराकोहोइस्वरूपअंगीकारकरतहे ॥ अ
खत्रीजकोविरहकेभरोसेगिरराजसोनिकरिमंदिरमेबर
सानेसन्मुखप्रभुविराजे ॥ केसरकर्वामादिसकोरश्रीस्वांमिनी
जीकेभावते ॥ आगेरोठोराहसरागभोगकेभावसोहें ॥ याप्रका
रअखतीजकोभावहें ॥ वैसाखसुदी ॥ १४ ॥ नृसिंहचतुर्दसीको
भावनां ॥ तादिनअभ्यंगकेसरीकोरकीकुल्हे ॥ पिछोरालाल
जरीकोकेसरीकोरकीकुलही ॥ ओटनीअपरगजाईराजभो
गमें ॥ सेवतीनकूटाछाछकेवडामीठेरपाकपाछेभोगके
समयपंचामृतसिंहकरिकोरीहरदीकोचोकपुरितापरप
रातधरिसंकल्पकरीये ॥ भगवतः ॥ श्रीउरुषोत्तमस्यश्री
नृसिंहप्रादुर्भावोत्सवकर्तुनदंगत्वेनपंचामृतस्नानक
रिष्ये ॥ जलअस्पर्सनछोड़िये पाछे ।नित्यकसालिग्रामजीको
करितुलसीधरारारविंदपरसमर्पि ॥ पंचामृतस्नानकराय
प्रभुपासवेठाईपीतांबरमालादोऊठोरपहरायदोइकोतिल
ककरीये ॥ वसंतखिलाईयेपाछेचोसनुवादहीभातमिश्रीको
परागफलादिकवंदीसकरपाराअपारतीमोतीकीरूपेकोदी
वडाधरिकरीये ॥ सेनभोगमेसंगउत्सवकोभोगआवे नृसिं

हजीकोसुभाअवतारहें ॥ नृसिंहजीप्रह्लादभक्तकोसर्वांगचा
टेप्रीतिसो ॥ तातेव्रजभक्तयहउत्सवप्रीतिमांनेहें ॥ जेसेप्रह्ला
दजीकेसकलदुःखदूरिकीये ॥ जेसेहमारेभवबंधरूपदुःख
कोदूरिकरि सर्वांगरमणकरिअंगीकारकरो ॥ तातेदहीभात
सिखरनभातसिखरनवड़ीश्रीयमुनाजीदहीभातरूपाभा
तकुमारिका श्रीगोवर्द्धनधरगिरिराजपधारे ॥ सोतिन्यासि
हाकेमनोरथनेहसरोराजभोग ॥ तिहरोषिरकावस्त्रानयात्रानांई
अप्रतिउत्सवकालविरहकोमरहें ॥ जेष्ठसुदी ॥ १० ॥ श्रीयमुनाजीकोउ
त्सव ॥ वरसदिनमेदसहरा ॥ २ ॥ जोचैत्रसुदी ॥ १० ॥ सोतांई जेष्ठसु
दी ॥ १० ॥ फाल्गुनसुदी ॥ १० ॥ तामेजेष्ठकोश्रीयमुनाजीकेभावसो
फाल्गुनकोदेवीहुलनदाराकुमारिकाश्रुतिरूपाको चैत्रकोस
बीजनकेभावते ॥ प्रभुकोअभ्यंगश्रृंगारकेसरीतथाअपरगजा
ईपागतथाकुलहपिछोरा ॥ एकचोकीपरगादीधरिश्रीयमुना
जीकेस्वरूपकीभावनांकरिदर्पनमेदधसोन्हवाइअंगवस्त्र
करिलहंगालालअतलसको तथा साड़ीकेसरीफूलकटीकी
काजरसिद्दरवेंनी ॥ आभूषणराजोवतिआवे ॥ तथाफूलकेआभ
रण ॥ पाछेगुलालकेसारिचोवाअबीरसोतिलककेप्रभुकोभो
गश्रीयमुनाजीकोन्यारोभोगधरीयें ॥ पाछेकेवडातीनकूंडामी
ठासाकसिखरनवड़ीपुरीसुहारीपीरीखेतदहीभातगुड़को
तवापूरी ॥ सेवकेलडुवारवाजादूधसाधानामठरीसीरापनामिश्र
श्रीकोराजभोगपाछेआरतीमोतीकीसिज्यामंदिरमेरहें ॥ मनो
रथकरेतोरात्रकोहू रहें ॥ नहीतोसेनआरतीपर्यंतरहें ॥ पाछेव
रभकुलकोवस्त्रआभूषणराहेईं ॥ तथाश्रीयमुनाजीमेपधरा
वे ॥ अथश्रीगंगाजीकोभाव ॥ भगीरथश्रीगंगाजीकोलाये
आगेआपपाछेगंगाहरहमसेंजान्हारे ॥ रषीतपस्याकरत

हते॥ सोकृष्णके क्रोधकरिपीगरो॥ पाछे इस्सराकोरागते वैसारवरूही
७ कोप्रवाहनिकस्यों वैसारवरूकृष्णसमप्याजानुगमाजान्हवी स्वयं
क्रोधानीन्या पुनरूपकाकरिवेधातुहस्सिरग॥ १ पाछेजेष्टसुदी
१०॥ प्रागमे श्रीयमुनाजीकोसंगमभयो॥ प्रथमवामजीके चरण
संबंधते इनको इतनो महात्म भयो॥ सोराजन दर्शनादेव ब्रह्म
हत्यापापहरनी॥ श्रीगंगाजी श्रीयमुनाजीको समागम॥ अब
श्रीयमुनाजीके संगमते उरारि पुष्टी कृष्णचंद्रकी प्रीयभावुका
भई॥ अष्टविधि ऐश्वर्य श्रीयमुनाजी श्रीगंगाजीको दांन करतभ
ई॥ तातेयह उत्तावमांनिये तोगंगाजीकी नाई भगवदीयत्वको दंभ
श्रीयमुनाजी प्रसंन होइके करें॥ तातेश्रीयमुनाजीको अंगारप्र
वस्य करीये॥ गंगाजीके कीर्तन गाईये॥ ऐसे श्रीयमुनाजीको
नमस्कार करत हें॥ यमुनायेनमः॥ प्रभुको नांम कृष्ण॥ श्रीयमु
नाजीको नांम कृष्णा यह प्रीया पटरानी हें॥ तातेकृष्णा कहेत हे
२॥ कृष्णसमप्येनमः॥ ३॥ कृष्णकेसमांन हे॥ जेसे कृष्ण कर्तुं अक
र्तुं अन्यथाकर्तुं सर्वसांमर्थ्य तेसेई श्रीयमुनाजी हें॥ षट्गुण
संयुक्तधर्म॥ ३॥ कृष्णरूपायेनमः॥ ४॥ कृष्ण इंश्यांम हे अंके अपने
रसाछिपायो॥ तेसेई श्रीयमुनाजी श्यांमस्वरूप हें॥ भीतर रसग
रीलीला निकुंजादिक हें॥ सो काऊ अभेदन दीतनांही॥ ४॥ कृष्ण रसा
त्मकायनमः॥ ५॥ जेसे कृष्ण रसात्मक हें॥ सोतेसे श्रीयमुनाजी
हू रसात्मक हें॥ नंदराजकुमारकी नांई॥ ५॥ कृष्णलीलाम नज
लायेनमः॥ ६॥ रजभक्तनसाहित रासादिक लीला करत हे।
सोतव श्रीयमुनाहाराभीतर रत्ने रसानिकसत हे॥ सोजलक्रीडा
केमिस सगरी लीला रसको अमृत जलमहाराजीजीमे हें या
भावते॥ जलपांन करे तो रसरूप फलरूप नौतन सरीर होय है
कृष्णसंबंधकारिरायेनमः॥ ७॥ श्रीयमुनाजीको भाव॥ श्रीयमुना

जीमेजोपदार्थ हे॥ सो प्रभु अर्थ हे॥ तातेजलपांन करीयें॥ कृष्णसंबंधक
राइ पाछे भावसो पाछे प्रसादी जलपीजे॥ तो श्रीयमुनाजी वेग प्रस
न होई॥ अथवा ब्रजमे जल हें॥ सो श्रीस्वांमिनीजी संबंधी हें॥ तिनते
सीवे कलमेबासांमग्री सब प्रभु संबंध कराइके लीजे॥ ७॥ कृष्णप्रि
यायेनमः॥ ८॥ कृष्णकी प्रीया हे॥ सर्वभक्त अग्रकुल कृष्णसुख्यर
स श्रीस्वांमिनीजी॥ संगमहर्षियेनमः॥ ९॥ श्रीकृष्णके सुख्य
रस श्रीस्वांमिनीजी अधरामृतनिनसो संगम हें॥ श्रीयमुना
जलमे सगरे भक्तनके और प्रभुके अधरामृत रस सो संगम हें
९॥ कृष्णक्रीडाश्रयायेनमः॥ १०॥ कृष्ण क्रीडा करत हे॥ सो श्रीयमु
नाजीके आश्रयते॥ जेसे पंचाध्याईमे कहे हें॥ जोगमाया मुपाश्रि
त॥ तेसेई श्रीयमुनाजी जलस्थलक्रीडा सांमिग्रीउद्दीपनभावकी
प्रगटकर्ती हे॥ तवप्रभु क्रीडा करत हें॥ ११॥ कृष्णपदवी प्रससिका
माय्येनमः॥ १२॥ कृष्णकी पदवीमे प्रापसि करावनो॥ भक्तको इजि
नकोकांम हें॥ श्रीयमुनाजीके आश्रयते प्रभु मिलें॥ तथांसगरे द
नभक्तनको मिलावत हें॥ कृष्णास्थितायेनमः॥ १२॥ श्रीयमुनाजीमे
कृष्णवास हृदयेनमः॥ १३॥ श्रीयमुनाजीके हृदयमे कृष्णवसत
हें॥ तातेश्रीयमुनाजी हृदयमें यहीरटत हें॥ जोसगरेभक्तन
के हृदयमें श्रीयमुनाजीको वसारे हें॥ १३॥ कृष्णकामकाम्यन
मः॥ १४॥ एककृष्णहीकी सेवा कांममे तन्मय रहें॥ तातेश्रीयमुना
जीके आश्रयते सगरो लौकिक वैदिक कांम छांडिके एक श्रीकृष्ण
ही सेवामे तन्मय रहो यजाय॥ ऐसे अलौकिक कांम सर्व्व क्रीडाजाहें
१४॥ कृष्णप्रियायेनमः॥ १५॥ कृष्णकी प्रीया जो श्रीस्वांमिनीजी आदि
श्रुतिरूपा कुमारिका सब ब्रजभक्त तिनहूंकी प्रीया जो श्रीस्वांमिनीजी
आदिश्रुतिरूपा कुमारिका सब ब्रजभक्त तिनहूंकी प्रीया श्रीयमु
नाजी हे सबनके सुख्यदाता श्रीयमुनाजी हें॥ १६॥ श्रीस्वांमिनीजी

आदि सगरे भक्तनमें संयोग वियोगादिक भाव है ॥ श्रीयमुनाजीमें स
हां संभोगस्थाईभाव एकरस अखंड लीला प्रभु विहार करत हैं भाव
को प्रकास करत हैं ॥ ताते पंचाध्याई में कहे हे ॥ प्रसादपुलिनमागत्य
कालिंद्याः कृष्णभावना ॥ इति ॥ १६ ॥ कृष्ण के मिलन को स्थान श्रीय
मुनाजी ॥ सो तातें यहां संदेह होय जो श्रीयमुनाजी तो कोई देसमें
हैं ॥ कहां श्रीआचार्यजी कहे हे ॥ विशुद्ध मधुरातट सकल गोप गोपी
हैं ने कृपा जो लीला संप्रानें ॥ कुंजमें तीन प्रकार सो श्रीयमुनाजी
हैं ॥ मधुरातट विश्रांति घाट स्थान जल पान ते सुद्ध होय जाय अ
नेक पाप प्रतिबंध रूप ते सकल गोप गोपी वरते ॥ श्रीठकुरानीघा
ट पर प्रभु गोप गोपीन आवत हैं मिले हैं ॥ तातें कहे ॥ श्रीगोकु
लके निकट वसत हो लहरिन की छबि आवे ॥ तातें यह ठकुरानी
घाट पर मिलन को स्थान हैं ॥ तातें भक्तजो प्रार्थना है जो तो श्रीगो
कुल संबंधी लीलाकें भाव सो ठकुरानी घाट के आश्रय ते प्रभु
न सो मिलाप होई ॥ १७ ॥ श्रीकृष्णमुख्यार्थिन्यै नमः ॥ १८ ॥ और दे
व पूजा न ते लौकिक वैदिक अर्थ प्राप्त हे प्रभु नाही ॥ और श्रीय
मुनाजी के पूजन ते मुख्य अर्थ फलरूप श्रीकृष्ण प्राप्ति होत हैं
या समान कोई पदार्थ नाही हें ॥ १८ ॥ कृष्ण गोपीसहचरी नमः ॥ १९
श्रीयमुनाजी श्रीकृष्ण की सखी हे ॥ और गोपीजन की स्वामि
नी कृष्ण सखी हें ॥ सो ऊ युगल स्वरूप की सेवा में सहचरी हें सग
रो कार्य कामादिक छुडावत हें ॥ स्वामिनी रूप आप हें ॥ तऊ सखी भा
वमें मग्न हें ॥ तातें सबन को प्रिय हें ॥ १९ ॥ कृष्णसन्मान वर्द्धिन्यै नमः
२० ॥ कृष्ण के सन्मान को बढावन वारी हें ॥ जा भक्त के मनमें स्कप्र
भु पर दोस होई ॥ ताको मिटाय भाव जो प्रीति को बढाव न वारी हें जा
भक्त के मनमें एक प्रभु पर रोष होइ ॥ ताको मिटाइ भाव जो प्रीति को
बढावन वारी हें ॥ श्रीयमुनाजी के आश्रय ते श्रीकृष्णकार्यपराय

नमः ॥ २१ ॥ श्रीकृष्ण को कार्य यह जो सदा भक्तन को सुख होई ॥ ऐसे
कार्यमें तत्पर होइ के व्रजभक्तन के मिलाप करावत हें ॥ निःसाधन
जीव हे तिनको श्रीठाकुरजी सो मिलावत हें ॥ सो वस्तु प्रभु विचार
नहें ॥ भक्तन को देवे को श्रीयमुनाजी देकें श्रीकृष्ण को प्रसन्न क
रत हें ॥ जितने कृष्ण के कारज हे ॥ सो सब श्रीयमुनाजी करत हें
भक्त के दुःख दूरि करत को दुःख को मारनो ॥ पाप प्रतिबंध रूप
निवर्तक नी हें ॥ कृष्णलीलास्थलविसोधिकायै नमः ॥ २२ ॥ कृष्ण
की लीला स्थल जो श्रीगोकुल गिरिराज वृंदावन तीर घाट ठौर
स्थल सुद्ध स्वलीला संबंधी सिद्धि करि ताके महां जहां श्रीकृष्ण
के लीला स्थल हें ॥ सो तहां तहां कुंड हें ॥ रूप हे रस आदि देके रज
में मिलि कें श्रीयमुनाजी विराजत हे ॥ २२ ॥ श्रीकृष्ण कें ठाकुम्मि
युतायै नमः ॥ २३ ॥ श्रीकृष्ण व्रजभक्तन संग रासविहार करत
हें ॥ पाछे जल विहार में अंग राग के सहित कुंकुम सब श्रीयमु
नाजी में रहत हे ॥ फूलमाला रसादिक सो श्रीयमुनाजी में रहत
हो मिलि कें एक रस ह्वै रही हें ॥ २३ ॥ कृष्ण रसानुराग्यै नमः ॥ श्रीकृ
ष्ण को रस जो हे ॥ सो अपने हृदय के अंतर धारण कीयो हें ॥ ता
ते कहे इतरो को श्रीयमुनाजी उन गोपीन हृदय ठकराई हें
सो नित्य वहें ॥ तातें श्रीकृष्ण को रस श्रीवृंदावन में उमडि के
बहि चल्यो ॥ सो श्रीयमुनाजी अपने हृदय में धारण कीये हें
२४ ॥ कृष्ण गोपी पूज्य देव्यै नमः ॥ २४ ॥ कृष्णमिलन अर्थ गोपीज
नन नें कात्यायनी आदि देवी को नाम लें श्रीयमुनाजी को पूज
न कीयो हें ॥ तथा कृष्णरूप हे श्रीयमुनाजी कों जांनि गोपीज
न देवी के मिस ते पूजन कीयो हे ॥ अथवा कृष्णरूप श्रीयमुना
जी हें ॥ और गोपीरूप हे श्रीयमुनाजी हें ॥ श्रीयुगलस्वरूप जां
नि देवी की नांई पूजन कीये ॥ २५ ॥ कृष्ण रत्न फल प्रदायै नमः ॥ २६

कुमारिका के व्रत को फल तव कृष्ण सो देत भई ॥ यह कहि यह जनाए जो
सगरे व्रत को फल श्रीकृष्ण हैं ॥ सो श्रीयमुनाजी के आश्रय ते प्राप्त
होत हैं ॥ कुमारिका ने कात्यायनी देवी करि यह मांग्यो ॥ नंदगोपसु
त देवी पति कुरु ते नमः ॥ सो श्रीठाकुरजी चोरि चोरि के मिलत
मारे ॥ २६ ॥ कृष्णलीलार्थमायांसजायेनमः ॥ २७ ॥ कोई आसंका
करे जो तुम श्रीयमुनाजी को ऐसो स्वरूप कहे ॥ परंतु यह तो प्र
कट नदी को नांई दर्सन होत हैं ॥ तहां कहेत हैं ॥ जो श्रीकृष्ण की
लीला अर्थ या को धारण कीयो हैं ॥ कहूं थोरो जल कहूं बोहोत ज
ल कहूं जल के मध्य पुलिन थोरो जल होइ तो भक्तन सहित जल
विहार करिके कहूं गहेरे जल में भक्त जाइ परे ॥ तहां ते प्रभु
प्रकट होइ ॥ तव खेबन लीला करें ॥ भक्त
कृति हास्यादिक रस प्रगट होइ ॥ तव खेबन लीला करें ॥ भक्त
को गोद में तथा कांधे पर चढाय कें पुलिन के मध्य पधारे पार
ले जाइ थोरे जल में विहार होय ॥ प्रभु को मन लौकिक की नाई वि
हार को भयो ॥ ताके लीये यह जल रूप श्रीयमुनाजी होत भई
२७ ॥ कृष्ण नीरध संगतायेनमः ॥ २८ ॥ और नदी समुद्र को पर
ति करि के मिली हैं ॥ श्रीयमुनाजी श्रीकृष्ण को रस रूप पति क
रि मिलि रही हैं ॥ सात्तो समुद्र को भेद के श्री उरूधो नाम को प्रि
जो समुद्र को परस हन कीयो ॥ कृष्ण पद स्पर्स कामायेनमः
२९ ॥ जव वसुदेवजी श्रीठाकुरजी को ले गोकुल को चले तव च
रण पर स के अर्थ वढी ॥ सो चरण परसि के मार्ग देत भई या
प्रकार भक्तन को सिक्षा दीनी ॥ जो आप ने प्रभु को चरण परस
अवस्य ही करनो यह कार्य सर्वोपरि हैं ॥ कृष्ण मानस संभि
तायेनमः ॥ ३० ॥ एक श्रीकृष्ण मे मन लगायके आप की यो हैं
तथा श्रीकृष्ण अपनो मन श्रीयमुनाजी के आधीन कीयो हे
श्रीयमुनाजी को आश्रय करे ॥ ताके ऊपर श्रीकृष्ण को मन प्र

सन्न होय आपनो आश्रय देइ ॥ ३० ॥ कृष्ण सक्तायनमः ॥ ३१ ॥ एक श्री
कृष्ण मे आसक्त हैं ॥ तथा श्रीकृष्ण श्रीयमुनाजी के गुन देखि कें
आसक्त वस है के रहे हैं ॥ तथा श्रीयमुनाजी मे प्रीति करि आसक्त
होय ॥ सो ताके ऊपर प्रभु आसक्त होइ ॥ ३१ ॥ कृष्णभक्तायेनमः
श्रीकृष्ण की भक्ति में श्रीयमुनाजी तत्पर हैं ॥ ताते श्रीकृष्ण है
भक्ति के वस होय श्रीयमुनाजी कहत हैं ॥ सोई करत हैं ॥ ३२ ॥ कृ
ष्ण प्रीति प्रसाधिन्येनमः ॥ ३३ ॥ कृष्ण की प्रीति की साधिका हैं श्री
यमुनाजी को आश्रय होइ तो श्रीयमुनाजी कृष्ण की प्रीति दृढ
यमेव लावें ॥ ३४ ॥ कृष्ण साधिरेणुव हुलायेनमः ॥ ३५ ॥ श्रीकृष्ण
के चरणारविन्द की रेणु व्रजादिकन को दुर्लभ भई ॥ सो श्रीयमु
नाजी पास आप रहे ॥ श्रीयमुनाजी के आश्रय ते आप प्राप्त
होइ ॥ ३६ ॥ कृष्ण सेवक सन्मुखायेनमः ॥ ३७ ॥ श्रीकृष्ण के सेव
क तो अनन्य हैं ॥ सो तिनही के सन्मुख श्रीयमुनाजी हैं तिन
ही को अलौकिक देह सामर्थ्य रसदान श्रीयमुनाजी करत हैं
और को नहीं ॥ ३४ ॥ कृष्णभाव विरोधस्य हासप्रकृति नासये
नमः ॥ ३६ ॥ कृष्ण को भाव प्राप्ति देन को तामे निरोध करि भक्ति
दिवावत हैं ॥ और दास जो भक्त तिन को प्रकृति लौकिक आस
क्ति छुडाय भगवदासक्ति करायप्रभु सो संवंध करावत हे ३६
श्रीकृष्ण तुर्य प्रीयायैनमः ॥ ३७ ॥ ऊपर यह भाव हैं ॥ राजली
ला मे प्रथम ठकुरानी पाछे जो ववती पाछे सात्विभामा पाछे का
लिंदीजी ॥ चतुर्थ प्रीया यहां व्रजलीला में स्वामिनीजी श्रुति रू
पा कुमारिका चोथी श्रीयमुनाजी ॥ तथा श्रीकृष्ण स्वामिनीजी
श्रुतिरूपा कुमारिका इन चारो को प्रीया हैं ॥ श्रीयमुनाजी के
हे ॥ सो सगरे कहे ॥ ३७ ॥ निजाचार्य पदांभोज दासभाव प्रय
च्छतु ॥ या प्रकार श्री हरि रायजी अष्टक करि श्रीआचार्यजी के

चरणकमलकेदासत्वमांगतहें॥ श्रीयमुनाजीदेनवारीहे। जेसेश्री
गंगाजीक्षेत्रवारीहें। कोदांनदीसे। पद्मपुराणमेंइकहोहें। श्लो॥ भई
रसमईशौरीवक्षविधासुधावहा। नारायणीस्वरीबालीवक्षसृति
कपावनी॥१॥ पावनीपुरायनोपाल्नासमसमरसंगता॥ तापनीय
मुनापामीस्वर्गसोपानपद्धती॥२॥ कालिंदीकोलिसलिलासर्वतो
र्धमयीनदी। नीलोत्पलदलश्यामामहापातकभेषजा॥३॥ कुमा
रीविछुदयिनासरितअवतारितगामि॥ सरस्वंगालिसूत्रम्न
त्रिपुनासगुनागुना॥४॥ परोभिभोममि: प्रातयेतुनास्मरेन्न
र॥ इरस्योपिसपापेभ्योमहद्भ्योविपिमुच्यते॥५॥ इत्यादिक
भावनेजेषदकेदसहराकोउत्सवश्रीयमुनाजीमेप्रत्यंतप्रीति
पूर्वकभावकर्तव्यहें॥ अथयमुनायात्राकीभावनालिष्यते॥
एकसमयश्रीठाकुरजीश्रीयमुनाजीकेंसंगवेठेपरमहा
स्यकीवार्तापरस्परगलवाईदीसेकरतहते॥ ताईसमयप्र
भुश्रीस्वांमिनीजीपधारी॥ सोतवद्वारितेदेषिकेश्रीजीमन
चिंतामनमेकीये॥ जोआजमांनहोइगो॥ औरयहांश्रीयमु
नाजीसोकछुकहोनजाइगो॥ जोतुमजावोश्रीयमुनाजीपधा
रतहें॥ सोदेषिकेकोपकरेगी॥ इतनेमेश्रीस्वांमिनीजीद्वारि
तेदृष्टिकरिकेंदेखतोदोऊस्वरूपश्यांमसुंदर॥ परस्परवार्ता
करतहे॥ तबमनमेकोपकरिउतावलसोपगधरतपधा
री॥ इतनेंमेंदोऊस्वरूपनकेमनकीश्रीयमुनाजीनेजांनी
जोश्रीठाकुरजीकोचिंताभई॥ औरमुख्यश्रीस्वांमिनीजीके
मनमेकोपभयो॥ तबतत्कालजलरूपहोइयमुनाकेभीतर
जायविराजे॥ पाछेतहांश्रीस्वांमिनीजीपधारिकोधसहित
श्रीठाकुरजीसोंबोली॥ जोवहश्यांमसुंदरीतिहारेपासइतनी
सेकहांहें॥ तबश्रीठाकुरजीजीकहे॥ जोयहांतोकोईनांहीहेमे

अकेलोवेठ्योहो॥ तुमकोभ्रमभयोहे इतनोमेरेपाससवठोरदेषि
लेउ॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीसवठोरदृष्टिकरिकेंदेषी॥ तहां
कोईसषीनहीं॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीअपनेमनमेलाज
पायी॥ जोमेआजरुठीपरी॥ हरिनेमेपासस्यांमसुंदरीदे
रवी षीहे॥ औरअववेसननांही॥ सोतवइननेपैश्रीठाकुरजी
केमनमेंआनंदभयो॥ जोमेसांचोभयो पाछेकही॥ जोतुमको
तोनित्यहीयाभांतिभ्रमहोतहें॥ मेरेतोएकतुंहमहोहें॥ और
कोमेजांनतनांही॥ तुमतोरुठेईनित्यकौतिस्माकोरलगावत
हो॥ आजसांचोहोमेंतुमतेत्यपाहीभांतिजांनियो॥ सोयाबा
तकोआजनिरधारकरो॥ सोयहसुनतहीश्रीस्वांमिनीजीव
कतभई॥ जोआजइनकीचोरीप्रगटनहोइतोमोकोयाभांतिं
नित्यरुठीकरेगो॥ यहविचारकरतहे॥ इतनेमेश्रीचंद्रावलीजीप
धारी॥ औरकही॥ जोअहोप्रांनप्यारीआजकहांचिंतामेहो।
हमतोतुम्हारीहें॥ हमसोसवरीवातोकहोचहीये॥ तवश्रीस्वा
मिनीजीकही॥ जोसुनोचंद्रावलीजीहमतुमसवनमेवडीश्रे
ष्ठहें॥ परमचतुरहो॥ भलीभई॥ जोतुमयासमयआई॥ आ
जमेंहरिनेएकश्यांमसुंदरीपरममनोहरश्रीजीकेपासवे
ठीदेषी॥ परस्परवार्ताकरतहहती॥ सोताकोदेषिकेमेरोम
नलुभानो॥ जोइनसोंमिलिये॥ सोजवमेनिकटआई॥ तवत
नंमिरहेहेरवतदेखतकहांगइ॥ सोमेदेषीनांही॥ औरवल
टीमेरुठीपरी॥ सोआजमोकोंजोकोइसांचीकरें॥ तिनकोंजो
मांगेसोमेदेउं॥ सोतवश्रीचंद्रावलीजीनेकही॥ जोमेतुमको
यहभेदवताऊंगी॥ इतनोसुनतहीश्रीस्वांमिनीजीउनको
मिली॥ सोतवश्रीजीसेनमेंईश्रीचंद्रावलीजीसोकहें॥ जोतु
मयहकहाकीयो॥ तवश्रीचंद्रावलीजीसेनमेंहीकही॥ जो

तुंमकछुचिंतामतिकरो॥मेराकनौननंदगोउप्रगटकरोगी॥पाछेश्री
चंद्रावलीजीनेश्रीस्वांमिनीजीसोंकही॥जोआजमेरेघरदोऊस्व
रूपपधारिकेंरात्रकोजलस्थलक्रीडाकरो॥तोयहमेदमेवता
ऊ॥सोतबश्रीस्वांमिनीजीनेकही॥जोतुंमकहोगीसोमेंसर्वथां
करोगी॥इतनेमेंनंदगोपकुमारिकाआई॥औरव्रजकीस्वां
मिनीसबआई॥सोतबश्रीस्वांमिनीजीसमाधांनकरिसबस
खीनसोंकहे॥जोआजपरमआश्चर्यकीवातदेखीहे॥सोतु
मसंगरहीयो॥देखोमेंसांचीकहतहोंकेश्रीजीसांचीकहु
तहें॥तबसर्वप्रसंनभई॥पाछेश्रीचंद्रावलीजीनेश्रीस्वांमिनी
जीसोंकही॥जोयेश्रीयमुनाजीहे॥सोइनकेपासचलो॥सो
तबसमस्तव्रजभक्तमिलिकेंश्रीयमुनाजीपासआये॥सोतास
मयश्रीयमुनाजीनेमनमेंविचारी॥जोआपतोश्रीस्वांमिनी
जीकोसन्मांनकीयोचाहीयें॥तबप्रथमजेसोश्यामस्वरूप
धारिबाहिरआई॥तबश्रीस्वांमहासुंदरताछाई॥सोतबश्री
स्वांमिनीजीप्रसंनहोइकेंकही॥जोतुंमतोहमारीप्यारीहो
सुखदाताहो॥जलविहारकरिवेमनिवारनेकरनेहें॥सोतुंम
सुखेनप्रसंनतासोंविराजो॥जोमेंतोव्रजकीओरसुंदरीजा
निकोपकीयो॥सोतासमयश्रीचंद्रावलीजीनेकही॥जोतुंम
प्रभुसहितमेरेघरपधारो॥श्रीस्वांमिनीजीहूपधारेगीत
बश्रीयमुनाजीनेकही॥जोचलोमेंतोउहांरेसबनकेकहेमे
हो॥इतनोसुनतसमस्तस्वांमिनीननेश्रीयमुनाजीसों
कही॥जोआजश्रीचंद्रावलीजीकोपरमभाग्यहें॥सोदोऊ
स्वरूपपधारिपरमलीलाकरेगे॥हमतोतुम्हारीहेतुंमही
कोजांनतहें॥ताकेपेसोउपायकरो॥जोयहसुखहमकोप्राप्ति
होइ॥युगलस्वरूपपधारितुंमहूपधारिहमारेनिकुंजमें

जलस्थलक्रीडाहोई॥सोहमाहिनतेतापहोइरह्योहे॥सोतबयहसब
नकीबीनतीसुनिकेंश्रीमहारानीजीकोदयाआई॥सोप्रसंनहोइस
बनसोंकही॥जोतुंमएकउपायकरो॥उनिमपात्रमेंमेरोजलपध
रावो॥तामेंमेंपधारोगी॥औरप्रभूहूपधारेगे॥सोसगरीरात्रवि
हारलीलाहोइगी॥प्रातःकालविहारहोइगो॥याप्रकारश्रीम
हारानीजीकेवचनसुनतहीसमस्तस्वांमिनीआपनेघरआई
उनिमसुवर्णकेपात्रमेंलेआपनेनिकुंजमेंश्रीस्वांमिनीजीके
भावते॥अष्टकोराकोचोककोरीहरदीकोकरिपाछेसुंदर
गांनभातसहितश्रीयमुनाजीकोपधरावनलागी॥तातेय
हांहूपुष्टिमारगमेंव्रजभक्तनकीभावनाकरिकोरीहरदी
कोचोकपूरिपाछेस्परसरहे॥सोविरहकोगोपनहे॥औरस्प
परसहोयतिनकोहूवें॥उनहूकोविरहकरिनप्रहें॥सोतातें
उनकेसंगश्रीमहारानीजीकोपधरावतहें॥पाछेचोकपूरि
गगराधरितुलसीकेसरिचंदननागरिवेलिआदिकेपुष्प
धरावतहें॥पात्रकोचंदनलगावतहे॥पाछेअगंधवासनक
रतहें॥भगवन्नः॥श्रीउरुषोनमस्यप्रातस्नानायजलाधि
वासनकरिये॥पाछेधूपदीपआरतीकीजे॥कोरीहरदीको
चोकसोश्रीचंद्रावलीजीआपनेनिकुंजमेचोकपूरेपरमसंग
लभयोजेपानसत्रसबनेबडोजेघश्रीचंद्रावलीजीहें॥सोश्रि
नकेमनोरथनेयहलीलाहे॥गागरिहे॥सोश्रीयमुनाजीकोउ
दिनहो॥श्रीस्वांमिनीजीकेहृदयतेप्रगटीहे॥तामेंकेसरडारे
सोश्रीयेस्वांमिनीजीजलभीतरहे॥सोश्रीमहारानीजीतुल
सीहे॥सोअपनेस्वभावायनकुमारिकाहें॥औरश्रीस्वांमिनीजी
केअंगकोगंधहे॥रम्यवेलिआदिफूलेहे॥सोश्रीचंद्रावलीजी
कोउजलभावपरमफूलीहें॥चंदनहे॥सोसमस्तभक्तनसहित

प्रभु महारानीजी के निकुंज में बिहार हैं ॥ जल की गागरि कोऊ परसो
चंदन लगावत हैं ॥ सो श्रीस्वामिनीजी उद्योग माया जो यह लीला
संबंधिनी सो ही हैं ॥ सो तिन को जल की गागरि ही दीसे ॥ अधिव
सन करत हैं ॥ सो प्रभु की ईश्वरता हरि करि रागार्थ नव प्रभु व
स होत हैं ॥ जीला को नाम सुनत ही धूप हैं ॥ सो कवहू श्री स्वामि
नीजी अपने भाव में प्रभु को वस करत हैं ॥ दीपकुमारिका
अपनो नाथ निवर्त करत हैं ॥ भोग श्री महारानीजी अपने भा
वसों सब प्रकार करत हैं ॥ आरती श्री चंद्रावलीजी अपने कुं
जमें पधराइ दुःख वारत हैं ॥ इत्यादिक भाव विचारे या प्रकार
समस्त व्रजभक्त अपने घर श्रीमहारानीजी को पधरा के
समस्त रात्रि विहार लीला प्रात ॥ काल जलविहार होइगो सो या
प्रकार जल रावे की भावना ॥ अब जगत में प्रसिद्ध है या
वय है हैं ॥ जो श्रीनंदरायजी अपने पुत्र की कुशल वरसाँ दे
न के लीये वेद मंत्र सो जल लाय अधिवासन करावत हैं ॥ औ
जो भग
स्त्रसो वेद पढावत हैं ॥ और वेद मंत्र में कहे हैं ॥ जो भग
वान को सीतल जलसों न्हवाय धूप दीपने वेद करत हैं सो
यह पुष्टिमारग वेदमारग हैं ॥ नित्य सीतल जल सो स्नान क
रावे तो वात्सल्यता जांनत हैं ॥ ताते नित्य उष्ण काल सो एक दि
न वरस में सीतल जल सो वेद वचन पालत हैं ॥ अथवा
श्रीनंदरायजी यह धरत हैं ॥ सो नवानंद सो विचार करि अ
पने आगे पुत्र को राज्य में स्थापन दीयो ॥ सो तब समस्त व्रज भ
क्तन को परम आनंद भयो ॥ हृदय में उत्साह भयो ॥ अब नंद
व्रजराज सुत हैं तो ॥ अब व्रजराज भए अब वड रक हां रहो ताते
सीतल सांमिग्री घर घर तें ले के चले ॥ सो श्रीस्वामिनीजी सहित
नंदालय में आई ॥ यहां श्रीनंदरायजी वड़े वड़े रिषीसुनीग

ग आदि बुलाये ॥ पाछे यहां परान धरत हे ॥ सो श्रीनंदरायजी
को बोक मारि राखत हैं ॥ सो ता पर जड़ाऊ चोकी धर के मल
वस्त्र बिछाय श्रीयसोदाजी सो कहे ॥ जो पुत्र को जगावो ॥ सो तब
श्रीयसोदाजी के जगाये जागत नांही ॥ तब श्रीस्वामिनीजी ज
गावत हे ॥ सो राज्याभिसेक की नांई मुख धोवन कीये ॥ परंतु
यहां मात्र चरण ॥ अब व्रजभक्त सब तन सो छिपाय के मंगल
मे गाय आरोगावत हैं ॥ सो स्नान करत आगे रहोते वोहोत वा
र होइगी ॥ राजकेभुष हे ॥ याभांति मंगला भोग आरोगे पाछे
श्रीनंदरायजी के पास चोक में पधारे ॥ तब श्रीनंदरायजीधो
तीउपर राय पहरावत हैं ॥ सो या सो जो अब राजा होइगे सो
धोतीउपरना पहरि वेदरीत सो हाथमें जल लेके संकल्प क
रि पाछे न्हाय ॥ या प्रकार प्रभुन को चोकी पर पधरा के ॥ सो त
व दसो दिसा व्रजभक्त गान करत हे ॥ प्रभु सनन के सन्मुख
कलास करत हैं ॥ ता समय विप्र वेद मंत्र पढत जल के प्राने
सो संपहे ॥ सो जल को अगाधि देविक महामन्त्रापी हैं ॥ ताते सं
पकी श्रेष्ठ महा हो सन्मुख हैं ॥ ताते सोने के पेसो मढत हैं ॥ त
थां हस्त सो दाविलेइ ॥ सो ता समय स्नान करावत लाग सो
तब प्रभु वालभाव सो हट कीयो ॥ जो वृषभान राजा पास वे
ठे तो न्हाऊं ॥ तव वांम भाग पधराये उत्तर मुख बेठे ॥ ता को का
रण यह जो श्रीगोकुल ते उत्तर दिस रावल हे ॥ सो श्रीस्वामि
नीजी को हैं ॥ सो ता ते तिनके सन्मुख बेठत हे ॥ हेवता स्तुति
करत ऊपर ते फूल डारत हैं ॥ अनेक बंदीजन यश गंधर्व
ढोढ मृदंग अनेक बाजे बजावत हैं ॥ निर्त करत हे ॥ पाछे अंग
वस्त्र करि के सिंगार के सरीको रकें धोती उपरना केसरी कु
लह सिंगार या छे भक्त के हृदय ... मिलमरे ॥ ताते श्रीयसो

द्राजी है॥ और व्रजभक्त ह्र सीतल अंगध रत है॥ यह तो प्रसिद्ध भा
व है॥ और अब पुष्टि लीला संबंधी व्रजभक्तन को भाव कहत
हें॥ मंगला भोग श्रीचंद्रावलीजी के निकुंज में इन के मनोर्थ को
है॥ पाछे धोती उपरणा श्रीस्वांमिनीजी की साडी के भाव सो प
हरावत हें॥ पराग है सो श्रीचंद्रावलीजी को निकुंजमंदिर है तो
परचो की हें॥ सो श्रीचंद्रावलीजी को गोद में विराजे॥ हो ऊ स्वर
रूप को नहों तिलक करत हें॥ सो अपने अपने कुंज को राजभो
गे॥ जो हमारे राजा कुंम॥ अब याही प्रकार तिन्यानि भेयना तोप
धारि लीला करो॥ ऊपर ने श्रीमहारानीजी श्रीगोकुल में पधा
रत हें॥ ताते श्रीमहारानीजी द्वारा यह लीला हें॥ ताते उनर मु
खवेठत हे हावो विरीयो संखनाद सो ऊवे स्वर सो श्रीचंद्रावली
जी गावत हें॥ ठालर है सो श्रीयमुनाजी के भाव सो घंटा है
सो मधुर सुर सो कूकी कीसो गावत हें॥ वेद पढत है सो आधि
मा दैविक मूर्तिरूप॥ भ्रमर शुक मुनि गांन करत हें॥ वीनवाजत
हें॥ सो श्रीस्वांमिनीजी के स्वर के भाव तें॥ श्रीचंद्रावलीजी
के भाव ते ताल मजीरा सो कुमारिका मधुर सुर सो तालचुटकी
समस्त व्रजभक्तन के संग रे सो जल ते की रूप में प्रभु भक्त स
वृमिलि के कुलाहल करत हें॥ सो कीर्तन हें॥ जलमें पुष्प प
रत हें॥ सो वेनी क्रीडा करत छूटी हें॥ उन्मत भये सो फूल डर
त हें॥ जल केसर पीत रंग भयो॥ सो श्रीयमुनाजी में व्रजभक
तन के संग राग श्रम जल ते सुगंध सहित॥ तथा दोऊ कराई र
स की डार लल कि रही हें॥ तहां ते अनेक दीपु पुष्प सुगंध स
हित है॥ जल सो सहित पुष्प प्रभु के ऊपर परत हें॥ प्रस्विर
रहत हें॥ सो कवहू प्रभु गहरे जल में जात हें॥ तब भक्त र
पि के प्रभु को वेष्टित रहत हें॥ इत्यादि क अनेक भाव ते जलकी

डा करत हे॥ ताही समय पुष्प श्रीस्वांमिनीजी को यह मनोरथ भयो
जो नाव खेवन की लीला करीए॥ सो प्रेमामृत में कहे हे॥ जमुना नौ
विका गोपी [illegible] वार दल नो यम॥ ताही समय श्रीयमुनाजी पर
म सुंदर नवाडा भांति भांति को चित्राम नि साहित सिद्धि कीए॥ तब
भक्त कहे॥ हम पथिक हें॥ तुम खेवट हो रहमो को पार उतारो
उतराई देंगे॥ सो तब श्रीठाकुरजी सगरे भक्तन कों बेठारि के म
ध्यधारा में नाव फिराय कें कही॥ जो नाव हमारे हाथ नाही हे तुम
सबारे रहीयो॥ यह सुनत ही डराय के कोई पट पीत पहरे कोई पराग
रचि दयकरे॥ सब अपने अपने मनो पीड रायि कें मिसते कोरे पा
थ कहे॥ अब तुम हारे हो॥ पार उतारो॥ तब श्रीठाकुरजी कहे॥ जो अब
हम ने मानन करो॥ पाछे सब न सो उतराई लीए॥ काऊ को देनो
ऊकिन कवे सरि पोहेची॥ नपुर चोली साडी सो सकल वाजुबंद
हार चोकी इत्यादि क॥ तब श्रीस्वांमिनीजी ने कही॥ जो इनने आभूष नं
ण वस्त्र लेके तुम धरि मनि राखो॥ तुम्हारो सिंगार करे॥ तब प्रभु
प्रसन भए॥ सो सबको भेप सिंगार कीए॥ पाछे पार उतारे॥ तहां
अनेक कीडा कीए॥ पाछे एक एक भक्तन को नाव पर बेठारि
मध्यधारा में विहार करि पार उतारे॥ या भांति अनेक कीडा हें॥
भाव वेन जोने महाप्रभु की कृपा सो मारग भावात्म कहे॥ पाछे
सुंदर वस्त्र ते अंग वस्त्र करि पुलिन में विराजे हें॥ श्रृंगार धरा
वन लागी॥ जो उन राई में लीए हे॥ सो ऊ और प्रभु नित्य पहरे हें
सो ऊ कहू कुलह के सरी तहां श्रीस्वांमिनीजी के भाव ते कहूं
कुलह स्वेत तोरा केसरी तहां स्वेत श्रीचंद्रावलीजी के सरी श्रीयो
मिनीजी ते से ई केसरी कोर की साडी ठाढे वस्त्र कहूं स्वेत कहूं केस
री लहगा लाल अतलस पाग पाछदार॥ स्वेत केसरी छापा पिछो
डा के सरी कोर तथा अरगजाई॥ ऊपर कुलह तब भाव सो गोपी

वहत्रभमेनित्यकोनेग ॥ और उत्सव में पना आदिकी कीमामिश्रीको
वांमापेरधरि श्रीस्वांमिनीजीकों अधरामृत ॥ तामे गुलाबज
लकोमलकुमारिकाकेभावते ॥ मिरच श्रुतिरूपातीनकालरास
उद्बोधक ॥ कपूर श्रीस्वांमिनीजीके अंगकोगंध इलाइची श्रीयमु
नाजीपांडकोपनारसराभग ॥ सो श्रुतिरूपाको अधरामृतनैम्में
गुलाबजलसुरूप श्रीस्वांमिनीजी ॥ मिरच संम्मसीम लंकपूर श्री
यमुनाजी इलाइची छेटीकुमारिकावीजकेलदुवा ॥ सो श्रीचंद्राव-
लीजीकेकुचरूपवासनी श्रीस्वांमिनीजीकेरससोवधेपिरोजीके
लडुवा ॥ सो श्रीयमुनाजीलाल आरक्त अनुरागसहित श्रीस्वांमि
नीजीकेभावरूपरससोवांधे ॥ छोटेसोबिनाश्रम लीलाकोरेगुरु
जनकोनिकुंजमेंभयनांहीहे ॥ अंकुरीमूंगकीसोकुमारिकावा
लकइती ॥ यातीजामेंभावकेअंगउज्वलमगटभये ॥ सजुवा
सोकुमारिकाकेकुचकेभावदहीभातमहारानीजीकोअधरा
मृत ॥ सिखरनभात श्रीचंद्रावलीजीकोअधरामृत ॥ संयोग
समयश्रमरस मांनरसमय कोअधरामृतमेचुरापरे ॥ सोश्र
मसधुरवचनसोमनावनहे ॥ भीतरधीपरे ॥ सोभीतरस्वांमि
नीकोस्नेहहे ॥ कोल्हाकेवीजसोश्रीस्वांमिनीजीकेदंतावलहे ॥ छ
लासोकुमारिकाकेदंतावल ॥ छोटेलालधीरेश्रांवसो श्रीस्वां
मिनीजीकेकुचनइसो श्रीचंद्रावलीजीकेकुचनरमसो श्री
यमुनाजीआदि ॥ याप्रकारसमस्तव्रजभक्तजांनसोश्रीय
मुनाजीकोभाव ॥ तथां श्रीठाकुरजीकोभावमकअनुभवक
रतहे ॥ और मेवाश्रालो समस्त स्वांमिनी मनमेरवोपराश्रालो
मिजावतहे ॥ सो श्रीयमुनाजीकेसंगकेभावते अंकुरभयोस
गरेउत्सवमेंचारवस्तुमुख्यसेव श्रीस्वांमिनीजी याधकेवरा
श्रीयमुनाजीमीठोसाककुमारिका ॥ तीनकूरा श्रीचंद्रावलीजी

सीतकार ॥ रजभोगमे थोरीथोरीउत्सवकेमें सिप्पापास ऊपहर
कोश्रावनीपाछेसोछावर श्रीचंद्रावलीजीकरें ॥ सेनमे ऊजीतरी
अंकुरीजोफेरिअंकुर औरहोतनहोई ॥ तेसोई वैश्नव भूलेअनव
नहोइहें ॥ यहलीलाकेअनुभवयोग्यहें ॥ इतिश्रीहरिरायजीकृत
स्नानयात्राकीभावनासंपूर्णम ॥ आजतेंदिनपंद्रहसोरहसुली
केभावसोगावे ॥ अवकादिनमेराजवेदेतगोत नेमकनकेमनमे
यहनिश्चयभयो ॥ जोअवतेरीमतासोपधारेगे ॥ सोयहांतोमुख्य
स्वामिनीवारहे ॥ सोपरस्पर आपनेकुंजनेनित्यपधरावनीकरेसो
तवश्रीस्वांमिनीव्रजकीनकोमहाविरहभयो ॥ जोहमारोमनेम
पेअवकेसेहोय ॥ सोतवसोरहरागमहाविरहकोहे ॥ सोतवकेमा
यकेसोरहदिनविताये ॥ पाछेरातकादिन पुष्यनक्षत्रलसमीतरूप
पुष्पश्रीस्वांमिनीजीहें ॥ सोमहाप्रभुजीकहेहें ॥ नमामिहृदयेशे
षेलीलाक्षीराब्धिसायनं ॥ लक्ष्मीसहस्रलीलाभिसेव्यमानक
लानिधिं ॥ १ ॥ असे श्रीस्वांमिनीजीकी प्रार्थनाकीये ॥ जोआजवह
हमारेऊपरकृपाकरिकेंदोऊस्वरूपपधारो ॥ सोतब श्रीस्वां
मिनीजीकहे ॥ जोहमतोअपनेकुंजमेंपधारेगे ॥ सोतवसग
रीप्रसंनहोइकेंआपनेकुंजसांमिग्रीआदिसिद्धिकरनला
गी ॥ तातेपुष्यनक्षत्रकोयहउत्सवमानतहे ॥ कवहू दूसरेदि
न रथयात्रा ॥ अथ रथयात्राकोभाव ॥ पुष्यनक्षत्रहोय क
वहू परिवाकोहोय ॥ कवहूं दूजकोहोय ॥ आगेपाछेयहनक्ष
त्रनजाय ॥ काहेते ॥ परिवाप्रथमदिन श्रीयमुनाजीकोहे ॥ औ
रतीजहेसो श्रीस्वांमिनीजीकेपाछे श्रीचंद्रावलीजी इनतेप
गलीहे ॥ तातेपुष्यनकेमनोयतेंघटेवदे ॥ आगेनहीजायश्री
रजन्याष्टमीकोरोहिणीनक्षत्रवहेजिननोघटेवदे काहेते
मगवांनभक्तनकेवसहें ॥ भक्तभगवांनकेवसनांहीहें मंगल

भोगकीनांई मंगलआरती अनंग श्रीस्वांमिनीजीके भावते हैं॥ पाछे
सिंगारमें वागा स्वेत सो श्रीचंद्रावलीजीके भावते कि नारीलालसो
श्रीयमुनाजीके भावडलमलातहैं॥ ऐसेंई कुलह कहू स्वेत वस्त्र
परकूंटी कस्तूरीकी॥ कहूं स्वेत जालीदार वागा कि नारी लहरीया
दोऊ भाव भक्तनकों॥ कहूं मुख्यस्वांमिनी कहूं श्रीचंद्रावलीजी
कहूं श्रीयमुनाजी कहूं कुमारिका याप्रकार भाव फिरतहैं॥ सोतांमे
मंदिर मंदिरकी रीतिहैं॥ तनियासूथन लाल तनिया मुख्य श्री
स्वांमिनीजीको निजभावहैं॥ सूथन कुमारिकाकी चोलीकी वंदहैं
पटुका समस्त भक्तनके अनुरागसो बांधे कटि॥ तातें सबनके घर
पधारतहें॥ चंद्रका कहू॥४॥ पांच चारो यक॥ एक समस्त व्रजभ
क॥ कहू चंद्रका॥३॥ सो सखीया॥१॥ श्रुतिरूपा॥२॥ कुमारिकार
क कहूं चंद्रका॥१॥ कतरा॥१॥ मुख्यकेभाव चंद्रका कतरो होय दिस
कुमारिका श्रुतिरूपा कुमारिका वांमदिस वेठे॥ श्रीस्वांमिनीजी
भीतर होय॥ सो नव पंचाध्याईके भावसो एक सखीके भीतरसा
षिवेले गए॥ स्वांमिनीजी साड़ी स्वेत किनारी लाल चोली पीत
लहगा अतलसको लाल आसमानी लाल अनुरागसूचक व
ड़ा॥ हार जड़ाऊ पहरे॥ भारी श्रृंगार गोपीवल्लभमें सेवपुरा
की राजभोगमें सेव तीन कूटा छाछके वड़ा मीठो रथाके पाछे
रथको प्रकार॥ कहूं गोपीवल्लभ पाछे रथ वेठे॥ तहां यह भाव
सव भक्तनके घर होय॥ आप पाछे राजभोग आरोगि कें श्री
स्वांमिनीजीके कुंजमें निसकीनांई पोढे॥ पाछे भोगसमय प
धारें॥ नवसंध्या आरती समय यह घर आवें॥ तातें भोगके स
मय पहू रथपर विराजे॥ मनोरथ होइ तो अथवा रथके मनो
रथ आगे पाछेहू होय॥ असाढ महीना वहीये जेसे डोलतें
मनोमीके भीतर नांई होय॥ अनकूट कार्तिक सुदी॥३॥ नांईहै

द॥ हिंडोरा श्रावणतें भादोंवदी॥ तांई होय॥ असाढ सुदीमेंहो
य सो तातें जो श्रीस्वांमिनीजी भगतीछुटीयें॥ सोतो वामंडप्तसोक
सोचहीये॥ वरीहू समय सगरूको है॥ सो तिनके भावसो रथ वेर
हावनो॥ आधिकीमें अंकुरी पनाई तनोई राजभोगमें सिकेव
डा॥ अब कहूं रथमें घोड़ा नहीं॥ कहूं दोय घोड़ा है॥ सो ताको अभि
प्राय यह हैं॥ प्रभु वालभाव सो मात्र चरणसो कहे नहीं॥ जो मे
याने रथ वदि व्रज डोलुंगो॥ यह भाव सो सगरो साज श्रीयसो
दाजी गाड़ीको सिद्धि करि पकरी॥ सो भक्तरवेचे॥ याभाव व्रज
मे पधारे॥ तातें घोड़ा नांही रतन हैं॥ और सोरह हजार कुमारि
का वारी तथा श्रुतिरूपा श्रीस्वांमिनीजी मध्य विराजे हैं॥ तहां दो
य घोड़ा सवपद्वार थतके भीतर रहें॥ ऊपर घोड़ा हैं॥ भीतर रथ
के प्रथम रथको अधिवासन करत हैं॥ सो श्रुतिरूपाके भाव
रथको चंदन लगावत हैं॥ सो प्रभुको अनेक भांति जो आपा
रूप अक्षत डारत हैं॥ जो देखे सो घोड़ारूप देखे॥ भक्तरूप नां
ही देखे॥ धूपदीप नैवेद्य आरती करि रथकी यात्राके भावसो
वहू वेटी गहना वसनवस्त पहरावत हैं॥ सो भक्तरस परवस
होय सिंगार कीरे॥ रथरूप भावके आनंदमें मग्न हैं॥ प्रथम
रथपर विराजे॥ तब झालर घंटा संखनाद मृदंग डांक वाजे
स्नानयात्राके भावसो तथा प्रथम भोग श्रीस्वांमिनीजीके
मनोरथको॥ डोलतिवारीमें कोरी हरदीको चोक समारे पुरे
तहां प्रथम सुखसरा मुख तातें डोल हिंडोरा रथ कुंजसे वेधी
भाव हैं॥ अंकुरि न होय फलित न भयो॥ तातें अंकुरी ऊपर आं
व धरनें॥ यतातें सो समनिवारक कहें॥ वीजाविरहीके लडुवा
धरे॥ सो आगम भाव हैं॥ याप्रकार प्रथम भोगमें रतनो पाछे
वीड़ा आरोगावत हरसन होई॥ रथको सिंगारको भावरूप

मेचार डांडी ॥ वांमडांडी दसरा सो चारयो भक्तनके अष्टदलकी
मेचार डांडी ॥ वांमडांडी दसरा सोचारयो भक्तनके प्रभुको पकरिरहे हैं ॥ घोड़ा चंच
भाव है ॥ सो परस्पर बांह जोरिके प्रभुको पकरि रहे हैं ॥ सोतो परकलाव न
जहे ॥ ताते छत्री हैं ॥ व्रजभक्तनको मस्तक हे ॥ तापरकलसा हे ॥ सोसी
कोवांमहें ॥ सोमोतीनसो मांगगुंथी हैं ॥ तापरकलसा हे ॥ सोसी
कोवांमहें ॥ सोमोतीनसो मांगगुंथी हैं ॥ रथ
सफूलमोरचंद्राहें ॥ डंडीनकी खोली हैं ॥ सोचोलीको वांहहें ॥ रथ
के पाछे रंगीन सुनहरीकांमकोधरद्राहे ॥ सो सांडी पहरे हें रथ
कोडलारे चारि रंगकीहें ॥ तथां वतुर्थ्यूथके लहेगा पीतरपा
कोडलारि चारि रंगकी हें ॥ हरेमे पीतरपामिलेभाव
मश्रीमहारानीजी लालकुमारिका ॥ हरेमे पीतरपामिलेभाव
मेश्रुतिरूपा कहूं तीन रंगकी डालरि ॥ पीतरपामलालत्तहांपी
तमेंस्वांमिनीकुमारिकारक्तश्यांमश्रीयमुनाजी ताल श्रीचं
द्रावलीजी ॥ रथके नीचे छात भक्तनकी गोद हे ॥ सोत्तहांवेठ
द्रावलीजी ॥ रथके नीचे छात भक्तनकी गोद हे ॥ सोश्रीचंद्रावलीजीको वडोअग्रेचलत फरक
हें ॥ धुजाऊपर हे ॥ सोश्रीचंद्रावलीजीको वडोअग्रेचलत फरक
तहें ॥ याप्रकाररसरूपरथको विचारभाव सोकरे ॥ पाछेर
थचल्यो ॥ सोनिज मंदिर कीतिवारीमें प्रवेसुरव अप्यो ॥ सोत्तहां
श्रीचंद्रावलीजीको भाव ॥ सोप्रथमकी नांई भोगकी विधि
सोत्तहां वीड़ा आरोगावत तदरस नहोई ॥ पाछेरथ चल्यो सो
चोकमेठाड़ो होई ॥ सोचोक श्रीयमुनाजीकी पुलिनको भाव हे
ताते रथको मुखउत्तरदिसा रहे ॥ काहे तें रावलश्रीयमु
नाजी श्रीगोकुलतें उत्तरदिसा हें ॥ तहां श्रीमहारानीजी वेम
नोर्थकीत थां श्रीमहारानीजी सोमिली कुमारिकाके भाव
की स्वांमिनीसंगी कारककरे ॥ सोतहां रथपर हररस न होत
हें ॥ ते चारयो के चवरमुरछापे रखाहोड़ ॥ चवर श्रीचंद्रावलीजी
को भाव ॥ पंखा श्रमनिवारक श्रीयमुनाजीको भाव ॥ मुंदकु
मारिकाके पुष्पनथांलालिताको भाव वीड़ाछप्पश्रीस्वा
मिनीजीकी कीयाहें ॥ ऐंसीके लडुवा श्रीस्वांमिनीजीको हृदय

सेवके लडुवा श्रीचंद्रावलीजीको हृदयमथठरीपगी सोश्रीस्वांमि
नीजीके कपोल ॥ बीजके लडुवा कुमारिकाके ॥ चिरोंजीके लडुवा श्री
यमुनाजीप नादोऊ मिरचसीतकार सुगंध श्रीअंगको गंध अप्र
लोमेवा चारयो भक्तरसरूपभरे ॥ सकोमेवा प्रथम विरहको अपे
नकीरसे ॥ नवरसपारेगूझा कूपको भाव गेंडा भरतहें ॥ कूपमेभाव
भरिराषेहें ॥ अंकुरी अंमसे वा फलको भाव स्मांनयात्रामे कहेंहें
याप्रकार भोगधरि समयपभरे भोगसराय वीड़ा आरोगावत तद
रस नभरे ॥ पाछे रथचल्यो सोडोलतिवारीमे आयो ॥ तहांस
मस्तव्रजभक्त चारयो जूथपतिके मनोर्थ सो वड़ो भोग सेवके
लडुवा मथठरी गूझा पनादोऊ सिखरन वड़ी मीठो श्याक सबे
के मनोर्थ सो बीजचिरोंजीके लडुवा आरोगे ॥ मेवा आलोअंकु
री अंबमफलादिक सब सोचो थे भोगमे धूपदीप संपोरिके
होई ॥ पकवांन सबधरे ॥ पाछे भोग धरि होय रहे ॥ तोंमेवा
ऊको सुधाहे रनो अन्नसपड़ीलेई ॥ पाछे भोगसराय वीड़ा
आरोगायदर्शन होय ॥ चारयो जूथपतिको चर्षित वीड़ा एक
य आठ ॥ चमई होय भावको पाछे आरतीरागके श्रीचंद्रा
वलीजीकी ॥ इनको नाप श्रमहारिमयो ॥ राईलोन वारे श्रीचंद्रा
वंधटरे सक्केजोहें ॥ अत्र वनिस्मयधरावेगे ॥ परिक्रमा सो
याते जो हमारे मंडलके वीच तुंम सस्तार हो ॥ सोछावर अप
नपो करतहें ॥ सोप्रसिद्धि नोयहहे ॥ जोश्री जगंनाथजी रथ
परसासुरेजातहें ॥ तातेयहांसो ऊपरदिखायवेको रथतेउ
तरतहें ॥ नव पनामिरचईलाइची सुगंध कोसो श्रमनिवा
ररामार्थ श्रीस्वांमिनीजी पधारतहें ॥ पनामेसोने कीकटोरीसि
धासनपरविराजिके आरोगे ॥ वागावड़ोकरि पिछोरा सुन
हरीकिनारीयह धरावे ॥ कुलहतथां आभूषण वड़े होय

भाव॰॥ राकभाव यह है॥ भक्त सुंदर रथ सिंगार करि कें खिलोना वनाय श्री
१४५॥ यसोदाजी के पास आइ के कहें॥ जो तुम्हारे पुत्र के लीयें खिलोना ला
ईहें॥ सो तब श्री ठाकुरजी भक्तन को भाव जांनि हठ करि विराजे
तब वो होत सो आदेखि के रानीजी प्रसंन होय आसा दीये॥ जो
अपने रथ रिक नांई होइ आवो॥ पाछे सव स्वांमिनी सषा सो क
हे॥ जो मे तुम्हारे भरोसे पठावत हो॥ तुम्हारो भाव ऐसे हु हे ता
ते॥ तब व्रज में ताय पधराय अपने अपने घर मे को थोसि
हि कीये॥ सो ता दिन ते मल्लार गाईये॥ जो हमारे ऊपर रस की
वर्षा घर पधारि के करी॥ जेसे वादर जो ने कहुं ते जल लाय व
रसत हें॥ तेसे ईनित्य वरसे अब या भांति वरसों वरस रथ
को दिन एक मंदिर की तिवारी मे उत्सव के दूसरो दिन रहें
गोप्य रीति सो फेर पधारत हें॥ पाछे दूसरे दिन रथ वड़ो क
रिठि का नेध रीये॥ संकल्प॥ भगवन श्री पुरुषोत्तमस्य रथा
धिरोहनार्थं रथाधिवासनम हं करिष्ये॥ अध रतेड रना
करत हे आचवन समय॥ सो तिनकी धार रतारूप श्री चंद्रा
वलीजी हें॥ अष्टोत्तरूप श्री चल सो मुखवस्त्र पोछत हें॥ पहमस
जांनि के मलार आसाढ़ सुदी है॥ अथ वर्षा रितु की भावना॥
षष्ठी पंडह राज सी भक्तन के मनोर्थ ते अर्थ गासिंगार वर्णा
वागसाड़ी अमदिलाल॥ कहूं पिछोरा पाग आज ते वर्षा रितु
को आगम हें॥ भक्तन के रथ यात्रा ते वर्षा रितु को आगम
श्री नंदरायजी प्रति व्रज मे षष्ठी पंडह ते वसंत रितु को आ
गमन॥ आज ते प्रसिद्धि रंगीन वस्त्र धरे॥ गोपी वह त्रम मे
सेव छांडि के वड़ा कष्ट सो मागनी करे पहांर वपांन जी श्री
स्वांमिनीजी को रंगीन वस्त्र दीये॥ ता दिन अपनी अपनी
निकुंज मे समस्त स्वांमिनीजी रात्र को प्रभुन के लीये रंगीन

सगरो साज सिद्धि कीयो॥ लाल रंग अनुराग सूचक है॥ सो आगे
वरनन अनुराग को करेगो॥ वीर वधू भूमि पर प्रगट भई घन मे
विद्युत्ति नव पांतिन व पहत्र व अनेक भरे घन तरुप मनु विद्यु
तरूप श्री स्वांमिनीजी पगपांति उज्जल सो श्री चंद्रावलीजी
रव धू लालिता दिक नव पहुत्र वल तारूप सव नकों विस्तार व
टनो॥ सो आगे वरनन करत हें॥ पाछे व्रज कोनि कुंज को गिर
राज को वरसात नहें॥ अव सेन भोग आरोगत समय दसो
दिसा ते वादर श्यांम महागंभीर उमड़े॥ सो अस्पष्ट गरजना व
हरहे न लागे॥ विद्युत्ता रेवा रेवा मच मात हें॥ महघ्नो प्रशब्द
करत हें॥ वड़ी वड़ी वूंद नवरसन लागे॥ सो धरती मे उष्म काल
कीतम हती॥ सो वाहिर प्रगटी॥ सो तापनो हीहें॥ कुंज मे स्वांमि
नी हे॥ सो तिनके मन मे महा चिंता भई॥ जो ऐसे मेघ मे प्रभु
कोन प्रकार पधारेंगे॥ सोय हम हा ताप हृदय मे भयो सो
विरह को ऊसा सलीयो॥ सोइ सो दिसा महा ताप रूप दखान
त प्रगट होन लग्यो॥ सो प्रभुन ने यह दुःख स्वांमिनीजी को जो
ति॥ ता समय श्री यसोदाजी सो कहे॥ जो अब मे आरोगि [illegible]
मो को नींद आवत हें॥ सो तब श्री यसोदाजी आचमन कराय
मुखवस्त्र वीड़ी वांधिन करि आरोगाय॥ ऊंचे चोवारे पर पध
राय अपनी सखी सो कही॥ जो आज वर्षा रितु आई काहे
ते छव हें॥ सो छे आषाढ़ मे राजा रितु आई॥ [illegible]
सावा दरघारे॥ यह ऐश्वर्य जल की वृष्टि सो वीयें यरादसो
दिसा पंछी डीगुर दादुर शब्द करत हें॥ तब श्री सोतन वपस्वव
न की सोभा सरोवर भरे हे॥ सांम्भो सगरे जल नदी सव अप
नो पति जांनि समुद्र को उमाड़ि के चली॥ सो जाय मिली॥ जोलता
वृक्ष तद पपतिको सवों गवेष्टि न कीयो॥ ४॥ वेरा सपर वन हें सो

जलकोऽपैसोकार नांहीकरतहे॥ तातेंस्थिर हैं॥ रतिकाकी वहोइकोन
हनलाग्यो॥ परवतवृंदकेदुःखसहतहे साधकीनांई॥ परंतुजल
कोसंगटहूनांहीकरतहें॥ यहतुषधरराराजारित्याई॥ सो रांमि
नीकोंकठिनशव्दसुनिकेमेरो पुत्र परमकोमलवालकडरपे
गोरी॥ ऐसेरात्रकोराखियो॥ यहमहाकठिनरितुहें॥ सोतवसषी
ननेकही॥ जोतुंमचिंताजिनराषो॥ जोहमारेप्रांणप्रीयहें॥ हमया
सावेदरिप्रहररात्रपेरखाकरेंगी॥ सोतवश्रीयसोदाजीनेश्री
ठाकुरजीकोऊपरसुंदरचित्रसारीमेपोढाये॥ औरआपुनं
दालयमेपधारितहांआपनेचोवारेमेपोढी॥ औरयहांश्रीव
षभांनजीकेयहां श्रीकीरतिजीनेश्रीस्वांमिनीजीकोसैनभो
ग सषीनसहितआरोगायो॥ सोताहीसमयमहावरसाहोन
लागी॥ औरअंधियारीअतिगंभीरभई॥ औरपवनअपसोत
तीव्रवहनलग्यो॥ तवअपंसंतचिंताकरिकेंश्रीस्वांमिनीजीअ
पनीसषीनसोसेनहीमेकही॥ जोआजमेकुंजमेकोनभांति
चलोगी॥ औरप्रभुनकोबुलावनकोनभांतिजाउंगी॥ औरप
भुकोनभांतिसोंपधारेंगे॥ जोयहवर्षाहीसमयआईजो
अवमेकोनभांतिकरोंगी॥ ॥अथकुंजकोभाव॥ सोतवइतनो
विचारनहीमहाविरहतेंपाचिंताहोतभई॥ सोतवश्रीकीरत
जीसोकही॥ जोमैयाजीमुषनांहीहें॥ जोमोकोनिद्राआवतहे
सोतवश्रीकीरतिजीआचमनकरायमुखवस्त्रकरायबीड़ी
आरोगायललितादिकसोंकहें॥ जोआजवरसावोहोनहेअं
धियारीघुमड़िरहीहें॥ तातेंआजललीकेपासपोढिर
हो॥ पाछेकीरतिजीश्रीस्वांमिनीजीकोसषीनसहितचित्रसा
रीमेपोढाये॥ वोहोनभांतिसषीनकोसोपिजोमेरीवेटीअपनेत
मेरीहें॥ सोधनकीगरजनतेंडरपेगी॥ तातेंतुमअपनेपास

हीराखियो॥ औरजोवोहोनहीडरपेतोमोकोंबुलायलीजो॥ सोयाप्र
कारसवसषीनकोसमुझायकेंअपनेभवनमेजातभई॥ तव
श्रीस्वांमिनीजीअपनीखिड़कीकोकिवाड़खोलिकेदेखेतोवड़ी
वड़ीबूंदनतेंवरसेहें॥ औरपवनकोसनाटोमहासव्दहोतहें॥ औ
रमेघकीमहागंभीरगरजनहोतहें॥ सोमारगमेघोटूनलो
जलवहेजातहें॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीनेकही॥ जोअवमेंके
सेकरोंगी॥ जोकोनप्रकारसोंयहमहाकठिनरात्रविहायगी
जोएकपलछिनकोटिकोटियुगसमांनवीततहें॥ तातेंऔरकछुउ
पायनांहीहे॥ जोमेऊपरतेंगिरोंगी॥ सोतवललितादिकआति
आतुरताभोंउठिकेंभुजापकरिकेंवोहोतभांतिसमुझायकेंक
ही॥ जोहेप्राणप्यारीतुम्हारेपाछेंहमसवनकोसुखमिलतहें॥ ता
तेंऐसीकवहूनकीजे॥ अवकोईघरीमेमेघनोरह्योजातहें॥ जो
मेप्रभुनकोलिवाइलाउंगी॥ सोतुमधीरजराषो॥ तवश्रीस्वांमिनी
जीनेकही॥ जोमेरोधीरजकोनप्रकारसोंरहें॥ जोमेंइसकोकोई
लग्यो॥ औरप्रहरएकरात्रगईहे॥ सोआजरात्रमेंयहउघरेगो
नांही॥ औरदादुरझींगुरमेरेकांनफोरतहें॥ जोवारंवारमोर
कूकिकेमेरोहृदयाविदारनकरतहें॥ सोमेंकहाकरों॥ जोतुमि
नीहमकतहें॥ औरमेरोसर्वअंगकांपतहें॥ औरवारंवारपपैया
कीगरजनतेंमेरेहृदयमेंकठिनवांनलागतहें॥ यहसर्वप्रभुके
मिलेतेंसुखहोतहें॥ जोअवतोमोकोंमहादुःखदाईहें॥ सोमे
रोहृदयविदारनहोतहे॥ तातेंआजकीरात्रकोकछुउपायनेंस
मुझ्यो॥ परंतुमोकोंवीतेसोउपायनाहीहे॥ जोप्रभुविनास
वेंदुःखहोइउचितनहीहें॥ सोयामेमेरोकहादोषहें॥ अवमो
कोउचितनाहीहे॥ सोइतनोकहेतकहेतविरहदुखसर्वअंगमे
फेलिभीतरतेंविकलताहोई॥ सोसर्वअंगसिथलहोईप्रस्वेद

अंगमें होइ आयो॥ बारंबार के पाय मांन हो नभई॥ जो हस्त केन थांचे र
राके आभूषरा औ रीगजरा ढीले होयगये॥ और अध रविंब केस्व
सते सूक नलागे॥ कलनेर पांस होनभए॥ और मोतीन के हार का
रे परिगये॥ सोनासमय सर्व सुधि भूलि गई॥ और कहे॥ जो ह को
यासमय तुम कहां रहे॥ हा नाथ तुम अब वजके राजक हाय औ
सो कर नहो॥ हे विनोद वके आलंब॥ अबया समय नो रस कउम
ही हे॥ हा कृस्न हम तुम्हारी हें॥ आप नी सररा की ओर देषो॥ सो या
प्रकार अनेक वचन श्री स्वांमिनीजी बोलत हें॥ दीनानाथ कृपानां
यब्रजनाथ॥ सो असे कहिके बारंबार भूमिमे परत हें॥ और पेसा
सर हृदय ते जपत हें॥ न वयहादि सारे वि ललिता ने चक्र न हो
र केक ही॥ जो असो परम दुस ह इनको भयो है॥ सो प्रभु वेगि क्यों नां
ही पधारत हें॥ जो महा कठोर ही सत हे॥ जो इन की प्रीति समांन
का हू को नांही हें॥ प्राये ललिता दिक देषि के बोली॥ जो हे मेरी स्वां
मिनी तुम असे सी क्यों भई॥ जो हमको तो तिहारे मुष नेसुष हें॥ और
तुम्हारे दुःख ते दुःखी हें॥ परंतु तुम मेरी एक बीनती सुनों जो
अब तुम होय धरी धीरज धरो तो प्रभु पधारेंगे॥ काहे ते जो तुम
उनको आराधी पाहे॥ जो आज उनकी प्रीति प्रगट होइगी जो
आपनें तो पर वस परी हें॥ सो तब आप तो नोक कहउ पाय चल
तनां ही हें॥ ता ते निसाध नहें॥ ताते तुम स्थिर कीजो॥ और म
न लगाइ कें सन्मुख नें हाल यकी ओर हेरवो॥ जो विद्युत की उ
जियारी मे अब कोई छिन मे कारी कुमारि की खोई ही सो प्यारी ह
स्नमें लकुटल्ली सें दरसन होइगो॥ ताते तुम कोधीरज छाड़नो
उचित नांही हें॥ जो तुम समस्त स्वांमिनीजी को सिरोमनि हो य
ता ते दुःख को सहन करि उठो॥ अब कोई सरन में प्रभु को दरस
न करो॥ सो इतनो सुनत ही श्रीस्वांमिनीजी उठि बारी मे बैठि देख

न लागी॥ और यहां श्रीय सो दासीनें श्री ठाकुरजी ने सब देवो ही ॥ श्रीर
ई॥ तब कुमारिका के भावरूप नहां राधि आ पुकारी कामरि ओदि के
नूपुर जे हरि आदि किंकिनी सरवउ पर व टाई स्ख धे करि श्री ह स्त
में सुंदर लकुट ले के कुंजन न लगाय ने दालय की खिरकी द्वारा उ
तरिकें बरसाने को पधारे॥ सो मारग मे घोटन लो की चढ़ उ तरनों
न हें॥ सो मारग मे पानको रा दरूनि चक्र ने होत च हू दिस देषत
चले जांत हें॥ जो मन्नि कहूं नें दालयको त थां वृषभान पुराको मा
पमिलेगो तो उनसो अब या समय को न उत्तर करेंगे॥ या प्रकार
विचार करत दिसा को भ्रम अंधकार मे होत भयो॥ जो वृषभान
पुरा को मारग को न हें॥ अब मे कोन से मारग जाउं सो ता समय
श्रीस्वांमिनीजी को विरह करिके॥ राधे राधे श्री राधे या प्रकार
जप करन क हू न लागे॥ जो या समय या मारग के दुःख ते तुम
ही मो को छुड़ावोगी॥ जो तुम बिना यह दुःख न ही जाइगो॥ सो असे
विचार करत नेत्र न ने जल की धारा बही॥ सो लकुंजन हू वाहि गयो॥ क
बहू ऊंचे देखत हे॥ क बहू नीचे देखत हें॥ जो जैसे कोई मद पीवे सो दे
हानुसंधान भूले तैसे ई मारग भूले॥ जो अपनो स्वधर्म आदि
बाट धर्म सब भूलि गये॥ सो ता ही समय ता उनको उज्यारो भयो सो
प्यारी को महल रत्न न खचित न॥ तांमे विद्युत रूप श्री अंग चंद्र पर
मुसो भायमांन प्यारी को देखत भये॥ ता ही समय छिन मे सक
ल दुःख हरि होइ मन में परम आनंद भयो॥ जो जैसे चात्रग को
स्वांति जल मिले॥ और कमल को सूर्य याते कोटि गुनो आनंद
भयो॥ सो ता समय आनंद उतावल सो पग धरत पधारे॥ सो
ता समय की सोभा कही नही जात हें॥ और मन मे यह जांने जो
रसा ने मे जाय क वप्यारी को मिलेंगे॥ सो ता समय को पद राग
मलार॥ लाल माई सो हत हें रंग भीने॥ सी स मो हकां मरि की खोई

लालनकुटकरलीने ॥ १ ॥ खंजरनकीचपोट नलोमोहनचकनचरहि
सहेरे कवहीदिसाभ्रमहोनविकलमनश्रीराधेराधेमुखटेरे ॥ २
लिहिछिउनकिनउन्यारोदेष्योप्यारीमहलडुरोरवे ॥ रसिकप्रीतमप
गधरतउनावलआंरोष्रीप्यारसपोरवे ॥ २ ॥ सोयाभांतिपधारनल
लितानेउहांदेखे ॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीकोअपनीपुत्रीकीअग
नेदिखाये ॥ जोवेलकुटलीयेकांमरिओढेआवतहें ॥ सोतवश्रीस्वा
मिनीजीनेदेषिकेंबोहोतप्रसंनहोइकहें ॥ जोहेललितापभुकी
प्रीतितोमहाउत्कष्टहें ॥ जोदेखोइननेदुःखसहनकरिकेआवत
हे ॥ सोतिनसोमेकबहुमांनकरतहो ॥ सोयाप्रकारअपनेकनर
हकेवचनश्रीमुखतेकहिवोहोतसनेहकरिवारीमेतेकूदनलागी
जोअबहीजाइकेप्रभुनकोमिलों ॥ सोतबललिताने कही जोअ
बतुंमधीरजधरिकेकछुउपायकरो ॥ जोजाप्रकारमिलापहो
य ॥ जोयहांसबठोरद्वाररलगेहें ॥ तातेउपायविचारो ॥ सोतब
सषीननेतोतिवारीमेसोखरिकमेबसीहुनी ॥ सोतहांएकबडो
जेवरावांधिकेलटकायदीयो ॥ औरश्रीस्वांमिनीजीश्रीदामा
अपनोभाईश्वेतरंगसषाहे ॥ सोतिनकोजगाइकेकही ॥ जोआ
जएकबडोकार्यपर्‌योहे ॥ सोभाईतेरोकीयोहोइगो ॥ जोप्रभु
पधारेहें ॥ सोललिताने खरिककीवारीमेजेवरालटकायोहेसो
प्रभुकेसेआंवेगे ॥ सोतातेतुजाइकेप्रभुनकोखरिकमेकरिआ
उ ॥ सोतबश्रीदामातत्कालउठिकेंपोरीकेकिवारखोलनलागे
सोतबपोरियानेकही ॥ जोतुकोनहें औरकहांजातहों ॥ सोतब
श्रीदामानेकही ॥ जोएकगायगर्भवतीभीजतहें ॥ सोवोहोतदु
खितहे ॥ सोताकोमेभीतरजायखरिकमेकरिआउं ॥ सोतब
श्रीदामासोनाहीकेसेकरें ॥ सोकिवाडखोलिदीएतबश्रीदा
मातत्कालप्रभुनपासजायप्रभुनकोहृदयसोलगाइलीयोतब

प्रभुतोमननमेडरपेंजोयहकोनहे ॥ जोमेकोदेखेगोतोबोहोतही
दुःखहोइगो ॥ जोसबारेनंदरायजीसोकहेगोनथोअबहीदबभो
नजीकेपासलेजाइगो ॥ जाछेमधुरेमधुरेबोले ॥ जोतुकोनहें ॥ तनय
हबोल्यो जोमेश्रीदामाहो ॥ सोतबतोप्रभुप्रसंनहोईभेंटिकेकहेजो
हेप्रीयमित्रअबवेगकछुउपायकरि ॥ सोमोकोराधाकोदर्शनहोइ
सोतबश्रीदामानेकही ॥ जोरहसिकमेचलो ॥ सोतबखरिकके द्वारप
रगयेतबश्रीदामाबाहिरतेवोलिग्वालकोजगाइकेकहे ॥ जोवेरा
रागाइदुःखीहें ॥ सोभीतरलीनीहें ॥ सोतनग्वालनेकिवारखोलि
दीये ॥ सोतबश्रीदामानेकही ॥ जोबहुरखरिकमेंजायसोईजो
मेयहांसोउंगो ॥ सोतबबहग्वालद्वसरेखरिकमेगयो ॥ औरश्री
दामाप्रभुनकोभीतरलेजाइखरिकमेजेवराबताइकेकह्यो
जोतुंमश्रीस्वांमिनीजीकोलेकेयाहीमारगआईयो ॥ जोमेखरि
कके द्वारपरबेठ्योहो ॥ सोऐसेकहिकेश्रीदामातोजायबेठ्यो
औरश्रीठाकुरजीजेबरापकरिकेवारीहपरएकऊंचीठौरसो
तहांपधारें ॥ औरयहांश्रीदामानेविचारकीयो ॥ जोविचारकीय
प्रभुतोचलिगये ॥ परंतुश्रीस्वांमिनीजीऔररसपीवोनप्रकार
उतरेगी ॥ सोतबबडीचोकीधरि ॥ सोतापरचोकीचोकीधरिन
थांभोकियाताईऊपरबारीतांईलगाइकेंखरिककोद्वार
लगाइआपद्वारपरसोयरह्यो ॥ औरयहांश्रीठाकुरजीखि
रकीमेचढिअपुराम्यासीभांतिगाढेकरिअपनोपीतांबर
साकमेरिकामरिभलीभांतिसोलपेटिलई ॥ जोअंधेरेमेकोई
देखेनाही ॥ याप्रकारमंदमंदपगधरतअत्यंतसावधानीसोच
ले ॥ औरनेनीनेनीबूंदबरसतहें ऐसेसमयश्रीवृषभानजी
केघरपधारे ॥ सोतबऊपरचित्रसारीमेजायखिडकरन
लागे ॥ सोतबआंगनमेपगसरक्यो ॥ सोआपुनोहोउश्रीहस्तटे

भाव. १४८

किके बेठि गये ॥ श्रोर श्रीप्रभु पराजो ऊंचे चबूतरा पके गादेपक रेहूते सो सब छूटि परे ॥ सो उन के साढ़ श्रान्य नऊ चे सुर सोभये ॥ जो मानो कामदेव की ढुंढुभी बजी है ॥ सो सब रष भांनपुरा मे गोपिका मन खोई ॥ जो प्राज मे हूं मे प्रभु को न भांति सो पधारेगे ॥ सो तिनको हाहुः खोहै ॥ जो आज मे हूं मे प्रभुन को नभाति सो पधारेगे ॥ सो प्रपने प्रपने घरन जनाऐ तिन सबन ने जांन्यो ॥ जो प्रभु पधारे ॥ सो प्रपने प्रपने घरन सो प्रभु पधारिबे को विचार करन हू नी सिंगार करि के ॥ पाछे फिर को के मारग उतरि के श्री दामां तो मिलनी या लीला साधक हे सो खिडकी मे सब श्राई ॥ कोई दिन श्रोर हू ग्वाल रवडिक मे रहे तो ति नको चिंता नांही ॥ ग्वाल सगरे लीला सहाय क हे ॥ रजभक्त श्रोन पानादिक सो प्र से न राषत हैं ॥ सो या प्रकार सब रोस माज रव रिक मे एक ठोरो भयो ॥ सो ते हां श्रीप्रभु पन को खड़ क्रे मुनि के रे षभांन जी की रनि जी श्रादि सगरे गोप गोपी जा भी के दर्श ॥ श्रो श्रीप्रभु परा को षडू को भारी भयो ॥ सो उं चोर श्राय पे सो जो जियो सो तब मसाल वारि गइ हूता घर देखे तो सब बन्या को श्रो ॥ पाछे मसाल ले के सब ठोर देखन चले ॥ तब श्री जी विचारे ॥ जो श्र ब कछू न भई ॥ मसाल श्रावेगी तब चोरी प्रगट होइगी ॥ ता ने भाजि देखे तो सगरे कि वांड़ लगे हें ॥ सो तब प्रसाद भंडार को कि माड़ लगाय बेकी रीति नांही ॥ जो कोई को चहीये ॥ ताते प्रसा दी भंडार मे जा पाछिये ॥ श्रोर यहां श्री कीरति जी श्री स्वांमिनी जी पास दोरी श्राई जो बेटी तुम श्राछे हो ॥ सो तब ललिताने कही जो तुम रतन को रंच कहू चिंता मति करो ॥ सो तब श्री कीरति जी ने कही ॥ जो हे ललि ता विसाषा मानि हारे भरोसे बेटी को राषत हे यहां श्रीप्रभु परा को दोड़ को भयो हे ॥ सो मेनी चेदेषन को जा त हो ॥ सो तब ललिता विसाषा ने कही ॥ जो तुम सुषेन जाऊ ॥ त ब कीरति जी बीचे श्राई ॥ सो तहां मुखरा श्री स्वांमिनी जी की नां

नो मुखरा जागत हती ॥ सो ताने कही ॥ जो चोर तो निश्चय पश्राये हें श्राछी भांति सावधानी सो देषि देखो ॥ सो तब श्री स्वांमिनी जी श्रोर ललिता ने कही ॥ जो चलो श्रापुन हू देषिये जो कहूं पकरे जा इगे तो श्राछो नाही ॥ सो यह विचारि के तीन्ये श्राई सब ठोर देखे सो पखे नांही ॥ श्रोर मुखरा बड़ी खबरदार चतुर हती ॥ सो चाने श्री कीरति जी श्रपने घर मे राषत हती ॥ सो के बल मपी सा हूप हें ॥ पुषि कोले स श्रंस हू नांहीं हें ॥ सो तब मुखरा बोली जो तुम सब हे का नेत्रो देखो ॥ श्रोर चोर रहे ॥ सो तहां नांही दे रखे ॥ सो तब कीरति जी खभांन जी ने कही ॥ जो बता यो तो देखे ॥ सो तब मुखरा ने कही ॥ जो श्राज मसाल ले धावधान है प्रसादी भंडार मे देखो ॥ तब जो नहीं चलो ॥ सो यह बात भीतर श्री ठाकुर जी सुनि सब के हे ॥ जो श्रब केसी होइगी ॥ सो तब भंडार मे के श्रपने मन मे कहे ॥ जो श्रब के सी होइगी ॥ सो तब भंडार मे लोक राटोक री श्रीने कहे इन को पारखो है ॥ सो श्री ठाकुर जी ए का कि बड़े को नेमें एक बड़ी डालि के तो चो छिपि रहे हें ॥ सो तहां श्री स्वांमिनी जी श्रोर ललिता दिक कहे हें ॥ जो यह डोकरी बड़ी प्र तिबंध रूप हें ॥ परंतु श्राज ढूंढो परे तो श्राछो ॥ सो तब सगरे मसाल वारि मीन स्यारो ॥ सो तब श्री स्वांमिनी जी हूस पीनस हित गई ॥ तब ललिता परम चतुर रहे ॥ सो हृदय के विचारि के श्री स्वांमिनी जी सो कही ॥ जो यह को नेम डालि हे ॥ सो याके नो चे हें ॥ सो तब श्री स्वांमिनी जी श्रपनो लहगा चहुं दिस फेला य के बाड़ा लपर बेठी ॥ सो ढूंढन को श्रावे ॥ श्राय जाय सगरे भंडार ढूंढे ॥ सो तब श्री रषभांन जी सगरे गोप गोपी कहत लागे ॥ जो यह डोकरी तो ढूंढी हे ॥ रातमे सबन को योही भ्रमा वति हें ॥ या को तिन्य मर मर हे तहे ॥ तिन्य ढूंढ बोलन हे या के कहे को भलो विस्वास कर न हे ॥ या प्रकार वाको ढूंढो करि बाहे